हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

फरवरी, 2004 वर्ष 2 अंक 12

कहाँ गये ?

कहाँ गये वह सुन्दर रूप वाले जिन को अपनी जवानी पर गर्व था ? कहाँ गये वह बादशाह जिन्होंने शहर बसाए थे ? कहाँ गये वह योद्धा जो युद्ध स्थल में सदैव विजयी रहते थे? काल ने उनका विनाश कर दिया और वह कब्र की अन्धेरियों में पड़े हुए हैं।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि०)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

–: सम्पादक :–
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

– सहायक –
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी,
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

विषय एक नज़र में

समस्या छोटे बच्चों के शिक्षा की	सम्पादकीय	3
कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०)	5
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी	6
इस्लाम एक परिचय	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी	7
मुनाजात	मौ० मु० सानी ह़सनी	9
अमानतदारी का अनोखा उदाहरण	डॉ० मु० इज्तिबा नदवी	10
ऐ मेरे अल्लाह	ख़ैरुन्निसां बेहतर	12
ह़ज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम	सै० सुलेमान नदवी	13
लौंग से लाभ		17
बच्चियों की तालीम व तर्बियत	ख़ैरुन्निसां बेहतर	18
दुआ़	अबू मर्गूब	20
महिलाओं के विरुद्ध जिन्सी जराइम		21
कुर्बानी का बयान	इदारा	24
आपकी समस्याएं और उनका हल	मुह़म्मद सरवर फ़ारूकी नदवी	26
आकाश का रहस्य	हबीबुल्लाह आज़मी	28
मुनाजात	अमतुल्लाह तस्लीम	30
लड़ाइयों के लिए इस्लामी कानून	स० सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	31
शयातीन और सिहर	अबू मर्गूब	33
बच्चों के लिए खतरनाक रोग ख़सरा	डा० मुज़फ़्फ़र अब्बास	34
टमाटर	इदारा	36
कुछ एक इस्लामी आदाब	शैख़ अब्दुल फ़त्ताह अबू गुद्दा	37
अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	मुईद अशरफ नदवी	40

□□□

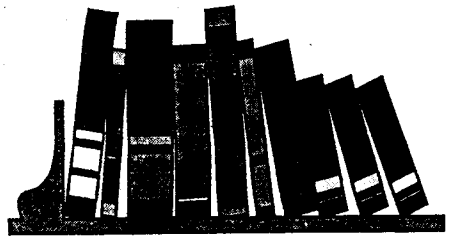

समस्या छोटे बच्चों की शिक्षा की

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

आप शहर के रहने वाले हों या दीहात के अपने इर्द गिर्द नज़र दौड़ाइये तो आप को कोई न कोई इंगलिश मीडियम स्कूल अवश्य नज़र आयेगा। किसी का नाम नरसरी स्कूल होगा तो कोई मान्टेसरी स्कूल कहलाता होगा तो कोई के०जी०। नरसरी तो कहते ही हैं उस घर को जिस में दाया बच्चों की देख भाल करे, पालन पोषण करे। अतः नरसरी स्कूल का अर्थ हुआ वह स्कूल जहां छोटे बच्चों की, २,३,४ वर्ष के बालकों की तरबियत की जाए। वह अपने मादरे वतन की सक़ाफ़त के मुताबिक़ अपनी मातृ भूमि की संस्कृति के अनुसार उठना बैठना सीखें, अपने साथियों तथा अपने बड़ों से मिलना जुलना सीखें, दूसरों का आदर सम्मान करना सीखें, कपड़ों का रख रखाव सीखें, खाने पीने के आदाब अर्थात सभ्य नियम सीखें, मुहज़्ज़ब तौर तरीके सीखें, बोलना सीखें ज़रूरत की चीज़ मांगना सीखें, खेलना सीखें और मिल जुल कर खेलना सीखें साथ ही कुछ अक्षरों, शब्दों तथा गिन्तियों की जानकारी प्राप्त करें।

समझ में नहीं आता कि नरसरी स्कूलों को इंग्लिश मीडियम क्यों रखा गया? छोटा बच्चा जो मां की बोली से परिचित है स्कूल में उस को मां की भाषा से क्यों वंचित किया जाता है, मादरी ज़बान से क्यों दूर किया जाता है? नरसरी स्कूल नाम रखने में कोई विशेष दोष न था परन्तु बच्चे को मातृ भाषा में उन्नति करने का अवसर न देना बड़े दोष की बात है।

यही बात मैं **Kinder Garten (K.G.)** तथा मान्टेसरी स्कूलों के विषय में कहूंगा आप ध्यान दें किन्डर गार्टेन अर्थात बच्चों का बाग (बाल बाटिका) पौधे बड़े हुए अब वह बाग की शोभा बनेंगे। अब इन को नरसरी की शिक्षा दीक्षा से आगे बढ़ाया जाएगा। किन्डर गार्टेन के सिद्धान्त जर्मन के एक माहिरे तालीम (शिक्षा विशेषज्ञ) फ्रोबेल ने प्रस्तुत किये थे जिस में ३ से ६ वर्ष के बच्चों को परवान चढ़ाने क़े नियम हैं। उसने शिक्षा का उद्देश्य खरा, शुद्ध, निर्दोष तथा पवित्र जीवन बिताने के योग्य बनाना बताया है। वह खेल खेल में बच्चों की तरबियत करना चाहता है। रहन सहन का अच्छा ढंग सिखा देने के साथ कुछ लिखना पढ़ना, गिनना, जोड़ना आकार बनाना और उन में रंग भरना सिखा देना चाहता है। उसके नियमों में कहीं नहीं है कि बच्चा मातृ भाषा छोड़ कर, मादरी जबान को नजर अन्दाज करके विदेशी भाषा सीखे, विदेशी भाषा सीखने में कोई दोष नहीं अपितु अच्छी बात है परन्तु पहले मातृ भाषा सीखना आवश्यक समझना चाहिए।

मान्टेसरी शिक्षा विधि इटली की एक महिला मैरिया मान्टेसोरी ने चलाई थी। उस ने भी ३ से ७ वर्ष के बच्चों के लिए यह तरीका निकाला था। अब मान्टेसरी स्कूल इन्टर मीडिएट तक फैले हुए हैं। मान्टेसोरी ने भी फ्रोबेल की भांति बच्चों पर बोझ न लाद कर खेल खेल में पढ़ाने का नियम बनाया था।

बड़े खेद की बात है कि आज यह इंगलिश मीडियम स्कूल हमारे बालकों पर अनुचित बोझ डाल रहे हैं। पहली बात तो उनको मातृ भाषा के साहित्य से दूर कर देते हैं। दूसरी बात वह देश की संस्कृति से भी वंचित हो रहे हैं।

मादरे वतन की सक़ाफ़त से भी दूर हो रहे हैं। विशेषकर इस्लामी सक़ाफ़त से वंचित हो

रहे हैं। इस्लाम की तो नीव ही शिक्षा पर है। इस्लाम का कुर्आन "पढ़" के आदेश से आरंभ हुआ और पहले ही पाठ में क़लम द्वारा शिक्षा प्राप्ति का परिचय दिया गया। हर मुसलमान के लिए आवश्यक है कि वह अपने बच्चों को पढ़ाए, अपनी मातृ भाषा सिखाए अपना धर्म सिखाए, कुर्आन पढ़ना सिखाए सलाम करना सिखाए, अलहम्दुलिल्लाह, इन्शाअल्ला, माशा अल्लाह कहना सिखाए, पाक (पवित्र) रहना सिखाए, वुज़ू करना सिखाए, नमाज़ पढ़ना सिखाए, वह स्वयं नहीं सिखा सकता तो किसी दीनी मकतब में पहुंचाए ताकि वहां बच्चा यह सारी आवश्यक बातें सीखे, अपनी मादरी ज़बान में, मातृ भाषा में लिखना पढ़ना सीखे। इंगलिश मीडियम स्कूलों में बच्चा इन सब बातों से वंचित हो जाता है।

मुसलमानों द्वारा चलाए गए कुछ इंगलिश मीडियम स्कूलों में अब कुछ दीनियात तथा कुर्आन पढ़ाने का प्रबन्ध किया गया है परन्तु वहां मातृ भाषा और राष्ट्र भाषा दोनों नहीं हैं जिससे आगे चलकर बच्चे के लिए बड़ी कठिनाइयां आती हैं। हमारे दीनी मकातिब में शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध न होने तथा सरकारी प्राइमरी स्कूलों में अध्यापकों की असावधानी के कारण लोग इंगलिश मीडियम स्कूलों की ओर टूट पड़े हैं परन्तु परिणाम कुछ सफल नज़र नहीं आता, आप कुछ बच्चों को जांच कर देखिए जो नरसरी और के०जी० से गुज़रते हुए तीसरे चौथे क्लास में आचुके हो ८० प्रतिशत बच्चे न तो इंगलिश में बात कर सकेंगे ना एक अपलीकेशन या लेटर लिख सकेंगे। जबकि उनकी शिक्षा पर बड़ा पैसा और समय लग चुका है। किन्डर गार्टेन और मान्टेसरी शिक्षा प्रणाली में तो यह बताया गया था कि बच्चों पर मान्सिक बोझ न पड़े बच्चा खेल खेल में पढ़े परन्तु इन स्कूलों में बच्चे पर होम वर्क का इतना बोझ डाल दिया जाता है कि बच्चा सोते में भी पढ़ता है। घर के सहयोग के बिना होम वर्क पूरा नहीं कर सकता । इसके लिए टयूटर भी रखना पड़ता है। किताबों कापियों का बोझ जिन में खाली जगहों के भरने के सिवा कोई ज्ञान नहीं होता बच्चा बे समझे इंगलिश वाक्य रट रहा है। पोएम याद कर रहा है। एक साहिब ने सुनाया कि उनकी बच्ची रट रही थी *"ए बिग प्लांट काल्ड ए ट्री"* उन्होंने पूछा कुछ समझती हो कि क्या कहती हो ? उस ने कहा मेम साहिब ने इसे याद करने को कहा है याद करते हैं। ध्यान देने की बात है क्या अपनी मातृ भाषा में पेड़ की परिभाषा इस प्रकार याद करना पड़ती? और क्या पेड़ को पहचान लेने के पश्चात पेड़ से ट्री समझाने में सरलता न होती ?

आप ध्यान दें कि आप का बच्चा इंगलिश स्कूल में कितनी मंहगी शिक्षा प्राप्त करता है। कितना बोझ पीठ पर लाद कर ले जाता है फिर स्कूल से आकर कितने समय और कितनी मेहनत से होम वर्क पूरा करता है।

पांच वर्ष के बच्चे को चिन्तित न बनाना चाहिए उसकी शिक्षा चार घंटे से अधिक न होना चाहिए उससे शैक्षिक होम वर्क न लेना चाहिए। उसे मार डांट कर नहीं खेल खेल में पढ़ाना चाहिए। उसको ८ से ९ घंटों तक सोना चाहिए, उसके स्वास्थ के लिए उसको व्यायाम वाले खेल खिलाना चाहिए परन्तु आज एक छोटे बच्चे पर शिक्षा का कितना भार डाल दिया गया है और समाज ने उस को ऐसा स्वीकारा है कि अब इससे निकलना असम्भव ही लग रहा है। काश के हमारे सरकारी स्कूलों के अध्यापक गण इस ओर ध्यान देते, क्या अच्छा होता कि हमारे दीनी मकातिब अपना नज़्म दुरुस्त करते, क्या अच्छा होता कि कोई इन्डियन फ्रोबल उठता, कोई इन्डियन मान्टेसोरी आगे आती और इस दौर के अनुसार हमारे बच्चों के लिए आदर्श शिक्षा प्रणाली प्रस्तुत कर के हमारे बच्चों का बोझ हल्का करती और उनको उन्नति के मार्ग पर चलाती यह कार्य असम्भव नहीं सम्भव है। क्या अच्छा हो कि हमारे दीनी मकातिब के प्रबन्धक तथा अध्यापक ही इस ओर ध्यान दें।

●●●

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

सोग मनाने का नियम :

अल्लाह ने क़ुर्आन में फ़रमाया –

अनुवाद : और जब उनको कोई मुसीबत पेश आए तो कहते हैं कि हम अल्लाह के लिए हैं और उसी की ओर लौट जाएंगे। (अलबक़रः आयत : १५६)

आदमी पर कोई मुसीबत आए, किसी का इन्तिकाल (देहान्त) हो जाए तो सब्र (धीरज) से काम लेना चाहिए। खुदा से दुआ करना चाहिए। दुख से आंसू निकल आएं तो कोई दोष नहीं, परन्तु चिल्ला चिल्ला कर रोना, कपड़े फाड़ना और इसी प्रकार की दूसरी बातें करना हराम है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स विलाप में कपड़े फाड़ता है और गालों पर तमांचे मारता है और जाहिलियत की तरह चीखता और चिल्लाता है वह मेरी उम्मत में से नहीं।

हज़रते जाफ़र (रज़ि०) से रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बड़ी महब्बत थी उनकी शहादत की ख़बर आई तो उनकी औरतों ने नौहा (बिलाप) करना शुरू कर दिया आप ने मना करा भेजा। वह न रूकीं तो दोबारा रोका, फिर न मानीं तो आप (स०) ने फ़रमाया कि उनके मुंह में मिट्टी भर दो।

किसी भाई की मौत की खबर पर "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" पढ़ना सुन्नत है। जब किसी मुसलमान के घर में कोई मौत हो जाए तो उचित है कि सम्बन्धी, मित्र, या महल्ले के लोग उस के यहां खाना भेजें। हज़रते जाफर (रज़ि०) की शहादत के अवसर पर रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके घर खाना भिजवाया था और फ़रमाया था कि उन लोगों को आज खाना पकाने का मौका न मिलेगा।

सच्चाई : और सच्चों के साथ रहो। (तौबा : ११९)

सच्चाई से दिल को चैन मिलता है। चाहिए कि दुख सुख हर हालत में सच बात कही जाए और सच्चा काम करना चाहिए। किसी ने पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पूछा कि जन्नत वालों की निशानी क्या है? आप ने कहा सच बोलना। सच्चाई नेकी का रास्ता दिखाती है और नेकी जन्नत की तरफ़ ले जाती है। जो आदमी सच बोलता है वह अल्लाह के यहां सिद्दीक़ लिखा जाता है ज़ालिम (अत्याचारी) बादशाह के सामने सच बात कहना सब से अच्छा जिहाद है। सच बोलने में अ़ज़ीज़ व क़रीब दोस्त, दुशमन किसी का ख़याल न करना चाहिए। हज़रत क़ुदामः बिन मतऊ़न ने एक समय शराब पी ली हज़रत उमर ने शरअ़ी सज़ा देना चाही तो हज़रत क़ुदामा की बीवी ने इस सच घटना की गवाही दी। बीवी ने सच्चाई के मुकाबले (समक्ष) शौहर की कुछ परवाह न की।

दुन्या और अल्लाह की खफ़्गी मोल लेना बुद्धिमानों का कार्य नहीं।

खुदा पर भरोसा :

और खुदा पर भरोसा करो (निसा : ८१)

जिस काम को किया जाए पूरी हिम्मत और इरादे से किया जाए और इस का यक़ीन रखा जाए कि अगर इस काम में भलाई है तो जरूर कामयाबी होगी इसी का नाम तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा करना) है।

ज़मीन और आसमान में जो भी है वह अल्लाह का मुहताज है जो खुद मुहताज है वह सच्चे भरोसे के क़ाबिल नहीं। इसी लिए जो लोग अल्लाह को दिल से मानते हैं वह हर काम में उसी पर भरोसा करते हैं। उस के सिवा किसी दूसरे पर उन का दिल नहीं जमता।

बेकार हाथ पर हाथ रख कर बैठ जाने का नाम तवक्कुल नहीं है। एक मरतबा एक सहाबी ऊंट पर सवार होकर रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास आए और कहा कि मैं ऊंट को छोड़ कर तवक्कुल करूं (कि बाद में मेरा ऊंट मिल जाए) या उस को बान्ध दूं? हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया उसको बांध कर खुदा पर तवक्कुल करो।

इससे मालूम हुआ कि आदमी को अपनी मेहनत और कोशिश को अल्लाह को सौंप देना चाहिए वह जो उचित समझेगा वह करेगा। इसमें एक भेद यह है कि अगर हमारी कोशिश का फल अच्छा मिला तो घमंड तथा अहंकार न पैदा होगा और अगर हम नाकाम (असफल) रहे तो निराशा न होगी।

●●●

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

खैर के काम में भी शौहर की इजाज़त –

२१५. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया, शौहर घर में मौजूद हो सफर आदि में न हो, तो उसकी इजाज़त के बिना किसी औरत को रोज़ः रखना जाइज़ नहीं ऐसे ही शौहर की इजाज़त के बिना घर में किसी को आने की इजाज़त देना दुरुस्त नहीं।

(बुखारी, मुस्लिम)

बीवी के लिए शौहर की इताअ़त–

२१६. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया अगर शौहर बीवी को अपने बिस्तर पर बुलाए और वह न आए और शौहर नाराज़गी में रात गुज़ार दे तो फ़रिश्ते सुबह तक उस पर लानत करते रहते हैं। (मुस्लिम, बुखारी)

शौहर की नाशुक्री, बीवी के लिए अज़ाब का ज़रिया –

२१७. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया मुझे जहन्नम दिखाई गई, मैंने देखा कि इसमें औरत ज़ियादा हैं, जो कुफ्र करती हैं, आप सल्ल० से सवाल किया गया कि क्या वह अल्लाह का इन्कार करती हैं आप सल्ल० ने फ़रमाया, वह शौहर की नाशुक्री करती हैं, अगर तुम उन में से किसी के साथ उमर भर एहसान करो, फिर वह तुम्हारी तरफ़ से एक बार भी कोई नागवार बात देखे तो कहेगी कि तुम ने मेरे साथ कोई भलाई की ही नहीं। (बुखारी)

शौहर की खुशी में बीवी की निजात –

२१८. हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जो औरत इस हाल में मरी कि उसका शौहर उससे खुश है, वह जन्नत में दाखिल हो गई। (तिर्मिज़ी)

शौहर का दर्जा –

२१९. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फरमाया अगर किसी के लिए किसी शख्स को सज्दः करना जायज़ करार देता तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सज्दः करे। (तिर्मिज़ी)

सबसे अच्छी औरत –

२२०. हज़रत अबुहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० से सवाल किया गया कौन सी औरत सबसे अच्छी हैं ? आप सल्ल० ने फ़रमाया सबसे बेहतर वह औरत है कि शौहर उसको देखे तो खुश हो, कोई हुक्म दे तो उस को बजा लाए, और उसकी गैर मौजूदगी में अपनी जात या शौहर के माल में कोई ख्यानत न करे, जिस को शौहर नापसंद करता हो।

(नसई)

औरत फ़ित्ना हो सकती है –

२२१. हज़रत उसामा बिन जैद (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मैंने अपने बाद औरतों से ज्यादा नुकसान दे कोई फ़ित्ना नहीं छोड़ा मर्दों के ऊपर। (बुखारी, मुस्लिम)

रसूलुल्लाहि (सल्ल०) की तबाही–

२२२. हज़रत हुसैन बिन मुहसिन से रिवायत है कि उनकी एक फूफी रसूलुल्लाह (सल्ल०) की खिदमत में हाज़िर हुई आप सल्ल० ने उनसे पूछा क्या यह तुम्हारे शौहर हैं ? उन्होंने अर्ज़ किया जी हां । आप सल्ल० ने फ़रमाया तुम्हारा उन के साथ क्या मामला रहता है उन्होंने जबाब दिया, मैं उनकी कोई परवाह नहीं करती हूं। सिवाय ऐसे कामों के जिस को मैं खुद न कर सकूं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया यह उसके साथ तुम क्या करती हो, वही तुम्हारी जन्नत व दोज़ख है। (नसई)

औरत को शुक्रगुज़ार होना चाहिए –

२२३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया अल्लाह तआला उस औरत की तरफ़ न देखेगा जो अपने शौहर की शुक्र गुज़ार न हो, जब कि वह उससे बेनियाज़ नहीं हो सकती। (नसई)

औरतों के बारे में हुज़ूर (सल्ल०) की वसीयत –

२२४. हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें औरतों के साथ हुस्ने सुलूक की वसीयत करता हूं तुम

(शेष पृष्ठ २३ पर)

इस्लाम एक परिचय

मौ० सैयद अबुल हसन अली नदवी

आचरण की सभ्यता और मन की सफ़ाई

हज़रत मुहम्मद सल्ल० के अभ्युदय के प्रारम्भिक तथा बुनियादी उद्देश्यों का उल्लेख कुरआन में अल्लाह ने इस प्रकार किया है –

अनुवाद – "जिस प्रकार (और वरदानों को मिला करके) हमने तुम्हीं में से एक रसूल भेजा है, जो तुम को हमारी आयतें पढ़–पढ़ कर सुनाते और तुम्हें पवित्र व पाक बनाते और किताब (अर्थात् कुरआन) और समझदारी व दानाई सिखाते है और ऐसी बातें बताते हैं जो तुम पहले नहीं जानते थे।" (सूरः अलबक़र–१५१)

नबी के आहवान और अभ्युदय के उद्देश्यों की परिधि में आचरण की सभ्यता और मन की सफ़ाई, आत्मा की शुद्धता का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। ऊपर की आयत में हिकमत का अर्थ है उच्च आचरण और इस्लामी आदाब। सूरः अल – अस्रा की ३९वीं आयत के तुरन्त बाद "हिकमत" का शब्द आया है। खुदा फ़रमाता है :

अनुवाद – (ऐ पैग़म्बर) यह उन (हिदायतों) में से हैं जो खुदा ने दानाई की बातें तुम्हारी तरफ़ वही की है।" (सूरः अल – अस्रा – ३९)

स्वयं अल्लाह के नबी ने अपने अभ्युदय के उद्देश्य का उल्लेख करते हुए फ़रमाया ।

अनुवाद – "मेरा अभ्युदय ही इसलिए हुआ कि मैं उच्च आचरण को परिपूर्णता तक पहुंचाऊं।"

ह० मुहम्मद सल्ल० सदाचरण का बेहतरीन नमूना और परिपूर्ण आचरण थे। हज़रत आइशा रज़ि० से आपके आचरण के बारे में पूछा गया तो उन्होंने फ़रमाया –

"आपके अख़लाक़ (आचरण) मअ़लूम करना हो तो कुरआन देखो।"

ह० मुहम्मदद सल्ल० के सान्निध्य (सुहबत) में एक ऐसी पीढ़ी पली–बढ़ी जो उच्च आचरण और सदगुणों से सुसज्जित और बुरी आदतों, बुरे स्वभाव, अवगुणों अज्ञानता के प्रभावों और शैतान के बहकावों से सुरक्षित थी। अल्लाह के नबी ने भी अपने इस कथन की पुष्टि की। आपने कहा –

"सबसे अच्छे लोग मेरे ज़माने के लोग हैं।"

एक बड़े सहाबी अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने बड़ी अलंकृत शैली में सहाबा का परिचय कराया है। वह कहते हैं–

"पवित्र आत्मा, ज्ञान के गहरे, औपचारिकताओं से बरी।"

इन्सान साज़ी (मानव निर्माण) का एक स्थायी कारख़ाना

हज़रत मुहम्मद सल्ल० की वफ़ात (मृत्यु) के बाद नबी के सान्निध्य का यह क्रम जब टूट गया तो कुरआन, हदीस और नबी की जीवनी इस रिक्ति की पूर्ति करते रहे। किन्तु विभिन्न राजनीतिक, नैतिक तथा आर्थिक कारणों के प्रभाव और समय परिवर्तन के कारण हदीस के शैक्षिक और नैतिक पक्ष पर समकालीन शैली जो समाज के लिए अधिक आकर्षक बन गयी थी, भारी पड़ती चली गयी और जीवन गाथा (सीरत) और हदीस वाद–विवाद और शास्त्रार्थ में सीमित होकर रह गई। लेकिन इस पर भी हदीस व सीरत (कुरआन के बाद) आचरण की सभ्यता दिलों को मांझने और मानव आत्माओं को चमकाने का सबसे प्रभावी और आसान साधन है।

हदीस की किताबों में जो विषय वस्तु है वह दो प्रकार की है, एक का सम्बन्ध कर्म उनके वाह्य स्वरूप से है जो महसूस हो जैसे रूकूअ़, सज्दः, तिलावत, तस्बीह, दुआ़, जाप, तबलीग़, जिहाद, सुलह व जंग में शत्रु के साथ व्यवहार आदि और दूसरी क़िस्म का सम्बन्ध अन्तःकरण की उन अनुभूतियों से है जो इन कर्मों के सम्पादन के साथ पायी जाती थी। उनके अन्तर्गत निष्ठा व लगन, धैर्य व धीरज, सन्तोष व साधना, त्याग व तप, अदब व हया तन्मयता व तल्लीनता, विनय व विनती, लोक परलोक को प्राथमिकता, परमेश्वर को राजी करने व उसके दर्शन की अभिलाषा, मध्यमवर्गीय स्वभाव, सुरूचि, सहृदयता, दीन–दुखियों के साथ सहानुभूति, अनुभूति का रसास्वादन, भावनाओं की पवित्रता, साहस, एहसान व नेकी, सज्जनता व मानवता, अशुभ चाहने वालों को क्षमा, सम्बन्ध तोड़ने वालो के साथ उदारता और न देने वालों के साथ देने का बर्ताव आदि आते हैं।

यहां हम हज़रत मुहम्मद सल्ल० के व्यापक और सारगर्भित गुणों का वर्णन करेंगे। यह उन लोगों के बयान किये हुए हैं जो उनके सर्वाधिक निकट और उनके जीवन के हर पहलू से

भलीभांति परिचित थे और जो मानव प्रवृत्ति और नैतिक मूल्यों की गूढ़ता पर गहरी नज़र रखते थे।

ह० मुहम्मद सल्ल० का आचरण और स्वभाव

हिन्द बिन अबी हाला जो खदीजा रज़ि० के बेटे और हसन व हुसैन रज़ि० के मामा हैं, कहते हैं कि—

"अल्लाह के रसूल ह० मुहम्मद सल्ल० हर समय आख़िरत की सोच में रहते। यह सोच और चिन्ता बराबर बनी रहती, प्रायः खामोश रहते, देर—देर तक ख़ामोश रहते, अनावश्यक न बोलते, बोलते तो प्रत्येक शब्द का साफ उच्चारण करते (अर्थात् घमंडियों की तरह अधकटे शब्द का प्रयोग न करते), न अधिक बोलते न बहुत कम। आप के स्वभाव और बातचीत में नर्मी थी। आदत में कठोरपन और बेमुरव्वती न थी। न किसी का अपमान करते, और न अपने लिए अपमान पसन्द करते। नेअ़मत (वरदान) की बड़ी क़दर करते और उसको बहुत ज़ियादा जानते चाहे वह कितनी ही कम क्यों न हो और उसकी बुराई न करते। खाने पीने की चीज़ों की न बुराई करते न प्रशंसा। दुन्या और दुन्या से सम्बन्धित जो भी चीज़ होती उस पर कभी गुस्सा न करते, लेकिन जब खुदा के किसी हक को कुचला जाता तो उस समय आप के सामने कोई चीज़ ठहर न सकती, यहा तक कि आप उसका बदला ले लेते। आप को अपने लिए स्वयं क्रोध न आता, न अपने लिए बदला लेते, जब संकेत करते तो पूरे हाथ के साथ इशारा करते, जब किसी बात पर आश्चर्य करते तो उसको पलट देते। बात करते समय दाएं हाथ की हथेली को बाएं हाथ के अंगूठे से मिलाते, गुस्सा और नागवारी (अप्रिय) की बात होती तो मुख उधर से फेर लेते, प्रसन्न होते तो नजरें झुका लेते, आप का हंसना अधिकतर मुस्कुराना था जिससे केवल आप के दांत जो बरसात के ओलों की तरह पाक, साफ होते, जाहिर होते।"

हज़रत अली रज़ि० जो बड़े ज्ञानी और जानकार थे और जो ह० मुहम्मद सल्ल० के निकटतम व्यक्तियों में से थे और ज्ञान व साहित्य में विशिष्ट स्थान रखते थे, नबी के गुणों का बयान इस प्रकार करते हैं।

आप स्वभाव से अपशब्द, बेहयाई व बेशर्मी से दूर थे, बाज़ार में कभी आप जोर से न बोलते, बुराई का बदला बुराई से न देते, बल्कि क्षमा कर देते, आपने किसी पर भी कभी हाथ नहीं उठाया अल्लाह की राह में जिहाद को छोड़कर, किसी सेवक अथवा औरत पर आप ने कभी हाथ न उठाया। मैंने आप को किसी जुल्म व ज़ियादती का बलदा लेते हुए भी नहीं देखा, जब तक कि अल्लाह के आदेशों का उल्लंघन न हो, और उस पर आंच न आये। हां, यदि अल्लाह के किसी आदेश को कुचला जाता और उसकी गरिमा पर आंच आती तो आप उसके लिए सबसे अधिक क्रोधित होते। दो चीजें सामने होतीं तो हमेशा आसान चीज़ का आप चयन करते। जब घर पर होते तो आप इन्सानों की तरह नज़र आते, अपने कपड़ों को साफ़ करते, बकरी का दूध दुहते और अपने सारे कार्य स्वयं करते।

अपनी ज़बान सुरक्षित रखते और केवल उसी चीज़ के लिए खोलते ज़िससे आप को सरोकार होता। लोगों को सांत्वना देते और घृणा न फैलने देते, किसी कौम व बिरादरी का प्रतिष्ठित व्यक्ति आता तो उसको सम्मान देते, लोगों के बारे में नपी तुली बात कहते और अपनी प्रसन्नता व आचरण से उनको वंचित न रखते, अपने साथियों के हालात की बराबर खबर रखते। लोगों से लोगों के मुआमलें के बारे में पूछा करते।

अच्छी बात की अच्छाई बयान करते और उसे सशक्त बनाते। बुरी बात की बुराई करते और उसको कमजोर करते। आप का मुआ़मला मध्यम मार्गी और समता का था, इसमें उतार चढ़ाव न होता था। आप किसी बात से ग़फ़लत न करते, इस डर से कि कहीं दूसरे लोग भी ग़ाफ़िल न होने लगें और उकता जाएं। हर हाल और हर मौके के लिए आप के पास उस परिस्थिति के अनुरूप सामान था। न हक़ (सत्य) के मुआ़मले में कोताही करते न हद से आगे बढ़ते। आप के सानिध्य में जो लोग रहते थे वह सर्वोत्कृष्ट होते थे। आप की निगाह में सर्वोत्कृष्ट वह था जो ग़म ख्वारी व सहृदयता और परोपकार में सब से आगे हो। खुदा का नाम लेकर खड़े होते और खुदा का नाम लेकर बैठते। जब कहीं पदार्पण करते जहां तक लोग बैठे होते उसी जगह आसान ग्रहण करते, और इसका हुक्म भी देते। उपस्थित जनों में प्रत्येक व्यक्ति पर ध्यान देते। आप की संगत में बैठने वाला हर व्यक्ति यह समझता था कि उससे बढ़कर आप की निगाह में कोई और नहीं है। यदि कोई व्यक्ति आपको किसी ग़रज़ से बिठा लेता या किसी ज़रूरत में आप से बात करता तो बड़े धैर्य के साथ उसकी पूरी बातें सुनते, यहां तक कि वह स्वयं ही अपनी बात पूरी करके प्रस्थान करता। यदि कोई

व्यक्ति आप से कुछ सवाल करता और कुछ मदद चाहता तो बिना उसकी ज़रूरत पूरी किये उसे वापस न करते या कम से कम नर्मी से जवाब देते। आप का सदाचरण तमाम लोगों के लिए आम था, और आप उनके हक़ में बाप हो गये थे तमाम लोग हक़ के मुआमले में आपकी नज़र में बराबर थे। आप का सत्संग ज्ञान, भक्ति, हया और शर्म और धैर्य व अमानत दारी का सत्संग था। आप की मजलिस में न कोई जोर से बोलता था, न किसी के अवगुण बयान किया करते थे, न किसी प्रतिष्ठा को आघात पहुंचाया जाता था, न कमज़ोरियों का प्रचार किया जाता था। सब एक दूसरे के बराबर थे और केवल खुदा के डर के आधार पर उनको एक दूसरे पर प्राथमिकता प्राप्त होती थी। इसमें लोग बड़ों का आदर और छोटों के साथ दया प्रेम का मुआमला करते थे। ज़रूरतमन्द को अपने पर प्राथमिकता देते थे। यात्रियों और नवआगन्तुकों की सुरक्षा करते और उनकी सुख–सुविधा का ध्यान रखते।

आप सदैव प्रसन्नचित रहते। बड़े विनम्र थे। न कठोर प्रकृति के थे और न सख्त बात कहने के आदी। न चिल्लाकर बोलने वाले, न घमंडियों की तरह बात करने वाले। न किसी को ऐब लगाने वाले। न तंग दिल और कंजूस। जो बात आप को पसंद न होती तो उसके प्रति उदासीन रहते, और स्पष्टतः उससे निराश भी न होते और उसका जवाब भी न देते (अर्थात उसकी अनदेखी कर देते)। तीन बातों से आपने अपने को बिल्कुल बचा रखा था– एक झगड़ा, दूसरे घमंड और तीसरे अनावश्यक और बेमकसद काम। लोगों को भी तीन बातों से आपने बचा रखा था। न किसी की बुराई करते थे, न उसको ऐब लगाते थे (दोषारोपण), और न उसकी कमज़ोरियों और गोपनीय बातों के पीछे पड़ते थे और केवल वह बात करते थे जिस पर सवाब (पुण्य) की उम्मीद होती थी। जब आप बात करते तो उपस्थित जन अदब से इस प्रकार सर झुका लेते थे कि मअ़लूम होता था कि उनके सरों पर चिड़ियां बैठी हुई थीं (अर्थात चुपचाप बिना हिले डुले) जब आप खामोश होते तब यह लोग बात करते। आप के सामने कभी विवाद न करते। यदि आप की मजलिस में कोई व्यक्ति बात करता तो शेष सभी लोग शान्त होकर सुनते, यहां तक कि वह अपनी बात समाप्त कर लेता। आप के सामने हर व्यक्ति को पूरे इत्मीनान से अपनी बात कहने का अवसर मिलता। जिस बात पर सब लोग हंसते उस पर आप भी हंसते जिसपर सब आश्चर्य व्यक्त करते आप भी आवश्र्य व्यक्त करते। यात्री और परदेसी के हर प्रकार के सवाल धैर्य से सुनते। आप कहते "तुम किसी जरूरत मन्द को पाओ तो उसकी मदद करो।" आप प्रशंसा उसी व्यक्ति की स्वीकार करते जो नार्मल होती। कोई बात कह रहा होता तो न बोलते। और उसकी बात न काटते हां यदि हद से बढ़ने लगता तो उसको मना करते, या मजलिस से उठकर उसकी बात को काट देते।

आप सर्वाधिक उदार, सहृदय, सत्यवादी, नर्म मिज़ाज और व्यवहार में अत्यन्त कृपालु थे। जो पहली बार आप को देखता उस पर आप का प्रभाव बैठ जात, आप के सत्संग में रहता और जान पहचान प्राप्त होती तो आप पर फरेफ़्ता हो ज़ाता। आप की चर्चा करने वाला कहता कि न आप से पहले आप जैसा कोई व्यक्ति देखा न आप के बाद।

मुनाजात

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी

जुहदो तक़वा की निअ़मत हमें चाहिये
हर नफ़स तेरी उल्फ़त हमें चाहिए
नेक कामों से रग़बत हमें चाहिए
दीनो दुन्या की अ़िज़्ज़त हमें चाहिए
कर हमें साहिबे अ़ज़्मों आ़ली मक़ाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

कर सुबुकदोश तू क़र्ज़ के बार से
फ़क्रो इफ्लास की ज़िल्लतो आ़र से
तू बचा हर मुसीबत हर आज़ार से
हर तरह की फ़लाकत से इदबार से
हम मसीबत में आएं ग़रीबो के काम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

हम को महफ़ूज़ रख बुख़्लो निस्यान से
कुफ़्रो शिर्को निफ़ाक़ और अ़िस्यान से
झूट, गीबत, हसद और बुहतान से
सूदो रिशवत ग़सब और तुग़यान से
हम बचें किब्रो सुस्ती रिया से मुदाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

नफ़्सो शैतान से हम को महफ़ूज़ रख
हासिद इन्सान से हम को महफ़ूज़ रख
मूज़ी हैवान से हम को महफ़ूज़ रख
दुशमने जानसे हम को महफ़ूज़ रख
तेरे हिफ़्ज़ों अमां में रहें सुब्हो शाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

तू बचा हम को कम्याबिये माल से
जुअ़फ़े पीरी के तक्लीफ़ देह हाल से
फ़ित्नागर शर पसन्दों की हर चाल से
तू बचा हम को तल्बीसे दज्जाल से
सर कशों को इलाही न कर बेलगाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

अमानतदारी का अनोखा उदाहरण

डॉ० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

अब्बासी खिलाफत के समय में प्रसिद्ध इस्लामी इतिहासकार व टीकाकार अबू जाफर मुहम्मद बिन जरीर तिबरी २४० हिजरी में मक्का पहुंचते हैं। मक्का और इस्लामी जगत से आने वाले उलमा, बुंजुर्ग मशायख, कुरआन के मुफ़स्सिरीन (टीका कारा), मुहद्दिसीन (हदीसों के विद्वानों) और फुक़्हा (इस्लामी विधान के माहिरों) तथा साहित्यकारों से अपने ज्ञान की पूर्ति करना चाहते हैं । उनका एक उद्देश्य यह भी है। कि काबा के रूहानी माहौल तथा रब्बानी हवाओं में कुछ समय गुज़ार कर दीन में मज़बूती व ज्ञान में गहराई पैदा करें। उस समय हरम का क्षेत्रफल ही कितना था और हरम में दर्स (शिक्षा, दीक्षा) देने वालों और बाहर से आने वालों की संख्या ही कितनी थी? कुछ दिनों में सब कुछ देख लिया और सब को पहिचान लिया। जो भी नई बात होती उसका उन्हें पता हो जाता। विद्वानों से ज्ञान–सर्जन करते, जो समय बचता उसमें कुछ लिखते पढ़ते। कुछ समय अल्लाह की इबादत, ज़िक्र व फिक्र में लगा देते।

मक्का के वासियों में अमीर भी थे और ग़रीब भी, स्थानीय भी और परदेसी भी। सब अपने अपने कामों में व्यस्त और अल्लाह की इबादत में मगन रहते। मक्का में एक मोहल्ले में एक कुटुम्ब रहता था, जिस में नौ सदस्य थे। एक पति, पत्नी, पत्नी की बूढ़ी मां, पति की दो बहनें और चार बेटियां। मर्द एक जिस की आयु लग भग ८६ साल थी। नेक, परहेजगार, अल्लाह वाले, अल्लाह से डरने वाले, खुदा को पहचानने वाले, संयमी, थोड़े में सन्तोष कर लेने वाले, अपने आत्म सम्मान और मान सम्मान के रक्षक। कई कई दिन फ़ाक़े में गुजर जाते, मगर किसी को पता न होने देते। अल्लाह की रज़ा में राज़ी, सारा जीवन दीन दरिद्रता में व्यतीत हुआ। शरीर पर केवल एक कमीज़ थी, जिसे पहन कर सब बारी बारी नमाज़ अदा करते। दिन का बाकी समय अपने फटे पुराने कपड़ों में बिताते। दिन में वही कमीज पहन कर वह बुजुर्ग अबू ग़यास रहम० रोज़ी की तलाश में निकलते। काम मिल जाता तो खाने पीने का कुछ सामान ख़रीद लाते वर्ना बचे हुए रोटियों के टुकड़े और खजूर के कुछ दानों और पानी की कुछ घूंट से सन्तोष कर लेते।

इब्ने जरीर तबरी के मक्का पहुंचने के थोड़े ही दिनों के बाद रमजान का महीना शुरू हो गया। सख़्त गरमी का मौसम था। मक्का के तपते हुए पहाड़ों और रेगिस्तानी घाटियों में गरमी की सख़्ती और धूप की तपिश कुछ अधिक ही होती है। एक सुब्ह को फ़ज्र की अज़ान सुनते ही शैख़ अबू ग़यास हरम की ओर रवाना हुए। कई दिन पेट भर खाए बिना लगातार रोज़े रखने के कारण मुश्किल से कदम उठ रहे थे। नमाज़ भी मुश्किल से अदा कर सके नमाज़ पढ़ने के बाद अपनी ही जगह पर बैठ कर अपनी और बच्चों की भूख प्यास के बारे में सोचने लगे। यद्यपि इससे पहले न कभी अपने इस हाल पर इस प्रकार सोचा था और न घर में इस विषय पर कोई चर्चा करने देते थे। दुनिया और उसकी खुशहाली और चमक दमक, दौलत और उसकी रेल, पेल को शेख गयास भूल चुके थे, बल्कि उससे उनको नफ़रत हो चुकी थी। आज अपने बारे में नहीं, पत्नी की बूढ़ी मां, दो बहनों और मासूम बच्चियों का हाल नज़रों के सामने आ गया। कई दिन से जारी फाके की कल्पना करके सर चकराने लगा।

दुन्या में कितने लोग थे, जो माल व दौलत और नाना प्रकार के खानों का आनन्द लेते हैं और इतना खाते हैं कि बदहज़मी का शिकार हो जाते हैं। यदि वे सामान्य लोगों की तरह होते तो दुन्या वालों से नफ़रत करके उनके विरुद्ध उठ खड़े होते। मगर उनके ईमान व यक़ीन ने उनको इस हरकत से रोके रखा। यह तो खुदा की अपनी व्यवस्था है। वह अच्छी तरह जानता है, हमें हर हाल मे उसका शुक्र अदा करना है। यह सब सोचते हुए उठे और घर पहुंच गए। कमीस उतारी और अपनी पत्नी को आवाज़ दी। लुबाबा कमीज ले आओ। वे फटे हुए कपड़े के चिथड़े में लिपटी हुई आईं, कमीस ली और वह चिथड़ा अबू ग़यास ने लेकर अपने बदन से लपेट लिया। लुबाबा ने अपने पति से बड़े

दर्द के साथ कहाः अबू गयास तीन दिन से हमने खाना नहीं चखा है, रोज़े और गर्मी के दिन, मैं तो सब्र कर लूं पर बच्चियां और बूढ़ी मां इतनी सामर्थ्य नहीं रखती हैं। आज खुदा के भरोसे पर निकलो और कुछ मजदूरी तलाश करो। हो सकता है अल्लाह कुछ टके या रोटियों के कुछ टुकड़े कहीं से दिला दे, जिससे हम इफ़्तार कर सकें।' अबू गयास ने जवाब दिया इन्शाअल्लाह जाउंगा। उन्होंने थोड़ी देर इन्तिजार किया। जब सूरज अच्छी तरह निकल आया और धूप फैल गयी तो घर से निकले और मक्का की गलियों में काम तलाश करने लगे। मगर कोई काम नहीं मिला और न किसी ने उनकी कोई मदद ही की। अब गर्मी बढ़ गई, सूरज की तपिश असहनीय हो गयी। लोग अपने अपने घरों में पनाह लेने लगे, शैख अबू गयास चलते चलते थक गए, टांगें जवाब दे गयीं। अपने मोहल्ले में पहुंच कर थक हार कर एक दीवार के सहारे बैठ गए। गर्मी, निराशा, असफलता, फ़ाक़े, घर की चिन्ता, बच्चियों बहनों, पत्नी और बूढ़ी मां की भूख की कल्पना ने बेहाल कर दिया। आप से आप ही दिल में आया : काश मौत आ जाती-और इन सारे जंजालों से छुट्टी मिल जाती।

इस परेशानी और बेख़याली में ज़मीन कुरेदने लगे। अचानक हाथ किसी लम्बी डोरी पर पड़ा। खींचा तो लगा सांप की पूंछ है मिट्टी में सर छुपाए हुए हैं। घबरा कर हाथ हटा लिया। मगर मौत की इच्छा ने और निकट कर दिया, फिर याद आया कि मोमिन को मरने की इच्छा और मौत की तमन्ना नहीं करनी चाहिए। तौबा की और इस्तग़फार पढ़ी और सांप को ध्यान से देखने लगे। परन्तु उसमें किसी प्रकार की हरकत नहीं हुई। उसे छू कर देखा, फिर भी नही हिला तो रेत व मिट्टी को और हटाया। एक थैली निकली जिसमें साने के सिक्के थे। खुशी से भूख और प्यास खत्म हो गयी और जवानी वापस आती महसूस की। सोचा कि अपने घर वालों के लिए प्रसन्नता व खुशी के साथ सुख व इत्मीनान प्राप्त हो गया।

अचानक ईमान और अल्लाह का डर दिल में जागा और जबान ने कहा कि यह माल तुम्हारा नहीं। यह पड़ा हुआ माल है। साल भर तक इसकी घोषणा कराना जरूरी है, यदि इसका मालिक न मिला तब यह जायज़ हो सकता है और अब हाथ में पकड़ लेने के बाद वापस भी नहीं डाल सकते। सोचने के बाद उठ खड़े हुए। हाथ में थैली लेकर घर के पास पहुंचे, तो छुपा ली ताकि घर के लोग देख कर बेईमानी करने पर तैयार न कर लें। खामोशी से घर के अन्दर दाख़िल हुए। पत्नी ने देख लिया। पूछा क्या लाए हो ? बोले कुछ नहीं और थैली को छुपाना चाहा यद्यपि अब तक पत्नी से कोई बात न छुपायी थी। पत्नी ने कहा कुछ तो है। फिर उन्होंने सारी बात बता दी। पत्नी बड़ी नेक और दीनदार थीं। कहा : वास्तव में यह धन लेना तो जायज नहीं, मगर क्यों न ऐसा करो कि एक दीनार कर्ज के रूप में ले लो। शेख ने कहा बिल्कुल नहीं, खबरदार यदि छुवा या किसी को बताया तो मैं माफ़ नहीं कर सकता।

दीनारों की थैली रखकर हरम पहुंचे। इब्ने जरीर तबरी कहते हैं कि एक खुरासानी व्यक्ति घोषणा कर रहा था कि भाइयों ! यदि किसी को कोई थैली मिली हो जिसमें एक हजार दीनार हैं, तो मुझे वापस कर दे, अल्लाह उसका भला करेगा। यह सुनकर मक्का के एक बड़े मियां खड़े हुए और कहा कि हम मक्का के वासी ग़रीब व परेशान हैं, यदि वह थैली किसी को मिल गयी होगी तो वह देगा मगर तुम उसे इनाम के तौर पर कुछ दे दो। खुरासानी ने कहा कि बाबा कितना लेगा? उन्होंने कहा कि उसका दसवां हिस्सा अर्थात सौ दीनार। खुरासानी ने कहा, नहीं। उन्होंने कहाः बीसवां हिस्सा। खुरासानी इस पर भी तैयार नहीं हुआ, फिर उन्होंने कहा अच्छा एक दीनार ही सही, उसने कहा एक दीनार भी नहीं, मैं तो अपना मामला खुदा के हवाले करता हूं और दोनों ने अपना अपना रास्ता पकड़ा।

तबरी कहते हैं कि मुझे ख़याल आया कि थैली इन्हीं बुजुर्ग के पास हैं। मैं उनके पीछे लग गया। वह अपने एक टूटे फूटे घर पहुंचे और पत्नी को आवाज़ देकर कहाः लुबाबा मुझे थैली वाला मिल गया है, मैंने दसवां हिस्सा मांगा मगर वह इस पर राज़ी न हुआ। थैली तो हमें वापस ही करनी है। पत्नी ने कहा हम पचास साल से यह फ़ाका व भूख तुम्हारे साथ सहन कर रहे हैं, अब ये परिवार के लोग भी हैं खुदा ने यह नेअ़मत तुम्हें दी है, तुमने चुरायी नहीं है यदि ख़र्च कर लिया तो कोई हरज की बात नहीं।

शैख़ अबू ग़यास ने जवाब दिया नहीं, मैं इस बुढ़ापे में अपनी आख़िरत ख़राब नहीं करूंगा। इसके बाद दो दिन तक वही घटना पेश आती रही। अन्त में शैख़ अबू ग़यास ने कहा।

अच्छा एक दीनार दे दो। आधे दीनार से वह मश्क खरीद कर हाजियों को पानी पिलाएगा और उससे कुछ आमदनी हो जाय करेगा और आधे दीनार की बकरी खरीदकर अपने घर वालों की भूख मिटाएगा।

मगर खुरासानी तैयार न हुआ, तो शैख ने कहा अच्छा मेरे साथ आओ और दीनारों की थैली ले जाओ। खुरासानी उनके साथ चल दिया। मैं भी पीछे पीछे चला।

घर में पहुंच कर अबू गयास ने चटाई के नीचे से थैली निकाल कर खुरासानी को दे दी। खुरासानी ने कहाः हां यह मेरी थैली है, फिर थैली को उलट दिया दीनारों की झनकार औरतों ने सुनी तो पर्दे के पीछे से देखने लगीं। उन्होंने कभी इतने दीनार न देखे थे।

खुरासानी ने दीनार गिने और कहा ठीक है, फिर वह थैली लेकर बाहर निकल गया। उसने उनका शुक्रिया तक अदा न किया। मैं वहीं ठहरा रहा। मैंने लुबाबा और बच्चियों के चेहरे पर निराशा और मुर्दनी के लक्षण देखे। इसके बाद वे भूख और कमजोरी से बे हाल हो कर बेहोश होकर गिर पड़ीं।

अचानक शैख़ ने कोई आहट महसूस की। दरवाजे के बाहर देखा तो वही खुरासानी वापस आ रहा था। खुरासानी ने आकर शैखू अबू ग़यास को सलाम किया और कहा कि मेरे बाप ने मरते समय तीन हजार दीनार छोड़े थे, कहा कि एक तिहाई दीनार तुम ऐसे लोगों को दे देना जो तुम्हारी नज़र में अधिक ज़रूरतमन्द हों और मेरा कजावा आदि बेच कर हज करना। मैंने एक हजार दीनार इस थैली में रखा और सोचा कि जब जरूरतमन्द आदमी मिलेगा तो उसको दे दूंगा, मगर यह थैली कहीं गिर गयी। मैं जब से खुरासान से यहां आया हूं, आपसे ज्यादा ज़रूरतमन्द आदमी मुझे नहीं दिखा, अल्लाह बरकत प्रदान करे। वह थैली गयास के आगे रख कर चला गया।

तबरी कहते हैं कि मैं भी वापस पलटा, मगर शैख की आवाज़ कानों में आयी। ऐ बच्चे सुनो ! मैं पास गया तो उन्होंने कहा। तुम हर दिन हमारे साथ यहां आते रहे हो कोई छात्र मालूम होते हो। इस थैली में एक हज़ार दीनार हैं। हम घर के लोग नौ हैं तो नौ सो हमारे हुए और सौ दीनार तुम्हारे। यह लो और अपनी पढ़ाई में लगे रहो।

(पृष्ठ ३४ का शेष)

पूरा हो जाता है।

यूनानी इलाज में दस ग्राम ख़ाक्सी में चार दाने मुनक़्क़ा बीज निकाल कर लगभग डेढ़ कप पानी में उबालें जब लगभग एक कप पानी रह जाए तो उस को छान कर थोड़ी सी चीनी मिला कर बच्चे को पहले मुनक़्क़ा खिलाएं उसके बाद हलका गुनगुना ख़ाक्सी का पानी पिलाएं। इस प्रकार दिन में तीन बार दें। इससे बच्चे को क़ब्ज़ भी न होगा। और धीरे धीरे अच्छा हो जाएगा।

खाने में बच्चे को मूंग की खिचड़ी या मसूर की दाल बे नमक या जौ का पानी, साबूदाना या गेहूं की दलिया देते रहें। मिठाई, तेल, खटाई, मिर्च, अचार या तली हुई चीज़ न खिलाएं।

ऐ मेरे अल्लाह

ख़ैरुन्निसा बेहतर

ऐ मेरे ख़ालिक मेरे अल्लाह
ऐ मेरे बादशाह आ़लीजाह
है तू ही मेहरबाँ फ़क़ीरों पर
बे बसों बे कसों हक़ीरों पर
तेरी शफ़क़त सिवा है मादर से
तू बचाता है सब को हर शर से
तू ही तिफ़्ली में था ख़बर गीराँ
रहम करता था तू अ़यां व निहां
ऐ मेरे मिहरबां मेरे ग़फ़्फ़ार
ऐ मेरे रहनुमा मेरे ग़म्ख्वार
अपने हिफ़्ज़ों अमां में रख सब को
आ़फियत से जहां में रख सब को
रोज़ अफ़्ज़ूं फ़राख़ दस्ती दे
और तौफ़ीक़े हक़ परस्ती दे
मैं जहां में रहूं सदा खुश दिल
तेरा फ़ज़्लो करम रहे शामिल
ऐ रहीम ऐ करीम या रहमां
सुन दुआए ग़रीबे मुज़तर्रा
हां वसीले से अ़र्शे अकरम के
और वसीले से इस्मे अअ़ज़म के
क़ैदे ग़म से मुझे रिहा कर दे
अ़फ़्व अब तो मेरी ख़ता कर दे
अहमदे मुजतबा के सदक़े में
अहमदे मुस्तफ़ा के सदक़े में
जलवा दिखला मुझे मुहम्मद (स०) का
खोल दे दर मेरे मक़्सद का
शुक्र है तेरा ऐ ख़ुदाए जहां
तू ने मुझ पर किया बड़ा इहसां
मुझ फ़क़ीरो गदाए कमतर को
और हक़ीरो ज़लीलो बदतर को
ऐसा रुत्बा अ़ता किया तू ने
ख़ाक से कीमिया किया तूने
मैं थी बदतर मगर किया बेहतर
फ़ज़्ल यूं ही सदा रहे मुझ पर
इ़ज़्ज़तो आब्रू से मर जाऊं
दीनो दुन्या में नाम कर जाऊं

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का उच्च आचरण

सय्यद सुलेमान नदवी

हज़रत आइशा (रज़ि०) से पूछा कि रसूल (स०) के अख़्लाक व व्यवहार कैसे थे? उन्होंने कहा क्या तुम ने कुरआन नहीं पढ़ा ? जो कुछ कुर्आन में है वह रसूलुल्लाहि सल्ल० के अख्लाक थे। आप की पूरी ज़िन्दगी कुरआन की अ़मली तफ्सीर (व्याख्या) थी। और यह भी आप (सल०) का एक मोअ़जिज़ा (मत्कार) है खुद कुरआन ने इसकी गवाही दी और कहा – "बेशक ऐ मुहम्मद! आप उच्च आचरण पर हैं।"

हुजूर (सल्ल०) बहुत ही ज़ियादा मिलनसार, मेहरबान, विनम्र और रहम दिल थे। छोटे बड़े सबसे मुहब्बत करते, बहुत ज़ियादा दानी और इनाम देने वाले थे। जब तक आप से हो सकता सबका सवाल पूरा करते पूरी उम्र किसी के सवाल का इन्कार नहीं किया, खुद भूके रहते और दूसरों को खिलाते। एक बार एक सहाबी की शादी हुई उनके पास दावत वलीमा का कुछ सामान न था। कहा आइशा के पास जाओ आटे की एक टोकरी मांग लाओ। जब कि उस आटे के सिवा शाम के लिए घर में कुछ न था। दुन्या के माल से दूरी का यह हाल था कि घर में नकद कोई चीज़ भी होती जब तक वह सदकः न कर दी जाती तब तक घर में आराम न करते। एक बार फिदक के रईस ने चार ऊंट अनाज भेजा उसको बेचकर कर्ज़ चुकता किया गया फिर भी कुछ बच गया आप (स०) ने कहा जब तक कुछ भी बाक़ी रहेगा मैं घर में नहीं जा सकता। रात मस्जिद में बसर की, दूसरे दिन जब मालूम हुआ कि वह अनाज बांट दिया गया, तब घर वापस आए।

हुजूर (स०) बड़े मेहमानों को खाना खिलाने वाले थे। आप (स०) के यहां मुसलमान, मुश्रिक, काफिर सब ही मुसलमान होते, आप सल्ल० सबकी इज़्ज़त व सम्मान करते और खुद ही उनकी सेवा करते। कभी ऐसा होता कि मेहमान आ जाते और घर में जो कुछ होता वह उनको खिला पिला दिया जाता और पूरा घर फ़ाक़ा (उपवास) करता।

एक बार आप (स०) के यहां एक काफ़िर मेहमान हुआ, आप (स०) ने एक बकरी का दूध उसको पिलाया वह सब दूध पी गया आप (स०) ने दूसरी बकरी मंगवाई, यह उसका भी दूध पी गया, इस तरह सात बकरियों की बारी आई जब तक उसका पेट न भर गया आप (स०) उसे दूध पिलाते रहे। रातों को उठ उठ कर उसकी देख भाल करते कि उसको कोई तकलीफ तो नहीं है। घर में रहते तो घर के काम काज अपने हाथों से करते, अपने फटे कपड़े आप सी लेते, आप फटे जूते खुद गांठ लेते, बकरियों का दूध अपने हाथ से निकालते, सबके साथ सबके बराबर होकर बैठते मस्जिदे नबवी के बनाने और खन्दक (गढ़ा) खोदने में सब मज़दूर के साथ मिलकर आप (स०) भी काम करते।

आप सल्ल० यतीमों व अनाथों से मुहब्बत रखते, और उनसे भलाई करने के लिए कहते। आप (सल्ल०) ने एक बार कहा मुसलमानों का सबसे अच्छा घर वह है जिसमें किसी यतीम के साथ भलाई की जा रही हो और सबसे बुरा घर वह है जिसमें किसी यतीम के साथ बुराई की जा रही हो।

आप सल्ल० की चहेती बेटी हज़रत फातिमा जिनकी हालत यह थी कि चक्की पीसते–पीसते हथेलियां घिस गई थीं और मशक में पानी भर–भर कर लाने से नीले दाग पड़ गए थें उन्होंने आप (सल्ल०) से एक दिन एक दासी का सवाल किया। आप (सल्ल०) ने जवाब दिया – फातिमा ! बदर के यतीम तुमसे पहले सवाल कर चुके हैं। एक रिवायत में है – कि आप सल्ल० ने कहा फातिमा ! सुफ्फा के गरीबों का अब तक कोई इन्तिजाम नहीं हुआ है तो तुम्हारा सवाल कैसे मान लूं।

गरीबों के साथ आप का व्यवहार ऐसा था कि उन्हें अपनी गरीबी महसूस न होती उनकी मदद करते और उनका दिल बहलाते, ज्यादातर दुआ़ मांगते थे कि ऐ अल्लाह ! मुझे गरीब ज़िन्दा रख, गरीबी में उठा, और गरीबों के साथ मुझे (आखिरत में) जमा कर। एक बार एक पूरा क़बीला आप (सल्ल०) के पास आया । यह लोग इतने गरीब थे कि उनमें से किसी के बदन पर कोई ठीक कपड़ा न था। नंगे बदन नंगे पांव। उनको देखकर आप पर बहुत असर

हुआ। परेशानी में अन्दर गए फिर बाहर आए उसके बाद सब मुसलमानों को इकटठा करके उनकी मदद के लिए कहा।

आप (सल्ल०) मजलूमों की दुहाई सुनाते और इन्साफ़ के साथ उनका हक उन्हें दिलाते, कमजोरों पर रहम करते, मजबूरों का सहारा बनते, क़र्ज़दारों का क़र्ज़ खुद देते, हुक्म था कि जो मुसलमान मर जाए और अपने ज़िम्मे क़र्ज़ छोड़ जाए तो मुझे खबर दो मैं उसका कर्ज चुकता करूंगा और जो माल छोड़ कर मरे वह वारिसों (उत्तराधिकारियों) का हक़ है मुझे उससे कोई मतलब नहीं।

आप सल्ल० बीमारों को तसल्ली देते, उनको देखने जाते, दोस्त व दुश्मन, मुसलमान व काफ़िर इसमें सब एक समान थे। गुनहगारों को माफ़ कर देते, दुश्मनों के लिए भलाई की दुआ करते, जानी दुश्मनों और कातिलाना हमले करने वाले तक से बदला नहीं लिया। एक बार एक आदमी ने आप (सल्ल०) के कत्ल का इरादा किया। सहाबा (रजि०) उसको गिरफ्तार करके लाए वह आप (सल्ल०) को देखकर डर गया। आप (सल्ल०) ने कहा डरो नहीं, अगर तुम मुझे क़त्ल भी करना चाहते हो तो नहीं कर सकते थे।

हिजार बिन अलअस्वद जो एक तरह से हुजूर सल्ल० की लड़की हज़रत जैनब का कातिल था, मक्का जब फतेह (विजय) हुआ तो उसने चाहा कि ईरान भाग जाएं लेनिक वह सीधे हुजूर (सल्ल०) के पास आया और कहा या रसूलुल्लाह ! मैं ईरान जाना चाहता था लेकिन आप (स०) का रहम याद आया। अब मैं हाजिर हूं और मेरे जिन मुजरिमों की खबर मुझे मिली है वह बिल्कुल सही है। हुजूर (सल्ल०) ने उसे माफ़ कर दिया।

पड़ोसियों का हाल चाल लेते उनके यहां तोहफ़े भेजते, उनका हक़ पूरा करने को कहते। एक दिन सहाबा (रज़ि०) बैठे हुए थे आप सल्ल० ने कहा अल्लाह की क़सम । वह मोमिन न होगा। सहाबा ने पूछा कौन या रसूलुल्लाह । कहा वह जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों से बचा न हो। आप (सल्ल०) पड़ोसियों के घर जाकर उनका काम कर आते। पड़ोसियों के सिवा और जो भी काम के लिए कहता आप (सल्ल०) पूरा कर देते। मदीना की लौंडिया (दासी) आप सल्ल० के पास आतीं और कहतीं या रसूलल्लाह ! यह मेरा काम है आप (सल्ल०) उसी वक्त उठ खड़े होते और उनका काम कर देते। बेवा (विधवा) हो या गरीब या कोई ज़रूरतमन्द, सब की ज़रूरत आप सल्ल० पूरी कर देते और दूसरों के काम करने में शर्म महसूस न करते।

बच्चों से बड़ी मुहब्बत करते चूमते और प्यार करते थे। फसल का नया मेवा सबसे कम उम्र वाले बच्चे को जो उस वक्त वहां होता उसे देते, रास्ते में बच्चे मिल जाते तो खुद उनको सलाम करते। इस्लाम से पहले औरत हमेशा ज़लील व अपमानित समझी जाती थी लेकिन हमारे हुजूर सल्ल० ने उन पर बहुत एहसान किया उनके हक़ व अधिकार ठहराए और अपने बर्ताव से यह बता दिया कि यह गिरोह भी घटिया नहीं है बल्कि इज़्ज़त व हमदर्दी के लाइक है। आप (सल्ल०) के पास हर वक्त मर्द जमा रहते थे। औरतों की आप (स०) की बत सुनने का मौक़ा न मिलता इसलिए खुद औरत के कहने पर आप (स०) ने उनके लिए एक दिन तय कर दिया, औरतें आप (स०) से दिलेरी और बेझिझक सवाल करतीं लेकिन आप (स०) बुरा न मानते उनकी इज्जत व सम्मान का ध्यान रखते थे।

आप (स०) सारी दुनिया के लिए रहमत बन कर आए थे इसलिए किसी के साथ भी ज्यादती व नाइन्साफी को पसन्द न करते यहां तक कि जानवरों के साथ लोग जो बेपरवाही करते थे वह भी आप (स०) सहन न कर सकते थे, और इन बेजबानों पर जो जुल्म होता चला आया उसको रोक दिया।

एक बार एक साहब ने एक चिड़िया का अण्डा उठा लिया चिड़िया बेचैन होकर पर मार रही थी। आप (स०) ने पूछा किसने इसका अण्डा उठा लिया है, और उसको दुख पहुंचाया है। उन साहब ने कहा या अल्लाह के रसूल ! मैंने यह किया है, आप ने हुक्म दिया कि वही रख दो।

आप (स०) नज़र में अमीर व गरीब सब बराबर थे। क़बीला मखजूम की एक औरत चोरी के जुर्म में गिरफ्तार हुई लोगों ने हज़रत उसामा (रज़ि०) जिनको आप (सल्ल०) बहुत चाहते थे उनसे सिफ़ारिश कराई। हुजूर सल्ल० ने कहा तुमसे पहले क़ौम इस लिए बर्बाद हो गई कि जब कोई बड़ा आदमी जुर्म करता तो उसको छोड़ देते और गरीब आदमी जुर्म करता तो सजा पाता। अल्लाह की क़सम अगर मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा चोरी करती तो उसका भी हाथ काटा जाता।

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं कि मैं दस साल आप (स०) की सेवा में रहा, मगर आप (सल्ल०) ने न कभी

डांटा, न मारा, न पूछा कि तुम यह काम क्यों किया और क्यों न किया। आप (सल्ल०) ने पूरे उम्र में कभी किसी को नहीं मारा। और वह क्या अजीब बात है कि मुसलमानों का जनरल जिसने लड़ाई में ६ साल काटे और जिसने कभी लड़ाई के मैदान से मुंह न मोड़ा, उसने कभी अपने दुश्मनों पर तलवार न उठाई और न अपने हाथ से किसी पर वार किया। उहद के मैदान में जब हर तरफ से आप सल्ल० पर पत्थरों तीरों और तलवारों की बारिश हो रही थी, आप (स०) अपनी जगह पर खड़े थे और जान न्यौछावर कर देने वाले सहाबा दाएं बाएं कट –फट कर गिर रहे थे।

इसी तरह हुनैन की लड़ाई में ज्यादातर मुसलमान लड़ाकों के पांव उखड़ चुके थे हुजूर सल्ल० पहाड़ की तरह अपनी जगह पूरे खड़े थे। सहाबा (रज़ि०) कहते हैं –ज्यादातर लड़ाइयों में आप (सल्ल०) वहां होते थे जहां बड़े बड़े बहादुर खड़ा होना अपनी बहादुरी का आखिरी कारनामा समझते थे। मगर ऐसी खतरनाक जगह पर खड़े होकर भी दुश्मन पर हाथ न उठाते थे। उहद के दिन जब मुश्रिकों के हमले में सर ज़ख़्मी हुआ और दांत शहीद हुए। आप (सल्ल०) यह कहते थे या अल्लाह इन्हें माफ़ कर कि यह नहीं जानते।"

सालों साल की नाकामी की तकलीफों के बाद भी तंगी मायूसी न कभी आप (सल्ल०) के दिल में तंगी न पाया। और आखिर वह दिन आया जब आप सल्ल० अकेले पूरे अरब पर छा गए, मक्का की तक़लीफ़ों से घबराकर एक सहाबी ने कहा कि या अल्लाह के रसूल ! आप हम लोगों के लिए क्यों दुआ नहीं करते? यह सुनकर आपका चेहरा लाल हो गया और कहा तुमसे पहले के लोगों को आरो से चीरा गया। उनके बदन पर लोहे की कछिया चलाई गई जिससे चमड़ा व गोश्त सब कट–फट जाता था लेकिन यह तकलीफें भी उन्हें सच्चाई से न हटा सकीं। अल्लाह की क़सम, इस्लाम पूरा होकर रहेगा। यहां तक कि सनआ (यमन) का एक सवार इस तरह बेखटके चले जाएंगे कि उसका अल्लाह के सिवा किसी का डर न होगा।

आप सल्ल० का वह पक्का इरादा व धैर्य याद होगा जब आप सल्ल० ने अपने चाचा को यह जवाब दिया था कि चाचा जान कि कुरैश अगर मेरे दाहिनी हाथ में सूरज और बाएं हाथ में चांद रख दे तो भी मैं सच्चाई के एलान से न रूकूंगा।

एक बार दोपहर को एक लड़ाई में आप (सल्ल०) एक पेड़ के नीचे अकेले आराम कर रहे थे एक अ़रब आया और तलवार खींच कर बोला–बता ऐ मुहम्मद ! अब तुझको मुझसे कौन बचा सकता है ? इत्मिमान व सुकून से भरी हुई आवाज़ में जवाब दिया – "अल्लाह! " वह यह सुनकर कांप गया और तलवार म्यान में कर ली।

लड़ाइयों के लूट का मूल और खैबर आदि के पैदावार को सनुकर यह न समझे कि अब इस्लाम की गरीबी का जमाना खत्म हो गया है और रसूल (स०) बड़े इत्मिनान व आराम से जिन्दगी बसर करने लगे।

नबी (स०) की बीवियों के यहां जो कुछ भी आता वह दूसरे गरीबों को दे दिया जाता और खुद आप सल्ल० और आप के घर वालों की ज़िन्दगियां उसी तंगी और गरीबी से कट रही थीं। आप (स०) कहा करते थे। आदम के बेटे के शर्म के लाइक जिस्म का हिस्सा छुपाने को एक टुकड़ा और पेट भरने को सूखी रोटी और पानी काफी (पर्याप्त) है हज़रत आइशा (रज़ि०) कहती हैं आपका कपड़ा कभी तह करके रखा नहीं जाता था यानी एक ही जोड़ा होता था दूसरा नहीं जो तह करके रखा जाता।

हज़रत (स०) के घरों में ज्यादातर खाना नहीं पकता था और कई कई दिनों तक रात में खाना नहीं मिलता था। दो–दो महीने लगातार घरों में चूल्हा जलने की बारी न आती थी, खजूरों पर गुज़र बसर होता था कभी कोई पड़ोसी बकरी का दूध भेज देता तो वही पी लेते। हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं कि आप (स०) कभी (मदीना में) पेट भर कर खाना नहीं खाया।

एक बार की बात है एक भूखा आप (सल्ल०) के पास आया। आप सल्ल० ने किसी बीवी के यहां कहला भेजा, जवाब आया घर में पानी के सिवा कुछ नहीं, आप (सल्ल०) ने दूसरे घर में आदमी भेजा, इस तरह आठ – नौ बीवियों के घर से पानी के सिवा खाने की कोई चीज़ न निकली।

एक दिन आप (स०) भूख में ठीक दोपहर को घर से निकले, रास्ते में हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर (रज़ि०) मिले। यह दोनों भी भूखे थे। आप (स०) उनको लेकर अबू अय्यूब अन्सारी के घर आए। उनको खबर हुई तो दौड़े हुए आए और बाग से जाकर खजूर का एक गुच्छा तोड़ लाए और सामने रख दिया। इसके बाद एक बकरी

जब्ह की और खाना तैयार किया और सामने लाकर रखा। हज़रत (स०) ने एक रोटी पर थोड़ा गोश्त रख कर कहा कि यह फ़ातिमा के यहां भिजवा दो उसको कई दिन से खाना नहीं मिला।

हज़रत (स०) की जब मौत हुई तो हालत यह थी कि आप की जरह (कवच), तीन सेर जौ पर एक यहूदी के पास गिरवी थी। जिन कपड़ों में आपकी मौत हुई उनकें ऊपर से पेवन्द लगे हुए थे।

हज़रत फ़ातिमा से आपको बड़ी मुहब्बत थी लेकिन यह मुहब्बत सोने चांदी के जेवरों और ईंट चूने के मकानों में कभी दिखाई नहीं दी। हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) अपने हाथों से काम करतीं, मश्क भर कर पानी लातीं, आटा गूंधती।

आप (स०) कभी किसी का एहसान न लेते। हज़रत अबूबक्र ने हिजरत के वक्त सवारी के लिए ऊंट दिया आप सल्ल० ने उसकी क़ीमत देदी। जिन लोगों से तोहफ़ा लेते थे उसको उसका बदला ज़रूर देते थे। एक बार एक आदमी ने एक ऊंटनी दी आप सल्ल० ने उसका बदला लिया तो उसको बुरा मालूम हुआ। आप सल्ल० ने मिम्बर पर खड़े होकर कहा तुम लोग मुझे तोहफा देते हो और मुझसे जहां तक हो सकता है उसका बदला देता हूं तो नाराज़ होते हो।

आप (स०) लेन देन में बहुत साफ थे कहा करते थे कि सबसे बेहतर वह लोग हैं जो क़र्ज़ को अच्छे से चुकाते हैं। एक बार आप सल्ल० ने किसी से ऊंट कर्ज़ लिया जब वापस किया तो उससे अच्छा वापस किया। एक बार किसी से एक प्याला उधार लिया और वह ग़ायब हो गया तो आप (स०) ने उसकी क़ीमत चुकता की।

जो वादा करते पूरा करते कभी वादा ख़िलाफ़ी न की। हुदैबिया के समझौते में एक शर्त यह भी थी कि मक्का से जो मुसलमान होकर मदीना जाएगा वह मक्का वालों के मांगने पर वापस कर दिया जाएगा। इसी तरह एक सहाबी अबूजन्दल (रज़ि०) मक्का से भाग कर आए और मदद चाही सभी मुसलमान यह देख कर तड़प उठे लेकिन आप (स०) ने साफ कह दिया कि अबू जन्दल सब्र करो, मैं वादा के खिलाफ न करूंगा, अल्लाह तुम्हारे लिए कोई रास्ता निकालेगा ।

आप (स०) की सच्चाई को दुश्मन भी मानते थे अबू जहल कहा करता था मुहम्मद मैं तुमको झूठा नहीं कहता लेकिन जो कुछ तुम कहते हो उसको सही नहीं समझता।

आप (सल्ल०) शर्मीले बहुत थे, कभी किसी को बुरी बात न कही, बाजारों में जाते तो चुप चाप चले जाते भरी महफिल (सभा) में कोई बात अच्छी न लगती तो ज़बान से कुछ न कहते लेकिन चेहरे से मालूम हो जाता। आप सल्ल० की तबियत में बहुत मजबूती थी। जिस चीज़ का पक्का इदारा हो जाता फिर उसको पूरा ही करते। उहद की लड़ाई में मुसलमानों से सलाह मश्विरा किया। सबने हमले की राय दी लेकिन जब हथियार सजा कर बाहर निकले तो रूक जाने को कहा। आप सल्ल० ने कहा अल्लाह का रसूल जिरह (कवच) पहनकर उतार नहीं सकता।

तबियत में बहुत सादापन था। खाने पीने, ओढ़ने, उठने बैठने किसी चीज़ में संकोच न था, जो सामने आ जाता वह खा लेते, पहनने के लिए जो मोटा–झोटा मिल जाता उसको पहन लेते, ज़मीन पर, चटाई पर फर्श पर जहां जगह मिल जाती बैठ जाते । अल्लाह की नेअ़मतों से सही से फ़ाइदा उठाने की इजाज़त आपने ज़रूर दी, लेकिन न पेट भरना और मज़े उड़ाना अपने लिए, पसन्द किया और न मुसलमानों के लिए एक बार हज़रत आइशा रज़ि० के पास गए देखा कि छत में पर्दा लगा है, उसी वक्त फाड़ दिया और कहा कि अल्लाह ने हमको दौलत इस लिए नहीं दी कि ईंट पत्थर को कपड़े पहनाएं जाएं। एक बार हजरत फ़ातिमा के गले में सोने का हार देखा तो कहा – तुम को बुरा न मालूम होगा जब लोग कहेंगे कि रसूल की बेटी के गले में आग का हार है।

दुनिया को न चाहने के साथ आप को तबियत का रूखा पन पसन्द न था। कभी–कभी दिलचस्पी की बातें करते। एक बार एक बुढ़िया आप के पास आई और जन्नत की दुआ के लिए कहा – आप (स०) ने जवाब दिया – बूढ़ियां जन्नत में न जाएंगी। उनको बहुत दुख हुआ रोती हुई वापस चलीं। आप सल्ल० ने लोगों से कहा उनसे कह दो बुढ़िया जन्नत न जाएगी मगर जवान होकर जाएँगी। कुछ लोग नमाज़ रोज़ा में दिन रात लगे रहते थे इस वजह से बीवी बच्चे बल्कि अपने जिस्म का हक़ न पूरा होने का डर था इस लिए हुजूर सल्ल० हमेशा दिन में रोजा रखने और रात भर इबादत करने का अहद (प्रतिज्ञा) किया है। आप (सल्ल०) ने उनको कहला भेजा कि क्या यह ख़बर सही है। उन्होंने कहा हां आप

सल्ल० ने कहा – तुम पर तुम्हारे शरीर का हक़ है आंख का हक़ है बीवी का हक़ है।

आप (स०) बहुत सावधानी बरत्ते किसी के घर जाते तो दरवाज़े के दाएं या बाएं खड़े होते और उससे इजाजत मांगते। सामने इस लिए न खड़े होते कि कहीं नज़र न अन्दर पड़ जाए।

सफ़ाई सुथराई का बहुत ध्यान रखते। एक आदमी को गन्दे कपड़े पहने देखा तो कहा इससे इतना नहीं होता कि कपड़ा धो लिया करे। बात ठहर–ठहर कर करते। जो बात नापसन्द होती उसको टाल जाते, ज्यादातर चुप रहते, बेज़रूरत बात न करते, हंसी आती तो मुस्कुरा देते।

आप सल्ल० हर पल अल्लाह की याद में लगे रहते। उठते–बैठते, चलते–फिरते हर तक उसकी खुशी ढूंढते, और हर हाल में दिल व ज़बान से उसकी याद करते रहते। सहाबा की महफ़िल (सभाओं) में और बीवियों की कोठरियों में होते, और अचानक अज़ान की आवाज़ आती, आप (सल्ल०) उठ खड़े होते। रात का बड़ा हिस्सा अल्लाह की याद में बसर होता, कभी पूरी–पूरी रात नमाज में खड़े रहते और बड़ी–बड़ी सूरतें पढ़ते, आप (सल्ल०) अल्लाह के बड़े प्यारे रसूल थे फिर भी कहा करते मुझको कुछ नहीं मालूम मेरे ऊपर क्या गुज़रेगी ? एक बार बड़े असरदार शब्दों में कहा ऐ कुरैशियो । आप अपनी खबर लो, मैं तुम को खुदा से नहीं बचा सकता, ऐ अब्दे मुनाफ ! मैं तुम को खुदा से नहीं बचा सकता, ऐ अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब ! मैं तुमको भी खुदा से नहीं बचा सकता, ऐ साफ़िया रसूल (स०) की बेटी मैं तुमको भी खुदा से नहीं बचा सकता, ऐ मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा मैं तुमको भी खुदा से नहीं बचा सकता।

एक सहाबी (रज़ि०) कहते हैं – कि मैं एक बार रसूल (स०) के पास आया देखा तो आप (स०) नमाज़ पढ़ रहे हैं आंखों से आसूं बह रहे हैं, रोते–रोते हिचकियां बंध गई थीं मालूम हो रहा था कि चक्की चल रही है या हांडी उबल रही है। एक बार आप (स०) एक जनाजा में शामिल थे कब्र खोदी जा रही थी आप (स०) कब्र के किनारे बैठ गए, और यह देखकर रोने लगे यहां तक कि जमीन भीग गई फिर आप (स०) ने कहा भाइयो ! इस दिन के लिए सामान कर रखो।

ऊपर आप (स०) के हालात व आप (स०) के अच्छे अख़्लाक व व्यवहार और आदात को पढ़ चुके। अब कोशिश यह होनी चाहिए कि हुजूर सल्ल० की बताई हुई बातों पर हम चलें।

लौंग से लाभ

लौंग एक घरेलू विश्वसनीय डॉक्टर है। मानव–जीवन में इसका विशेष योग है। लौंग के गुणों में कफ–पित्त में रक्त दोषों में सर्दी बुखार नजले में वात नाशक है। हृदय के लिए शक्तिदायक है। लौंग का तेल मसूढ़ों की सूजन, वमन नाशक होता है। लौंग पाचन क्रिया पर सीधा प्रभाव कर उसे सुधारती है। लौंग को शीतऋतु में मुंह में डालकर रस चूसने से दांत के कृमि नष्ट होते हैं। आमाशय विकारों को नष्ट करती है श्वास किया को शक्ति देती है। चेतना शक्ति, याददाश्त को निखारती है। रक्त का शरीर में भ्रमण सुचारू रूप से करती है। त्रिदोष और सन्निपात में घी के साथ लौंग दी जाती है। श्वास किया को शक्ति देती है। मूत्र पिंड मार्ग को निर्मल बनाती है। बार–बार मूत्र जाने के कारण कमजोर शरीर में हो जाती है उसे कन्ट्रोल करती है लौंग। शरीर से विजातीय द्रव्य पदार्थों को मलमूत्र द्वारा आसानी से बाहर निकालती है। लौंग का तेल गठिया दर्द या सूजन पर लगाने व हल्के हल्के मालिश करने से लाभ मिलता है।

लौंग डाल कर पानी उबाल कर पिलाने से हर प्रकार का नजला बुखार कन्ट्रोल होता है।

लौंग शीत ऋतु में मुंह में डाल कर रस चूसने से शीत ऋतु का असर, सर्दी लगने से बचाव होता है।

गले में ख़राश, आवाज़ बैठने पर लौंग मुंह में रख कर उनका रस चूसा करें। एक दम राहत होगी।

मासिक धर्म के दिनों में लौंग प्रतिदिन चबा–चबा कर लें।

●●●

0522-508982
Mohd. Miyan
Jwellers
एक भरोसेमन्द सोने चान्दी के ज़ेवरात की दुकान
1-2 Kapoor Market, Victoria Street, Lucknow-226003

सुन्दर रहन सहन

(बच्चियों की तालीम व तर्बियत)

(ग्यारहवीं क़िस्त)

ख़ैरुन्निसा 'बेहतर'

मेहमानों की खातिर मुदारात
(आतिथ्य सत्कार)

मेहमान का आना खुशनसीबी है — जब मेहमान तुम्हारे घर आये तो बहुत खुश होना चाहिए क्यों कि खुशनसीब के यहां ही मेहमान आते हैं। उन पर खाने की तंगी न करो। वह तुम्हारे हिस्से से नही खायेंगे। तुम्हारे खाने में कमी नहीं आयेगी खुदा तुम्हें और जियादा देगा। अपने से बेहतर खिलाओ। कभी दिल तंग न हो। उनके लिए अच्छी जगह जहां आराम से रह सकें उन्हें दिखा कर वहां चारपाई बिस्तर ठीक से लगा दो। उनके चाय और नाश्ता का ध्यान रखो कि समय पर पहुंचे । उनकी आते जाते खबर रखो कि कोई और ज़रूरत तो नहीं है। जब वह जाने लगें तो कुछ तोहफ़ा (भेंट) भी साथ कर दो। और अगर तुम्हारे यहां ज़ियादा दिन ठहरना चाहें तो उनके साथ वही मामला रखो जो दो दिन के मेहमान के साथ होता है। जियादा रहना समझकर बेपरवाह न हो जाओ बल्कि और ज़ियादा खातिर करो। उनकी कुल ज़रूरतों को अपनी जरूरतें समझो। हर समय उनसे खुश हो कर बोलो। अगर वह अपनी व्यवस्था अलग करें तो उनके कार्यों में सलाह देती रहो। अगर वह नौकर नहीं रख सकतीं तो तुम अपनी मामाओं पर उनकी सेवा के लिए बल देती रहो। अगर वह काम करने से आंख चुरायें तो तुम स्वयं करो और उन्हीं के सामने खूब सख्त सुस्त कहो। अगर वह स्वयं अपने हाथों से पकाती हों तो मामाओं के सामने बैठकर पकाना मंजूर न करो कि उन्हें वह ज़लील (हेय) समझें बल्कि अपने चूल्हे पर रखवा दो और अपनी हांडी उतार लो, फिर आगे मामायें उनकी इज़्ज़त करेंगी, इस समय के नौकरों का दस्तूर है कि अपने घर वालों के अलावा दूसरों को नहीं देख सकते।

खातिर मुदारात (सत्कार) : हर समय उनकी मदद करो। खाना अपने दस्तरख्वान पर खिलाओ । अगर वह किसी कारण उस को पसन्द न करें तो जो नई चीज़ तुम्हारे यहां पके बराबर देती रहो और इसकी किसी को खबर न हो। उनकी किसी बात पर एतराज़ न करो अगरचे तुम्हारे खिलाफ़ हो। अगर कुछ कर्ज़ दो तो तक़ाज़ा न करो। स्वयं दे दें तो लेलो कोई बात ऐसी न कहो कि उनको अप्रिय हो कि वह यह समझें कि हमारा रहना उन्हें अखर रहा है। कोई बात अगर कहो तो नौकरों के सामने न कहो वह दिल के छोटे होते हैं। मौका बे मौका कह डालते हैं।

मामाओं से बर्ताव —

तुम्हें मालूम है कि मामायें बड़ी मुश्किल से मिलती हैं। अभी तो खैर आगे चल कर और कठिनाई से मिलेंगी। अगर मिलें भी तो रोज के यही झगड़े रहेंगे। लड़ झगड़ कर चल देंगी। इस लिए दिल जलाने से हाथ का जलाना बेहतर है। तुम स्वयं ही काम करने की आदत डालो या मामायें रखो तो उनको मुंह न लगाओ। वरनः मुक़ाबला करने लगेंगी। उनकादिल हाथ में ले लो और नर्मी से काम लो। कुछ कुछ तुमभी मदद देती रहो। ज़रूरत के समय बेकार काम न लो। जब समय पर काम न होगा तुम बुरा कहोगी तो उल्टे तुम्हीं को वह थप्पड़ लगायेंगी। फिर तुम्हारी क्या रह जायेगी। हर समय ऐब न निकालो। अगर तुम चाहती हो कि काम भी समय पर होता रहे और कोई चीज़ भी नष्ट न हो तो निगरानी के लिए मौके पर बैठ जाओ। कुछ हांडी भी देखती जाओ मगर यह ज़ाहिर न हो कि तुम इस ग़रज़ से बैठी हो कि यह खा न लें, बल्कि यह ख्याल हो कि तुम हाथ बटाने के लिए बैठी हो। नमक आदि तुम भी चखती रहो कि शायद तुम्हारे मर्दों के नज़दीक ठीक न हो। अपने मर्दों की हांडी तुम स्वयं पकाओ। पीछे भी ताकीद कर चुकी हूं। जब तुम देखभाल करती रहोगी तो उसके चले जाने पर भी तुम को तकलीफ़ न होगी। तुम बे झिझक कर सकती हो। मामाओं को हर माह तनख़्वाह देती रहो और जिन्स भी तुलवाती रहो ग़रज़ उनका भार सर पर न रखो। फ़र्ज़ करो कि अगर वह एक दम से खड़ी हो गईं कि बीवी हम न रहेंगे तो उस समय तुम्हें सब एकमुश्त देना पड़ेगा। अगर समय पर न दे सकीं तो सर नीचा होगा और

यह जगह जगह कहती फिरेंगी इस समय की मामाओं का आम कायदा है कि यह कहकर डराती हैं कि हमारा दे दो हम चले जायें। यह समझ कर कि इस समय यह दे सकती नहीं, अगर दे दो तो फौरन ठहर जायेंगी। इस का अनुभव मैं कर चुकी हूं। मामला साफ रखो कि समय पर तुम्हें तकलीफ न हो।

स्वयं काम करने की आदत डालो –

कुछ बीबियां कहती हैं कि जब खुदा दे तो ज़हमत क्यों उठायें। मैं पूछती हूं कि अगर मामा न मिले और तुम्हें भी पकाना न आये तो क्या करोगी? लाचार (विवश) होकर करना पड़ेगा। अगर पकाया भी और इच्छानुसार न हुआ तो उस समय लज्जित होगी। तुम तो खा सकती हो मगर मर्द क्यों सहन कर सकेंगे। फिर अलावा नदामत के और क्या होगा। इस लिए हर काम की आदत डालना चाहिए किसी समय बेकार न रहो। हर तरह से मर्दों को आराम पहुंचाती रहो। अक्सर बेकार रहने वालों को देखा है सात आठ बजे तक सोते रहते हैं अगर कोई करने वाला हुआ तो खैर वरनः अक्सर मर्द स्वयं कर लेते हैं। किस कदर शर्म की बात है बीबी साहिबा लेटी या बैठी हैं और मर्द परेशान फिरते हैं। ऐ बच्चियो ऐसी नालायक तबीअ़त न रखो। अपना घर समझो। तुम्हारे बड़े, तुम्हारा हाथ बटाने वाले कब तक तुम्हरा साथ देंगे। वह तुम्हें आराम पहुंचा चुके अब तुम उन्हें आराम पहुचाओ। बहू बेटियां इसी दिन के लिए होती हैं। तुम न करोगी तो क्या कोई दूसरा करने आयेगा? अब तुम अपना घर देखो। मामाओं की मदद करने से कोई नौकरानी न हो जाओगी। तुम्हारी वही इज्जत रहेगी। अगर तुम्हारी आमदनी में इतनी गुंजाइश है कि तुम मामा रख सकती हो तो ज़रूर रखो, वरनः यह इमारत चल नहीं सकती कि मामा ज़रूर हो। महीनावार तनख्वाह दे सको या न दे सको। सुघड़ बीबियां स्वयं करती हैं और मामा रख कर परेशान होना नहीं चाहतीं यह याद रहे कि मामाओं से आराम भी है और तकलीफ़ भी है। इसी कारण वह स्वयं करना पसन्द करती हैं। अगर तुम स्वयं कपड़े सिलोगी लड़कों को तुम संभालोगी, खाना तुम पकाओगी तो तुम्हारा कितना पैसा बचेगा और कितने काम निकलेंगे और जो खूबियां हासिल होंगी तुम स्वयं समझोगी। मर्द तुम्हें इज़्ज़त की निगाह से देखेंगे। तुम्हें करते देखकर फिर तुम्हारी औलाद भी और घर के जितने लोग हैं वह भी मदद करेंगे। हर काम आसान हो जायेगा। वह भी जो होशियार न होंगे हो जायेंगे। फिर तुम्हें अलग सिखाने की ज़रूरत न रहेगी।

आवश्यक निर्देश –

खाना पकाने की जगह साफ रखो। बर्तन ठीक रखो। मामाओ पर न छोड़ो और न किसी पर । खाना मजेदार हो दोनों समय एक ही चीज़ न पकाओ। नमक पानी ठीक रहे। खाना, बैठने और साने की जगह न खाओ। खाने की जगह अलग हो। खाना एक ही दस्तरख्वान पर खाओ, अगर तन्हा खाने की आदी हो तो सब को खिलाकर खाओ कि शायद कोई चीज कम न पड़े कि शर्मिन्दा होना पड़े। मर्दों के खानेमें कई किस्म की चीजें हों, अचार, चटनी जरूर हो। पान आदि ठीक रखो कि समय पर तकलीफ़ न हो। खाना तुम स्वयं निकालो, मामाओं से न निकलवाओ बहुत असिष्ट है और नुकसान भी। खाना दे दिलाकर जो कुछ देना हो मामाओं को दे दो। बाकी जो बच जाये एहतियात से रख दो, संजो कर रख दो। जब तक खाना तैयार न हो घर से कहीं न जाओ। न किसी काम में लग कर बेफिक्र हो जाओ कि पक्की पकाई हांडी जल जाये या रसा (शोरबा) ज़ियादा हो जाये कि मर्दों के खाने के समय कुछ न हो सके, बदमज़गी से खाना पड़े। घर में जियादा रहो। बे मौक़ा इधर उधर न फिरो। जब बिल्कुल इतमीनान हो तो कोई बात नहीं। जब जिन्स मंगाओ तो दूसरों से भाव मालूम कर लो। उसी हिसाब से तुलवा कर रखो। घी बिना साफ किये इस्तेमाल में न लाओ कि शायद कोई चीज़ हो तो कि कराई मेहनत अकारत हो, और यूं बरकत भी नहीं होती। कत्था और घी बिना साफ किये काम में लाने से बरकत उठ जाती है। और ठीक भी नहीं है। जहां तक हो सके मामाओं पर काम न छोड़ो। स्वयं करो। अगर नुकसान होगा तो तुम्हारा होगा। तुम्हारा दिल दुखेगा। दूसरे का नहीं । अक्सर बीबियां चारपाई पर बैठे बैठे बातें बनाती हैं। घर की खबर नहीं क्या पकता है और क्या नहीं। उल्टे सीधे जो मिल गया खा लिया। न उनको मर्दों की परवाह न अपनी ख़बर। अपनी न हो ना हो। मगर यह तो समझो कि मर्द शादी करते हैं आराम के लिए या तकलीफ उठाने के लिए । जब उन्हें इतना भी आराम न पहुंचा तो क्या फायदा। अगर तुम मेरी इन नसीहतों पर अमल करोगी तो यह देख के तुम्हारी मामायें चोरी सीना जोरी से बचेंगी तुम्हारा दिल में डर रहेगा। तुम्हारी बात को टाल न सकेंगी। (जारी)

प्रस्तुति तथा अनुवाद
मो० हसन अंसारी

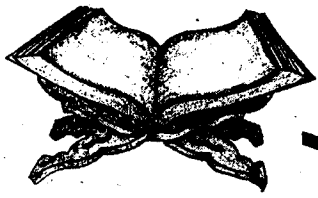

दुआ़

अबू मर्गूब

अल्लाह से मांगने को दुआ़ कहते हैं। दुआ़ करना भी बोलते हैं और दुआ़ मांगना भी। जब कोई किसी को किसी अच्छी बात प्राप्त कर लेने की बात कहता हैं जैसे खुश रहो, स्वस्थ रहो, लम्बे जियो आदि तो इस को दुआ़ देना बोलते है। इस का अर्थ होता है अल्लाह करे खुश रहो, अल्लाह करे स्वस्थ रहो आदि। इसी प्रकार खुदा तुम्हें सफल करे, अल्लाह तुम्हें लम्बी आयु दे आदि भी दुआ़ देना कहलाता है।

इस्लाम में दुआ़ का बड़ा महत्व है परन्तु इसकी ओर से बड़ी ग़फ़लत (अचेतना) है अतः आज इस विषय पर कुछ आवश्यक बातें विश्वास पात्र किताबों से प्रस्तुत की जा रही हैं।

दुआ़ सम्बन्धित बातें ओर दुआ़ मांगने के अच्छे ढंग–

अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं – मुझ से दुआ मांगा करो मैं तुम्हारी दुआ़ स्वीकार (क़बूल) करूंगा। निःसंदेह जो लोग घमण्ड के कारण मेरी उपासना से मुंह मोड़ते हैं वह अवश्य जहन्नम में अपमानित तथा तिरस्कृत (ज़लील व ख़्वार) हो कर दाख़िल होंगे। (४०:६०)

नबीये करीम (जिन पर हजारों हज़ार दुरूद व सलाम हों) ने फ़रमाया तुम में से जिस शख़्स को दुआ़ मांगने की तौफ़ीक़ मिल गई (अर्थात दुआ़ मांगली) तो यूं समझो जैसे रहमत (ईश कृपा) के द्वार उसपर खुल गये।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : दुआ़ के अतिरिक्त कोई चीज़ तक़दीर (भाग्य) के निर्णय को बदल नहीं सकती और नेकी (उपकार) के अतिरिक्त कोई चीज़ आयु (उम्र) को बढ़ा नहीं सकती।

एक हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला के यहां दुआ से अधिक किसी चीज़ का मूल्य नहीं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जो शख़्स अल्लाह तआ़ला से दुआ़ नहीं करता अल्लाह उससे नाराज़ होते हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के कहने के अनुसार : दुआ़ इबादात की गिरी (मग्ज़) है। मोमिन का हथियार है। दीन का स्तम्भ (सुतून) है तथा आसमान और ज़मीन का नूर है।

दुआ़ के आदाब अर्थात अच्छे ढंग –

दुआ मांगते समय अल्लाह तआ़ला में पूर्ण आस्था (मुकम्मल यक़ीन) हो। पूर्ण विश्वास के साथ दुआ़ मांगी जाए कि मिलेगा, संदेह, शंका न हो। यह न कहे कि तू चाहे तो मेरा दुख दूर कर दे बल्कि कहे कि ऐ मेरे मालिक मेरा दुख दूर करदे, मेरी चिन्ता दूर कर दे। दुआ़ करने वाले को हराम (अवैध) खाने पीने, हराम वस्त्र तथा हराम कमाईसे बचना आवश्यक है। इस के बिना दुआ़ कुबूल न होगी। गुनाह की दुआ़, बुरी बात की दुआ़, रिश्तेदारों में फूट डालने की दुआ़ न की जाए। दुआ़ में अधैर्यता (बेसब्री) तथा शीघ्रता (जल्द बाज़ी) न की जाए। दुआ़ के आरंभ तथा अन्त (अव्वल आख़िर) में अल्लाह की प्रशंसा (ह़म्द व सना) करना चाहिए तथा दुरूद व सलाम पढ़ा जाना चाहिए।

दुआ़ हर ह़ाल में मांगी जा सकती है। परन्तु यदि वुज़ू करके किब्ले की ओर मुंह कर के दोनों घुटने तोड़ कर (जैसे नमाज़ में बैठते हैं) दोनों हाथ उठाकर कि दोनों अलग अलग हों तो यह तरीका बहुत अच्छा तरीक़ा है। दुआ़ ख़ूब लग के और गिड़गिड़ा के मांगना चाहिएं जैसे भूखा फ़क़ीर किसी से ख़ाना मांगे। एक एक बात कई कई बार मांगना चाहिए दुआ़ में अपने लिए अपने मां बाप के लिए आल औलाद, बहन भाई और तमाम मुसलमानों को शामिल करके उनसब के लिए दुआ, मांगना चाहिए। दुआ़ के आख़िर में आमीन भी कहें अगर कोई एक शख़्स मजमे की ओर से दुआ मांग रहा हो तो सुनने वाले हर दुआ पर आमीन कहें। दुआ़ के ख़त्म पर दोनों हाथ मुंह पर फेर लेना चाहिए।

कुर्आन और ह़दीस की दुआएं अ़रबी ज़बान में मांगी जाएं तो ज़ियादा अच्छा है अगर उनका अर्थ मन में बिठा लें तो बहुत ही अच्छा हो लेकिन अपनी ज़बान में भी दुआ़ ज़रूर मांगें। यह दुआ़ बहुत ही अच्छी है – रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह़सनतंव्व फ़िल आख़िरति ह़सनतंव्वक़िना अ़ज़ाबन्नार। ऐ अल्लाह हम को दुन्या में भलाई और आखिरत में भलाई दे और जहन्नम से बचा ले।

महिलाओं के विरुद्ध जिन्सी जराएम (Sexual Crimes) की रोक थाम कैसे हो ?

पिछले दिनों राजधानी दिल्ली में महिलाओं की बेइज्ज़ती अपमान की दो ऐसी संगीन घटनाएं घटीं कि पूरे राष्ट्रीय प्रेस में हाहाकार मच गई, उनमें से एक घटना में राष्ट्रपति के संरक्षक दल के चार फौजी मुलव्विस (लिप्त) थे, जबकि दुसरी घटना स्विटजरलैण्ड की दूत कर्मी महिला से संबंधित है जो एक फ़िल्मी फेस्टिवल में शिरकत करके लौट रही थीं इन घटनाओं के विरुद्ध नियमानुसार निन्दापूर्ण वक्तव्य आने लगे, और दिखावे की मानव अधिकार संस्थाएं मैदान में आ गईं। किसी ने सरकार को उत्तरदायी ठहराया। तो किसी ने पुलिस पर फब्तियां कसीं, किसी ने प्रबंधिक व्यवस्था की अज्ञानता का रोना रोया, सारांश यह कि जितने मुंह उतनी बातें पत्रकारों ने पन्ने के पन्ने स्याह कर डाले, जी खोल कर कलम के घोड़े दौड़ाए, मगर यह सब ज़बानी जमा खर्च और क़लम का खेल था, दुखित बात यह है कि दिल्ली राजधानी के यह ज्ञानी और बुद्धिमान सूरमा महिला की बेइज्जती (अपमान) और उसके कलंकित होने पर मातम कर रहे थे परन्तु उन बुद्धिमानों में से कोई इस पर तैयार नहीं था कि इस प्रकार के जराएम के वास्तविक असबाब और कारणों को उजागर करे, बल्कि जानबूझ कर और मुजरिमाना तौर पर लापरवाही बरत रहा था।

आज सबसे पहले इस बात पर ग़ौर करने की ज़रूरत है कि हमारे देश में ऐसे लज्ज़ा जनक और घिनौने जराएम (अपराध) के लिए माहौल अनुकूल है या नहीं? आज हर आंख वाला आदमी भलीभांति देख रहा है कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय माहौल (वातावरण) इस प्रकार के अपराध के लिए इस समय इतना अनुकूल है कि यदि ऐसी घटनाएं न घटे तो आश्चर्य है, वर्तमान वातावरण इन लज्जा जनक घटनाओं के लिए सहायक है। जिस समाज में महिलाएं आकर्षित और दिल लुभाने वाले फैशन के साथ खुले आम बेपरदा बल्कि नीम बरहना (अर्धनग्न) शरीर के साथ फिरती हों, जहां कला और संस्कृति के नाम पर बेहयाई और बदकारी (अश्लील और दुष्ट कर्म) की पूर्णरूप से शिक्षा दी जाती हो और उसके ट्रेनिंग (प्रशिक्षण) के लिए नियमानुसार संस्थाएं स्थापित हों, जिस जगह सिनेमा के परदों पर ब्लूफिल्म में बिला रोक टोक दिखाई जाती हों, जहां की सभ्यता में नाच गाने की लअ़नत (फटकार, धिक्कार) रची बसी हो, जिस देश के टी०वी० चैनलों पर अश्लील प्रोग्राम दिन रात दिखाए जाते हों और जहां कदम कदम पर अश्लील साहित्य कम से कम दामों पर उपलब्ध हों तो ऐसी जगह यदि महिलाओं की इज़्ज़त न लूटी जाए तो और क्या होगा? क्या इस माहौल में परवान चढ़ने वाले नौजवानों से पाकदामनी (संयमशील) की उम्मीद रख सकते हैं ? वह व्यक्ति मूर्ख और बुद्धि से वंचित होगा जो इस माहौल में लज्जा, इफ़्फ़त (संयम) इस्मत (सतीत्व) की रक्षा की बात सोचे, आज वह लोग जो अपने को बुद्धिमान समझ रहे हैं और वर्तमान संगीन घटनाओं पर क़लम के घोड़े दौड़ा रहे हैं उनको सबसे पहले इस बात का परीक्षण करना चाहिए और जांच परताल करनी चाहिए कि वह क्या कारण हैं जो इन दृष्टकर्मों के करने पर इन्सान को उत्तेजित करते हैं, और वह कारण इन चरित्रहीन कामों के लिए प्रेरक बनते हैं।

यदि वास्तव में बुराई पर रोक लगानी है और बन्ध बांधना है तो बुराई की जड़ को समाप्त करना आवश्यक है जड़ रहे और बुराई अपनी जगह बनाती रहे तो केवल रोकटोक करने से वह बुराई हरगिज़ नहीं बन्द हो सकती बुराई पर सज़ा का कानून भी उस समय तक प्रभावित नहीं हो सकता जब तक कि पहले उस बुराई को मिटाने के लिए माहौल (समाज) को पाबन्द न बना लिया जाए आज दुन्या में जो बुराइयां फैल रही हैं और कानूनी सजाएं बेअसर (अप्रभावित) होती जा रही हैं उसकी वास्तविक वजह यही है कि बुराइयों की जड़ खत्म किये बिना केवल कानून का सहारा लेने की नाकाम (असफल) कोशिशें की जा रही हैं, यह इस बात की दलील है कि बुराइयों को ख़त्म करने का दम भरने वाले लोग, बुराई को ख़त्म करने में निःस्वार्थ नहीं बल्कि स्वयं उनका जीवन बुराइयों में लतपत है, इसी लिए वह बुराई को उचित ढंग से मिटाने से कतराते हैं।

इसके विपरीत इस्लाम ने अपने दीन फ़ितरत (प्राकृतिक धर्म) होने का सबूत देते हुए इस विषय में जो जीवन पद्धति और जीवन व्यवस्था प्रस्तुत किया है वह प्राकृतिक नियमों के बिल्कुल अनुकूल है, इस्लाम केवल ज़बानी जमा खर्च और शोर मचाने पर यक़ीन (विश्वास) नहीं रखता बल्कि वह मानव समाज की कमज़ोरियों पर नज़र रखते हुए पहले नैतिकशिक्षा द्वारा अम्न अमान (शांति और सुरक्षा) के नियमों का पाबन्द बनाने पर ज़ोर (बल) देता है, जराएम (अपराध) पर रोक टोक के सिलसिले में इस्लाम की मूल शिक्षा यह है –

आप फ़रमा दीजिए – मेरे रब ने हराम किया है सिर्फ़ (केवल) बेहयाई (अश्लीलता) की बातों को जो उनमें खुली हुई और जो छुपी हुई हैं और गुनाह को और नाहक़ की ज़्यादती (बेजा अत्याचार) को"

फिर बेहयाई (अश्लीलता) पर रोक लगाने के लिए उसने यह शिक्षा दी है कि :

अजनबी (अपरिचित) मर्द और औरत अपनी निगाहें नीची रखें (अल–नूर : ३०–३१)

औरतें बिला ज़रूरत घर से बाहर न निकलें और जब निकलना हो तो पर्दे के साथ निकलें –ज़मान–ए–जाहिलियत (इस्लाम से पहले वाला काल) की औरतों की तरह बेहयाई और बेग़ैरती के साथ न निकलें। (अल–अ़हज़ाब : ३३)

औरतें अजनबी (अपरिचित) मर्दों से परदा करे।

कोई औरत किसी अजनबी के साथ तनहाई (एकान्त) में इकट्टा न हो। (मिश्कात शरीफ़ २/२६७)

कोई औरत अपनी ज़ीनत की जगहें (शरीर के वह भाग जिन पर बनाओ सिंगार हो) अजनबियों को न दिखाएं। (अल–नूर:३१)

कोई औरत किसी अजनबी मर्द से नर्मी से बातचीत तक न करे। (अल–अहज़ाब : ३२)

निकाह के योग्य होते ही उचित रिश्ता मिलने पर लड़के लड़कियों का जल्द से जल्द निकाह कर दिया जाए। (मिश्कात शरीफ़ २/२६८)

और निकाह के अमल को आसान से आसान बनाया जाए, उसे अनावश्यक परमपराओं और दिखावटी कामों से कठिन न बनाया जाए। (मिश्कात शरीफ़ २/२६८)

इस्लाम कुर्आन और हदीस की उपर्युक्त शिक्षा पर सख़्ती से कार्यान्वित होने पर जोर देता है और इस्लामी हुकूमत को उत्तरदायी बनाता है कि पूर्ण शक्ति के साथ समाज को उन नियमों का पालन कराए। कोई मर्द या औरत उसका विरोध करे तो उसको सज़ा दी जाए। अगर बात हद (सीमा) से आगे बढ़ जाए और खुदा न खुवास्ता खुली हुई बेहयाई (अश्लीलता) अर्थात ज़िना (हरामकारी) में पड़ जाए और उसका शरई सबूत भी हो जाए तो अब इस्लामी हुकूमत के लिए अनिवार्य है कि वह उन मुजरिमों पर अल्लाह की नियुक्त की गई सज़ा जारी करे और वह सजा यह है कि अगर मुजरिम (अपराधी) कुंवारा है तो सौ कोड़े लगाए जाएं और अगर वह शादी शुदा है तो पत्थरों से आम जनता के सामने मार मार कर उसे हलाक कर दिया जाए, जिसे शरीअत की परिभाषा में रज्म कहते हैं। और इस तरह की सज़ाओं ("हुदूद"–धार्मिक दण्ड) में रूरिआयत (छूट) नहीं, अर्थात किसी हाकिम (पदाधिकारी) को यह अधिकार नहीं कि वह रहम (दया) खाकर किसी मुजरिम की सजा मआफ़ कर दे, बल्कि जब जुर्म साबित हो जाएगा तो मुजरिम लाख तोबा या मिन्नत समाजत करे। "इरशाद खुदावन्दी (खुदा का आदेश) है –बदकार औरत और मर्द, सो, मारो हर एक को दोनों में से सौ–सौ दुर्रे (कोड़े)और न आवे तुमको उन पर तरस, अल्लाह के हुक्म चलाने में, अगर तुम यक़ीन रखते हो अल्लाह पर, पिछले दिन पर, और देखें उनका मारना कुछ लोग मुसलमान।"

ज़ाहिर है कि इतनी सख़्त पाबन्दियों और इबरतनाक सज़ा (जिससे नसीहत की जाए) के होते हुए बेहयाई के पनपने का इम्कान (संभव) बहुत ही मामूली दर्ज में रह जाता है, इसी तरह का मआमला (विषय) इस्लाम की नियुक्त की हुई दूसरी सज़ाओं में भी है, डकैती, चोरी, शराब नोशी, और बदकारी की तुहमत (आरोप) पर शरीअ़त ने ऐसी सज़ाएं (दण्ड) नियुक्त कीं जो क्षमायोग्य नहीं, यह सज़ाएं जराएम (अपराध) की जड़ों को काटने में अति प्रभावित हैं। और दुन्या की तारीख इस बात पर गवाह है कि जब और जहां यह सिद्धान्तिक और स्वाभाविक कानून अमल में लाए गए वह इलाका और स्थान जन्नत समान हो गया है, वहां शान्ति और सन्तोष के ऐसे दृष्टि देखने में आए कि देखने वालों ने आश्चर्य से दांतों तले उंगलिया दबा लीं। लोग कहा करते थे कि इस्लामी व्यवस्था की बातें तो पूर्व काल के साथ विशेष थीं और अब यह बातें पुराने जमाने (प्राचीन काल) का क़िस्सा कहानी है लेकिन कुछ देशों में इस्लामी कानून के लागू करने से जो सफलता मिली उसने तमाम शंका और सन्देह को समाप्त कर दिया।

इस्लामी व्यवस्था ही मानवता

को जराएम (अपराध) से नजात दिला सकती है, इसके अतिरिक्त कोई दूसरी व्यवस्था न सफल हुई और न सफल हो सकेगी। जो देश अपने आप को शान्ति, सुरक्षा, सभ्यता और मानवता का आदर्श मानते हैं वह देश आज अति दुष्ट, और लज्जा जनक जराएम (अपराध) के महान अड्डे बन चुके हैं, यूरोप में जहां हर प्रकार की जिन्सी तस्कीन (Sexual Consolation) की सुहूलतें (सुगमता) जनसाधारण जगहों पर मौजूद हैं। वहां हर दिन खुले आम जबरी इस्मतदरी (ब्लात्कार) और महिलाओं के अपमान की घटनाएं होती हैं। किसी ने सोचा कि आखिर ऐसा क्यों हो रहा है ?

ज्ञात हो कि इस्मतदरी (ब्लात्कारी) पर पाबन्दी उसी समय लग सकेगी जबकि हर अजनबी (अपरचित) मर्द और औरत के मेल जोल पर पाबन्दी लगे और उसमें दोस्त और ग़ैर दोस्त का कोई अन्तर न रखा जाए।

इस्लाम और केवल इस्लाम ही मानवता को इन हवलनाक जराएम (भयंकर अपराध) की "जहन्नम" से नजात दिला सकता है। और औरत तो यदि वास्तविक सम्मान, और प्रतिष्ठा प्राप्त हो सकती है तो केवल उसका एक ही मार्ग है वह यह कि औरत अपने ऊपर इस्लाम की पाबन्दियों को लागू कर ले, वरना वह ज़िल्लत (अपमान) के गढ़े में इसी तरह ढलकती रहेगी, और हवसनाक (लोलुप) मर्द उसकी इज़्ज़त, (सतीत्व) से खिलावाड़ करके उसका बदतरीन दुरूपयोग करते रहेंगे। औरत की सुरक्षा केवल इस्लामिक शिक्षा में है, इसके बिना औरत को कदापि सम्मान का स्थान नहीं प्राप्त हो सकता।

(पृष्ठ ६ का शेष)

इस वसीयत को कुबूल कर लो, औरत पसुली से पैदा की गई है, पसुली में सब टेढ़ा उस का ऊपर का हिस्सा है अगर सीधा करने लगोगे तो तोड़ दोगे, और छोड़ दोगे तो टेढ़ी ही रहेगी, इसलिए उनके साथ हुस्न सुलूक की नसीहत कुबूल करो (बुखारी व मुस्लिम)

अच्छी औरत बड़ी नेमत है –

२२५. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया दुनिया थोड़े दिन काम आने वाली सामने ज़िन्दगी है और उसका सबसे बेहतर सामान नेक औरत। (मुस्लिम)

हर एक के हुकूक़ को अदा करना ज़रूरी है –

२२६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया : अब्दुल्लाह – क्या मुझे नहीं बताया गया, कि तुम दिन को रोजः रखते हो और रात को नवाफिल में मशगूल रहते हो, मैंने अर्ज किया हाँ ऐ अल्लाह के रसूल आप (सल्ल०) ने फ़रमाया ऐसा न करो, कभी रोजः रखो कभी न रखो, रात का कुछ हिस्सा नफ़ल में गुज़ारो फिर सो जाओ तुम्हारे जिस्म का भी तुम पर हक़ है और तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक़ है। (बुखारी)

अच्छाई पर नज़र रखे, और बुराई से दरगुज़र करे –

२२७. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत हैं कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमायाः कि कोई मोमिन किसी मोमिन औरत से नाराज़ न हो, अगर उस की कोई बात नापसंद होगी, तो दूसरी बात पसंद आएगी। (मुस्लिम)

औरत की इज़्ज़त –

२२८. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़मआ (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया कि तुम में का कोई शख्स अपनी बीवी को गुलाम की तरह न पीटे, और फिर वह रात के आखिर हिस्सा में उसके पास जाए। (बुख़ारी)

बीवियों के दर्मियान इन्साफ़ न करने पर सज़ा –

२२६. हजरत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फरमाया जिसकी दो बीवियां हों और वह उन दोनों में इन्साफ़ न करे क़ियामत के दिन इस हाल में आएगा कि उसका एक पहलू लटका हुआ होगा। (तिर्मिज़ी)

इन्साफ़ की पूरी कोशिश ज़रूरी है –

२३०. हज़रत आइशा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) फ़रमाया करते थे ऐ अल्लाह जहां तक मेरे बस में है सब बीवियों के साथ बराबर का बर्ताव करता हूं जो बात मेरे क़ाबू में नहीं तू ही उस पर कादिर है, उस पर मुझे मलामत न फरमा, अर्थात दिल का किसी एक की तरफ ज्यादा मायल होना – (अबूदाऊद, तिर्मिजी)

औरतों के बारे में रसूलुल्लाहि (सल्ल०) की हिदायत –

२३१. हज़रत मुआविया बिन ही दा (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने अर्ज़ किया अल्लाह के नबी हम लोगों की बीवियों का हम पर क्या हक़ है ? आप (सल्ल०) ने फरमाया जब तुम खाओ तो उस को खिलाओ और पहनो तो उसको पहनाओ चेहरा पर न मारो और उसको बुरे शब्द न कहो, उसको घर के अलावा कहीं और न छोड़ो। (अबूदाऊद)

अच्छा व्यवहार घर वालों के साथ ही ज़रूरी है –

२३२. हज़रत अबूहुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया मोमिनो में सबसे ज्यादा कामिल ईमान वाला वह शख्स है जिस के व्यवहार सबसे अच्छे हों, तुम में सब से बेहतर वह शख्स है जो अपनी औरतों के साथ अच्छा व्यवहार करें। (तिर्मिज़ी)

कुर्बानी का बयान

जिस मुसलमान पर ज़कात फ़र्ज़ है उस पर केवल अपनी ओर से कुर्बानी वाजिब है। कुर्बानी हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की यादगार है। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुर्बानी के लिए फ़रमाया : "सुन्नतु अबीकुम् इब्राहीम" (यह तुम्हारे बाप इब्राहीम अ० की सुन्नत है।) पवित्र कुर्आन में हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का उल्लेख विस्तार से है। अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को ८० वर्ष के उपरान्त बुढ़ापे में जो पहली संन्तान दी वह इस्माअ़िल अ़लैहिस्सलाम थे। जब वह कुछ बड़े हुए परन्तु अभी व्यस्क (बालिग़) नहीं हुए थे कि एक रात इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने स्वप्न में देखा कि अपने इकलौते बेटे को खुदा की राह में कुर्बान (ज़ब्ह) कर रहे हैं। चूंकि नबियों के स्वप्न सच्चे होते हैं। अतः उन्होंने इस को इलाही संकेत समझा और बेटे से कहा कि मैंने स्वप्न में देखा है कि मैं तुम को खुदा की राह में अपने हाथों कुर्बान कर रहा हूं। इस विषय में तुम्हारी क्या राय है? हज़रत इस्माअ़ील अ़लैहिस्सलाम यद्यपि अभी छोटे थे परन्तु बड़े समझदार थे। फिर उनको तो नबी होना था आश्चर्यजनक उत्तर दिया, कहा : अब्बा जान आप को जो इलाही आदेश मिला है उसको पूरा कीजिए। इन्शा अल्लाह आप मुझ को धैर्यवान पाएंगे। इसी को किसी उर्दू कवि ने इस प्रकार कहा है :

यह फैजाने नज़र था या
कि मकतब की करामत थी
सिखाये किस ने इस्माअ़ील
को आदाबे फर्जन्दी

दोनों महापुरूषों ने खुदा की मर्ज़ी के आगे सर झुकाने का निर्णय कर लिया। हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अपने प्रिय पुत्र इस्माअ़ील अ़लैहिस्सलाम को कुर्बानी (ज़ब्ह) करने के इरादे से करवट लिटा दिया और छुरी गले पर रख दी। अल्लाह तआला को हज़रत इस्माअ़ील की जान नहीं लेना थी बल्कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की परीक्षा लेना थी जिस में वह पूरे उतरे। अपने स्वप्न को सच कर दिखाया, यही तो देखा था कि प्रिय पुत्र को कुर्बान कर रहे हैं। जब उन्होंने यह कर दिखाय तो अल्लाह ने फ़रमाया तुम ने स्वप्न को सच्चा कर दिखाया। अल्लाह को इस्माअ़ील अ़लैहिस्सलाम को ज़ब्ह होने से बचाना था बचा लिया और तुरन्त हज़रत जिब्रील अ़लैहिस्सलाम द्वारा जन्नत से एक दुम्बा भेज कर उस को ज़ब्ह करने का आदेश दिया। उन्होंने उसे ज़ब्ह किया। बअ़ज़ मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि छुरी चलाते समय वह आंख पर पट्टी बांधे हुए थे छुरी चला कर पट्टी खोली तो देखा दुंबा ज़ब्ह पड़ा है। (वल्लाहु अअ़लमु) अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के इस अ़मल को ऐसी स्वीकृति दी कि अपने अन्तिम तथा प्रिय नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की उम्मत के धनवानों पर इसे अनिवार्य कर दिया इस प्रकार इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की यह सुन्नत जब तक यह उम्मत जीवित रहेगी बाकी रहेगी। कुर्बानी से हम को यह पाठ मिलता है कि हम को अल्लाह के आदेश पर अपनी प्रिय से प्रिय वस्तु को अल्लाह की राह में दे देने और कुर्बान कर देने के लिए हर समय तैयार रहना चाहिए।

यह ग़लत फ़हमी न होना चाहिए कि अल्लाह तआ़ला को कुर्बानी के खून गोश्त और जानवर के जान की ज़रूरत है। इस ग़लत फ़हमी को अल्लाह तआ़ला ने स्वयं दूर कर दिया फ़रमाया : कुर्बानी का गोश्त और खून अल्लाह को नहीं पहुंचता अल्लाह तक तुम्हारा तक़वा (संयम) पहुंचता है। अल्लाह तआ़ला तो यह देखता है कि तुम ने उसका लिहाज़ करते हुए, उस का सम्मान करते हुए उससे डरते हुए उस के आदेश का पालन करते हुए उसको प्रसन्न करने के लिए एक जानवर को पाला या ख़रीदा फिर उसके गले पर अल्लाह का नाम लेकर छुरी चला दी। अल्लाह तआ़ला तुम्हारी इस नियत और तुम्हारे इस आज्ञापालन का तुम को सवाब देगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की हदीस से यह बात निकलती है कि कुर्बानी के दिनों में अर्थात १०,११,१२ ज़िलहिज्जा में कुर्बानी से ज़ियादा किसी और काम में सवाब नहीं। अतः जिन लोगों पर कुर्बानी वाजिब नहीं है लेकिन वह कुर्बानी कर सकते हैं तो वह कुर्बानी कर के सवाब लें। इसी प्रकार जो लोग अपना वाजिब अदा कर चुकें और मज़ीद कुर्बानी करने की सकत रखते हों तो चाहिए कि कुर्बानी कर के सवाब लें। कुर्बानी मरे हुए लोगों की ओर से भी की जा सकती है। अतः अपने मरे हुए रिश्तेदारों की ओर से कुर्बानी कर के

उन को सवाब दिलाएं उसका गोश्त अपनी कुर्बानी की भांति खाएं और खिलाएं। जो व्यक्ति कहीं और रह रहा है जैसे विदेश में है तो बिना उस की अनुमति के कुर्बानी न होगी, उसकी अनुमति अनिवार्य है। बड़े जानवर में अगर उसकी अनुमति के बिना उसका हिस्सा लगायेंगे तो किसी की भी कुर्बानी न होगी।

कुर्बानी के जानवर : बकरा, बकरी, भेड़, दुंबा, गाय, बैल, भैंस, भैसा पर कुर्बानी जाइज़ है। इन के अतिरिक्त दूसरे जानवरों की कुर्बानी जाइज नहीं। जहां गाय की कुर्बानी पर पाबन्दी हो तो अल्लाह ने दूसरे जानवर दे रखे हैं। जंगली जानवर हिरन, नीलगाय आदि की कुर्बानी जाइज नहीं। बकरा, बकरी, भेड़ दुम्बा में से एक आदमी की ओर से एक जानवर की कुर्बानी होगी। भैंस, गाय आदि को भी अकेला आदमी कुर्बानी में ज़ब्ह कर सकता है। लेकिन उसमें एक जानवर पर एक से अधिक सात तक सम्मिलित हो सकते हैं। सब बराबर पैसा दें और बराबर बराबर गोश्त बांट लें।

कुर्बानी का जानवर स्वस्थ तथा निर्दोष होना चाहिए। ऐसा कमजोर जो चल न पाता हो या ऐसा पशु जिस का कोई अंग भंग हो उसकी कुर्बानी जाइज नहीं। कुर्बानी के जानवर की आयु भी निर्धारित है। बकरा, बकरी, भेड़, दुंबा, की आयु पूरी एक साल हो तथा गाय, बैल, भैंस, भैंसा, की आयु दो साल और ऊंट की पांच साल ।

कुर्बानी का तरीका : चाहिए कि जिस पर कुर्बानी वाजिब (अनिवार्य) है वह अपने हाथ से कुर्बानी के जानवर को ज़ब्ह करे चाहे मर्द हो या औरत और यह भी जाइज़ है कि दूसरे से ज़ब्ह करवा दे। ज़ब्ह करते समय जानवर को इस प्रकार लिटाएं कि जानवर का मुख क़िबला की ओर हो। हमारे यहां जानवर के पैर और धड़ उत्तर की ओर और सिर दक्खिन की ओर करें गे तो जानवर का मुख क़िब्ले की ओर कर सकेंगे। ज़ब्ह से पहले, ज़ब्ह के समय तथा ज़ब्ह के पश्चात अ़रबी के कुछ वाक्य पढ़े जाते हैं यदि वह सब याद न हो तो केवल बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर कह कर ज़ब्ह कर दें। ज़ब्ह कर के कहें ऐ अल्लाह मेरी तरफ़ से यह कुर्बानी कबूल फ़र्मा अगर दूसरे की ओर से कुर्बानी की है तो उस का नाम लेकर कहें कि फुलां की ओर से इसे कुबूल फर्मा अगर बड़े जानवर में कई लोग शरीक हैं तो सब के नाम लेकर कहें कि फुलां फुलां की ओर से इसे क़बूल फ़र्मा। कुर्बानी कर के गोश्त खुद खाएं रिश्तेदारों और दोसतों को खिलाएं लेकिन अच्छा होगा कि तिहाई भाग ग़रीबों, निर्धनों को खिलाएं। कुर्बानी का गोश्त ग़ैर मुस्लिम को भी दिया जा सकता है।

कुर्बानी की खाल चाहे अपने काम में लाएं चाहे किसी को उपहार में दे दें। लेकिन अगर खाल बेच दी गई तो उस की क़ीमत का हक़दार केवल वह ग़रीब है जो ज़कात का अधिकारी है।

कुर्बानी की दुआएं शुद्ध उच्चारण के साथ कोई अ़रबी जानने वाला ही सिखा सकता है। सहयोग के लिए हम उन्हें हिन्दी लिपि में लिख रहे हैं। ज़ब्ह से पहले पढ़ें– इन्नी वज्जहतु वज्हिय लिल्लज़ी फ़तरस्समावाति वल् अर्ज़ हनीफ़ंव्वमा अना मिनल् मुश्रिकीन, इन्न सलाती व नुसुकी व महयाय व ममाती लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन, ला शरीक लहू व बिज़ालिक उर्मितु व अना मिनल् मुस्लिमीन अल्लाहुम्म मिन्क व लक।

अर्थ : मैं सबसे कट कर अपना ध्यान उस व्यक्तित्व की ओर करता हूं जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और मैं मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) में से नहीं हूं। मेरी नमाज़, मेरा हज्ज, मेरी सारी उपासनाएं (अ़िबादतें) मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत सब अल्लाह के लिए हैं। जो सारे जहानों का मालिक है और उसका कोई साझी नहीं मुझे इसी का आदेश दिया गया है और मैं आज्ञाकारी हूं। ऐ अल्लाह यह तेरा ही दिया हुआ है और तेरे ही लिये है।

फिर बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर (शुरूअ़ अल्लाह के नाम से अल्लाह सब से बड़ा है।) कह कर ज़ब्ह करें बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर पढ़ना अनिवार्य हैं। ज़ब्ह के पश्चात पढ़ें – अल्लाहुम्मा तक़ब्बल् मिन्नी कमा तक़ब्बल्त मिन् हबीबिक मुहम्मदिंव्व व ख़लीलिक इब्राहीम अ़लैहिमस्सलातु वस्सलाम।

(अर्थ : ऐ अल्लाह इसे मेरी ओर से उसी प्रकार क़बूल कर जिस प्रकार तू ने अपने प्रिय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और अपने मित्र हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की ओर से क़बूल किया था।)

जब दूसरे की ओर से कुर्बानी करें तो "मिन्नी" की जगह "मिन" कह कर उसका नाम लें कई लोग हों तो सब के नाम लें, हिस्से दारों में से कोई ज़ब्ह कर रहा हो तो वह "मिन्नी व मिन" कह कर दोसरों के नाम ले, अपना नाम न ले वह मिन में आ गया।

●●●

आपकी समस्याएं और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न : *इस ज़माने के फैशन में एक यह भी है कि औरतें अपनी भवों को बारीक करने के लिए किनारे से उसके बाल मूंडती या उखाड़ती हैं ऐसा करना कैसा है ?*

उत्त : हदीस से मालूम होता है कि ऐसा करना दुरुस्त नहीं है। हुजूर सल्ल० की "ज़बान से चेहरे के बाल नोचने वाली और उस काम में मदद देने वाली औरत पर लानत की गई है। (मुस्लिम)

प्रश्न : *हुस्न के लिए जिस्म के कुछ हिस्से की सरजरी करवाना कैसा है ?*

उत्तर : इस्लाम के नज़दीक जिस्म अल्लाह की अमानत और उसका दिया हुआ है, जिसमें किसी शरअ़ी या फ़ितरी ज़रूरत के बिना तब्दीली करना दुरुस्त नहीं। इसी वजह से रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने बनावटी तौर पर बाल लगाने खूबसूरती के लिए दांतों के दर्मियान फासला करने को नाजाइज़ और क़ाबिले लानत और अल्लाह की तख़लीक़ में तब्दीली करार दिया है।

इस लिए केवल ज़ीनत या फ़ैशन के लिए इस तरह का कोई आपरेशन और जिस्म में कोई तब्दीली बिलकुल दुरुस्त नहीं, जैसा कि आज कल नाक मुंह आदि के लिए किया जाता है हदीस में फ़रमाया गया है।

"अल्लाह की लानत हो गोदने और गोदवाने वाली और बालों को उखाड़ने वालियों पर । (मुस्लिम किताबुल्लिबास)

इसी तरह हजरत अबू रेहाना (रज़ि०) से रिवायत है "आप (सल्ल०) ने दांतों को नोकदार बनाने से मना फरमाया।

दांतों के दर्मियान थोड़े फासले को हुस्न समझा जाता है। इस्लाम से पहले औरतें बनावटी तौर पर ऐसा किया करती थीं, जिसको मना किया गया इसी तरह फरमाया गया।

हुस्न व जमाल के लिए दांतों के दर्मियान बनावटी फासला पैदा करने वाली, अल्लाह की तख्लीक़ में तब्दीली पैदा करने वाली औरतों पर लानत हो।'

(मुस्लिम भाग २ पेज नं० २०५)

हां अगर आम फित्रत के खिलाफ़ कोई अंग ज्यादा हो गया जैसे पांच के बजाय छः उंगलियां हो गई तो आपरेशन के ज़रिये उनको अलग किया जा सकता है।

"जब आदमी ज़ायद उंगली या किसी दूसरी चीज़ को काट देना चाहे तो अगर ज्यादा अंदेशा उसके काटने की वजह से मौत का हो, तो ऐसा न करे और अगर उम्मीद बच जाने की हो तो उसकी गुन्जाइश है।

प्रश्न — *सोने चांदी के क़लम का प्रयोग कैसा है ?*

उत्तर — आज कल कुछ ऐसे कलम भी बनाए जा रहे हैं जो मुकम्मल सोने और चांदी के होते हैं या उनकी निब उन धातुओं की होती हैं फिकः की किताबों में इस प्रकार के कलमों को नाजाएज़ क़रार दिया है।

जैसे — सोने चांदी के बने हुए कलम या दवात की मदद से लिखना मकरूह है और इस कराहत में मर्द और औरत दोनों का हुक्म यकसां है।"

(फ़तावा हिन्दीया भाग ५ पेज नं० ३३४)

वास्तव में ज़ेवर के अ़लावा किसी और काम के लिए सोने चांदी का प्रयोग न मर्द के लिए जाइज़ है न औरत के लिए जैसे अ़ल्लामा इब्ने कुदामा लिखते हैं—

"हमारे सहाबा के दर्मियान सोने चांदी के बरतनों के हराम होने में कोई इख्तिलाफ़ नहीं है। यही राय इमाम अबू हनीफ़ा रह० इमाम मालिक रह० और इमाम शाफ़अ़ी रह० की भी है और मेरे इल्म की हद तक इसमें किसी का इख्तिलाफ़ नहीं।"

(अल्मुग्नी भाग एक ५८)

प्रश्न : *सोने चांदी के बटन और घड़ी लगाना कैसा है ?*

उत्तर : शरीअ़त ने चांदी की अंगूठी इस्तिमाल करने की इजाज़त दी है इस लिए उसके बटन का इस्तिमाल जाइज़ होगा लेकिन सोने के बटन का इस्तिमाल दुरुस्त नहीं हालांकि कुछ लोगों ने इसकी भी इजाज़त दी है।

लेकिन वह इस तरह कि अन्दर की मशीन सोने और चांदी की बनी हो और ऊपर का केस लोहे का हो तो भी इजाज़त है इसलिए कि फ़ुक़हा ने लोहे की अंगूठी के हराम होने के बावजूद

लोहे की उस अंगूठी को जायज़ क़रार दिया है जिस पर चांदी का ग़िलाफ़ चढ़ा हो।

"इस में कोई हर्ज नहीं कि लोहे की अंगूठी बनाई जाए जिस पर चांदी लपेट दी जाए और उसपर चांदी इस तरह पहना दी जाए कि लोहा नज़र न आए"। (रद्दुल मुख्तार ५–३४५)

प्रश्न — *बालों की सफाई के लिए कुछ लोग किरीम का इस्तिमाल करते हैं तो ऐसा करना कैसा है?*

उत्तर — आज कल कुछ किरीम और साबुन केवल इस मक़सद के लिए बनाए जाते हैं कि उनके ज़रिये जिस्म के फ़ाजिल और गैर ज़रूरी बाल साफ कर दिये जाएं नाफ के नीचे वाले बालों के लिए उनके इस्तिमाल में कोई हर्ज नहीं जिसे फुक़हा ने इस मक़सद के लिए चूना इस्तिमाल करने की इजाज़त दी है।

"अगर नाफ के नीचे के बाल में चूने से काम ले तो जाइज़ है।" (फतावा हिन्दीया भाग ५–३५७–५८ किताबुल कराहिया)

इससे असल मक़सद बाल की सफाई है न कि उसके लिए इस्तिमाल होने वाली चीज़ें और सामान।

प्रश्न : *आज कल मसनूई अर्थात बाजारू बाल लोग बहुत इस्तमाल करते हैं उसका क्या हुक्म है।*

उत्तर : आज कल औरतें मस्नूई बाल का इस्तिमाल करती हैं यह ना जाइज़ है जैसा कि बुख़ारी शरीफ़ में है, "आप ने बाल जोड़ने और जुड़वाने वाली पर लानत की है।"

(बुखारी भाग २–८७८ अल्वस्लुफ़िशअ़रि)

एक रिवायत में है कि हज़रत मुआविया (रज़ि०) आखिरी बार जब मदीना तशरीफ लाए तो खिताब फरमाया और उसी दर्मियान वालों का एक गुच्छा निकाला और फ़रमाया "मैं समझता हूं कि यहूदियों के सिवा कोई ऐसी हरकत नहीं कर सकता हुजूर (सल्ल०) ने उसको अर्थात बाल जोड़ने के फैशन को फ़रेब करार दिया।" (बुखारी भाग २ – ८७६ बाबुल वस्लि फिश्शअ़रि)

यहां तक कि कुछ ऐसी नौ जवान लड़कियों के लिए उसकी इजाज़त चाही गई जिनकी शादी होनी थी और बीमारी की वजह से उनके सर के बाल गिर गये थे लेकिन हुजूर (सल्ल०) ने फिर भी सख्ती से मना फ़रमाया।" (बुखारी भाग २–८७६ बाबुलवस्लि फिश्शअ़रि)

हां अगर धागों या कपड़ों का इस्तिमाल उसके लिए किया जाए जैसे रिबन, चोटी आदि तो उसकी इजाज़त है इसी तरह फ़तावा आलमगीरी में है।

"बालों के साथ आदमी के बाल जोड़ना हराम है। चाहे खुद उसी के (अलाहिदा किये हुए) बाल हों या किसी दूसरी औरत के ।

ज़ाहिर है कि हक़ीक़त में बालों को बाल से जोड़ना हराम है कि एक तो उसमें धोका धड़ी है दूसरे एक ऐसी चीज़ का इस्तिमाल करना है जिसके नापाक होने और न होने में इख्तिलाफ़ है उसके अलवा दूसरी सूरतें हराम नहीं हैं कि उनमें हुरमत की यह इल्लत मौजूद नहीं और किसी नुकसान के बिना ज़ीनत भी हासिल कर सकती है।

●●●

अदब ही से इन्सान इन्सान है
अदब जो न सीखे वह हैवान है

असाधारण शक्ति–सम्पन्न इन्सान

मिस्टर टाम्स कार्यालय उन लोगों के खंडन में, जो हज़रत पैग़म्बर साहब पर झूठे दोष लगाते हैं, लिखते हैं – "हां ऐसा हरगिज़ नहीं, यह पैनी दृष्टि वाला व्यक्ति जो जंगली मुल्क में पैदा हुआ, जो मनोआकर्षक काली आंखों और प्रफुल्ल और शिष्टतापूर्ण और विचारशील स्वभाव के साथ अपने दिल में मान–सम्मान की इच्छा के विपरीत कुछ और विचार रखता था। वह एक शान्तिमय और असाधाण शक्तियों वाली आत्मा थी और उन लोगों में से था, जो सत्यवान होने के अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकते, जिसको खुद प्रकृति ने सच्चा और सत्यप्रिय पैदा किया था, जबकि और लोग अंधे विश्वासों और संस्कारों पर चल रहे थे और उन्हीं पर संतुष्ट थे। यह व्यक्ति उन विश्वासों और संस्कारों में नहीं रह सकता था और अपनी आत्मा और पदार्थों के तथ्यों की जानकारी में वह औरों में भिन्न था। जैसा कि मैंने वर्णन किया है सर्वशक्तिमान का रहस्य अपने प्रताप और सौन्दर्य के साथ उस पर प्रकट हो गया था और इस तथ्य पर जिसका वर्णन करने में वाक्शक्ति असमर्थ है और जिसने अपने प्रति 'मैं यहां हूं' प्रयुक्त किया। पुरानी कथायें पर्दा न डाल सकीं, और ऐसा सत्य जिसका कोई श्रेष्ठतर शब्द न मिलने की वजह से हमने सत्य नाम रखा है, वास्तव में ईश्वरी चिहनों में से एक चिह्न है। ऐसे व्यक्ति की बात एक वाणी है, जो बिना किसी सम्बन्ध के सीधे ईश्वरीय प्रकृति के हृदय से निकलती है, जिसे इन्सान सुनते हैं।

आकाश का रहस्य

हबीबुल्लाह आज़मी

रात में हम आकाश पर अनेक चमकते हुए तारे, दुमदार तारे (comets), तारों के पुंज आदि देखते हैं। हमेशा उनकी स्थिति में तबदीली होती रहती है। सूर्य का पूर्व से निकलना, चन्द्रमा का रात में प्रकाश देना, आकाश में तारों का टूटना, ऐसी घटनाएं हैं कि मनुष्य के दिल में इनके विषय में जानने की जिज्ञासा पैदा होती है।

आदि काल से ही इन रहस्यों को जानने की कोशिश होती रही है। १६वीं सदी में इन आकाशीय पिण्डों (अजसामे फलकी) की खोज और इनके बारे में जानकारी का मानो एक इन्क़लाब ही आ गया जब गैलीलियो ने दूरबीन (Telscope) का आविष्कार किया। इस यंत्र से नक्षत्रों और ग्रहों का ज्ञान उचित रूप से होने लगा। इन आकाशीय पिण्डों की गति, आकार, ताप और प्रकाश के बारे में बहुत सी आश्चर्य जनक बातों की जानकारी मनुष्य को हुई। यहां तक कि पिछले दो सौ वर्षों में इन पिण्डों की रचना पर भी खोज प्रारम्भ हुई और अब तो मनुष्य चन्द्रमा पर भी उतर कर उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करने में सफल हो गया और अन्य ग्रहों (सय्यारों) तक पहुंचने का प्रयास तेज़ी से जारी है।

विश्व में अनेक ऐसे नक्षत्र (तारे) हैं जो हमारे सूर्य से कई गुणा बड़े हैं जिन से प्रकाश कई वर्षों में पृथ्वी तक पहुंचता है। इस के अतिरिक्त दुमदार तारे, उलकायें (टूटते तारे) नीहारिकायें (Nebul) अपने मार्ग पर चक्कर लगाती रहती हैं।

यहां इनके बारे में एक संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की जा रही है।

नक्षत्र (तारे) रात में जब हम आकाश की ओर देखते हैं तो हम को अनगिनत चमकते हुए पिण्ड दिखाई देते हैं। हम इन्हें नक्षत्र कहते हैं। यह सभी नक्षत्र नहीं हैं। इन में से कुछ टिमटिमाते हुए दिखाई देते हैं और कुछ केवल चमकते रहते हैं। नक्षत्र (Stars) वह हैं जिन में अपने खुद का प्रकाश होता है जैसे सूर्य परन्तु कुछ पिण्ड ऐसे होते हैं जिन का अपना प्रकाश नहीं होता परन्तु यह दूसरों के प्रकाश से चमकते हैं। इन पिण्डों को हम ग्रह (Planets) कहते हैं। जैसे हमारी पृथ्वी यह ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते रहते है।

आकाश में अनगिनत तारे हैं। उनमें से कई हमारे सूर्य से भी कई गुना बड़े हैं परन्तु वह पृथ्वी से इतने दूर हैं कि हमें एक चमकते हुए बिन्दु के समान दिखाई देते हैं। इनमें से कुछ गर्म और चमकदार हैं। और कुछ ठंडे हैं तथा अपने साथ अन्य छोटे बड़े नक्षत्रों को लिए घूमते रहते हैं। यह बहुत ठोस होते हैं। इन का छोटा सा कण भी कई मन का होता है।

नक्षत्र की दूरी इतनी अधिक है कि उन से प्रकाश भी देर में आता है। सूर्य हमारी पृथ्वी से ८ करोड़ ३० लाख मील दूर है। इसकी रोशनी पृथ्वी पर ८ मिनट में आती है। जबकि रोशनी की रफतार १८६,००० मील प्रति सेकेण्ड है। पृथ्वी से सबसे निकट नक्षत्र ४ १/२ प्रकाश वर्ष (Light hears) की दूरी पर है। एक प्रकाश वर्ष की दूरी ६००,०००,०००,००० (६ अरब) मील की है। ध्रुव तारे (कुतुबतारे) का प्रकाश हमारे पास ५० वर्ष में आता है।

हम पृथ्वी से आकाश का थोड़ा ही सा भाग एक बार में देख पाते हैं। इस प्रकार एक बार में लग भग ६००० से ६००० नक्षत्र हम देखते हैं। अभी तक लगभग २० अरब नक्षत्रों की गिनती हो सकी है। अनुमान लगाइये कि और कितने अनगिनत नक्षत्र हमारी आंख से ओझल हैं और यह हमारे लिए रहस्यमय बने हुए हैं।

प्राचीन काल में लोगों ने अध्ययन के बाद यह पता लगाया कि सूर्य आकाश में जिस पथ पर चलता रहता है उसमें १२ नक्षत्र हैं।

ध्रुवतारा (कुतुब तारा) तथा सप्तर्षि मण्डल या खटोला

हम रात को उत्तर की तरफ़ देखें तो हमें एक बहुत चमकदार तारा दिखाई देगा। यही ध्रुव तारा (Polar Star या कुतुबतारा) है। ध्रुव तारे से रात में दिशा को मालूम किया जाता है। चूंकि यह ठीक ध्रुव (कुतुब) के ऊपर है इसलिए पृथ्वी के घूमने से इसकी दिशा में कोई परिवर्तन नहीं आता।

ध्रुव तारा हमेशा उत्तर में रहता है। इस के पास ही ६ तारों का एक नक्षत्र मण्डल है जो सप्तर्षि मण्डल (Great Bear या खटोला) के नाम से

जाना जाता है। इसकी दिशा पृथ्वी के घूमने के कारण बदलती रहती है। इसके सामने एक और सात तारों का नक्षत्र मण्डल है। छोटा सप्तर्षि (Little Bear) कहलाता है। ध्रुव तारा इसी समूह के अन्त में दिखाई देता है।

अगर हम ध्रुवतारा देखना चाहें तो बड़े सप्तर्षि मण्डल (Great Bear) के आगे वाले दो तारों को मिलाकर छोटे सप्तर्षि मण्डल (Little Bear) की ओर सीध में देखें तो हम को एक चमकता हुआ तारा दिखाई देगा यही ध्रुवतारा है। (चित्र में देखें)

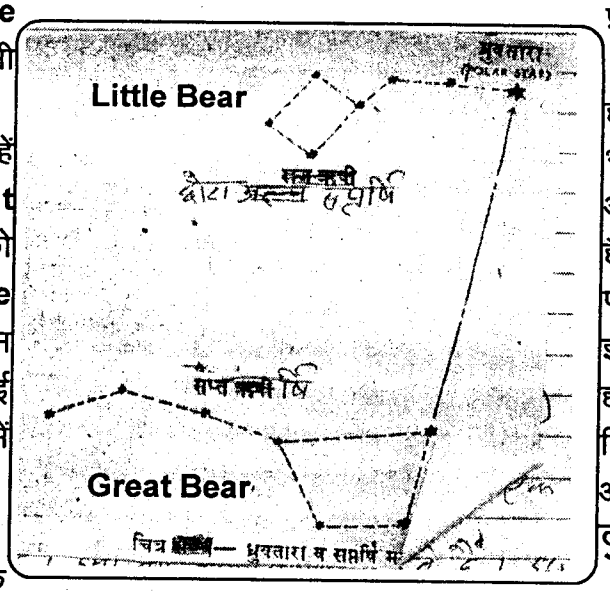

चित्र — ध्रुवतारा व सप्तर्षि मण्डल

आकाश गंगा (कहकशां)

आकाश गंगा नक्षत्रों का एक समूह है जो आकाश में एक मार्ग सा बनाता है। इसी को आकाश गंगा कहते हैं। इसमें अनगिनत तारे हैं जो हम से बहुत दूर हैं। इन को हम दूरबीन द्वारा देख कर इसका अध्ययन करते हैं। इसमें बहुत से चमकदार नक्षत्र हैं। यह नक्षत्र–समूह पृथ्वी से इतने दूर हैं कि हम को यह छोटे छोटे सफ़ेद धब्बे से दिखाई देते हैं। ऐसा अन्दाज़ा लगाया जाता है कि आकाश गंगा में कम से कम १००,०००,०००,००० नक्षत्र हैं आकाश गंगा की शकल एक पेड़ जैसी है। हमारी पृथ्वी उसके एक किनारे हटी हुई है। इसी कारण एक ओर धब्बे अधिक धूमिल दिखाई देते हैं और साथ ही साथ दूसरी तरफ़ अधिक प्रकाशमान। आकाश गंगा हम को पृथ्वी के उत्तर से पूर्व की ओर फैली दिखाई पड़ती है परन्तु पृथ्वी पर घूमने के कारण उस की स्थिति बदलती रहती है। आकाश में एकसी अनेक धूमिल प्रकाश रेखाएं हैं जो पृथ्वी से करोड़ों मीलदूर हैं।

उल्कायें (Shooting Stars)

उलकायें वह टूटते हुए तारे हैं जिसे हम रात में आकाश पर देखते हैं कभी कभी हम नक्षत्र को बड़ी तेज़ी के साथ चलते हुए देखते हैं और उनके पीछे एक छण के लिए प्रकाश रेखा सी बन जाती है। वास्तव में आकाश में बहुत से आकाशीय पिण्ड हैं और वह सभी इधर उधर नक्षत्रों, तथा ग्रहों के बीच घूमा करते हैं। यह पिण्ड कभी कभी पृथ्वी के इतने क़रीब आ जाते हैं कि पृथ्वी की आकर्षण शक्ति (कूवते काशिश) अपनी ओर खींचती है। इस खिंचाव से पिण्ड इतनी तेजी से दौड़ते हैं कि उन में रगड़ से गर्मी पैदा हो जाती है और उन का ऊपरी पर्त जलकर प्रकाशमान हो जाता है।

कभी कभी यह इतने गर्म हो जाते हैं कि वह हवा में ही भस्म हो कर चूर चूर हो जाते हैं और उन की धूल ज़मीन पर गिरती है तथा अक्सर इसके टुकड़े जमीन पर भी गिर जाते हैं। कभी कभी इनकी रगड़ से गरजदार आवाज हाती है और इन के जमीन पर गिरने से बम जैसी धमाके की आवाज़ होती है।

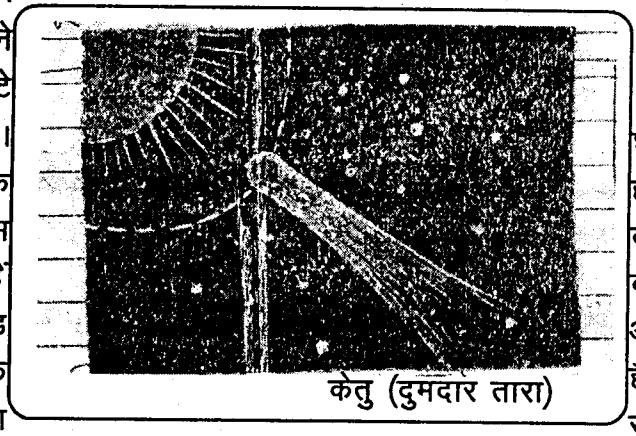
केतु (दुमदार तारा)

दुमदार तारा (केतु)

केतु आकाश के अन्य पिण्डों से बिल्कुल अलग होते हैं। इनके पीछे एक लम्बी पूंछ होती है। यह भी आकाश में घूमा करते हैं। अन्ध विश्वासी लोग इसे किसी बड़ी घटना का संकेत मानते हैं। केतु के तीन भाग होते हैं (१) मध्य (Nucleus) (२) सिर (Coma) (३) पूंछ (Tail)

बीच का भाग बहुत से छोटे छोटे चमकीले पिण्डों का एक गुच्छा होता है और सिर उस मध्य भाग के चारों ओर लिपटे हुए पदार्थ को कहते हैं जिसमें गैस और आकाशीय पिण्डों की भस्म होती है। पूंछ एक चमकदार झाड़ू के समान होती है। यह खयाल किया जाता है कि सिर कभी कभी इतना चमकदार हो जाता है कि इसके कण एक लम्बी पूंछ का रूप ले लेते हैं। कुछ ऐसे भी केतु हैं जिस में पूंछ नहीं होती।

दुमदार तारे की सबसे हैरत में डालने वाली बात उसकी चमकदार पूंछ

होती है जो कभी कभी लाखों मील लम्बी होती है। कभी कभी केतु में एक से अधिक पूंछ होती है। १७४४ में एक ऐसा केतु देखा गया था जिस के ६ पूंछें थीं। जब केतु सूर्य के पास आता है तो उस की पूंछ सूर्य के ताप के कारण पीछे हो जाती है।

केतु में कुछ अपना प्रकाश होता है लेकिन अधिकांश प्रकाश सूर्य से मिलता है। ज्यों ज्यों केतु सूर्य के पास आता है त्यों त्यों उस का प्रकाश बढ़ता जाता है यहां तक कि दिन में उसे आसानी से देखा जा सकता है।

केतु का अपना रास्ता होता है जिस पर वह सदा चलता रहता है। यह कहां से आता है और कहां चला जाता है इसका अभी तक पता नहीं चल सका है। यह अवश्य पता चलता है कि इन का मार्ग अण्डाकार है। जिन केतुओं का मार्ग छोटो होता है वह तीन चार वर्ष के बाद फिर दिखाई देते हैं। परन्तु बहुत से केतुओं का मार्ग लाखों मील लम्बा होता है जो एक बार सूर्य के पास आकर आकाश में हमेशा केलिए खो जाते हैं सन् १८११में जो केतु देखा गया था अन्दाज़ा है कि वह फिर ३००० वर्ष के बाद दिखाई पड़ेगा।

अगर दुमदार तारा ज़मीन से टकरा जाए या पृथ्वी के आकर्षण से उस पर गिर जाए तो एक भयंकर भूचाल आ जाएगा।

जो बड़ों का अदब नहीं करता और छोटों पर शफ़्क़त नहीं करता वह हम में से नहीं है। (हदीस)

मुनाजात

अमतुल्लाह तस्नीम

बनाकर अपना मरकज़ दिल को तू ऐसा समा जाये।
कि तुझ को पाके यह बेचैनी दिल तस्कीन पाजाये।।
बसा हो तू न जिसके दिल में वह दिल बेकार है बिल्कुल।
न हो गर बाग़ में गुल तो वह गुलशन खार है बिल्कुल ।।
बहुत बे लुत्फ और बे कैफ़ गुज़री ज़िन्दगी इतनी।
कटे अब तेरी ताअ़त में है बाक़ी ज़िन्दगी जितनी।।
इताअ़त हो शिआ़र अपना, इबादत ज़ौक़ बन जाये।
मिरा हर हर कदम यारब सरापा शौक़ बन जाये।।

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Deals :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Deals in :
Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki, Chowk, Lucknow- 2260063

MOHD. ASLAM
(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

लड़ाइयों के लिए इस्लामी क़ानून

स०सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

इस्लाम ने लड़ाइयों के लिए जो निम्न लिखित नियम और क़ानून बनाए हैं उन पर इंसानियत गर्व कर सकती है –

(१) अत्याचार करने वालों से लड़ाई लड़ी जाए (अल हुजुरात आयत ८)

(२) जो लोग दीन के बारे में लड़ें उन से भी लड़ाई की जाए जो लोग घरों से निकाल बाहर करें उनसे और उनकी सहायता करने वालों से भी जंग की जाए। (अलमुम्तहिनः रुकूअ़ २)

(३) रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किसी लड़ाई पर फौज रवाना करते तो फौज के सरदार को जो आदेश देते तो उनमें से एक अनिवार्य आदेश यह था कि किसी बूढ़े, किसी बच्चे या किसी औरत को क़त्ल न किया जाए (अबूदाऊद)

(४) जब दुश्मन से लड़ाई हो तो सेना की पंक्तियां सीसा पिलाई हुई दीवार की तरह हों। (सूरतुस्सफ़ रूकूअ़ १) इसका तात्पर्य यह है कि पंक्तियों में पूरी व्यवस्था हो, ताल मेल में कोई कमी न हो। आस्था और उद्देश्य में एकता हो, सरफ़रोशी और ज्ञान देने का पूरा जज्बा हो।

(५) युद्ध में दुशमनों के क्षेत्र में जो विनाश किया जाए उसे उपद्रव न समझा जाए।

(६)जंग के ज़माने या विजय के बाद ज़मीनों, फ़सलों और नस्लों को तबाह करना किसी हाल में उचित नहीं है।

(७) युद्ध में दुश्मन के माल और कुटुम्ब को लूटने की कड़ी मनाही की गई है। आप (सल्ल०) ने यह मुनादी रखी थी कि युद्ध के अवसर पर जो दूसरों के घरों में जाकर उनके रहने वालों को तंग करे या लूटे, मारे तो उस का जिहाद स्वीकार नहीं किया जाएगा। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद) यह भी फ़रमाया कि जो व्यक्ति केवल लूट मार, मालेग़नीमत प्राप्त करने के लिए जिहाद करता है, उसको कोई सवाब नहीं मिलेगा। एक बार एक लड़ाई में सहाबा इंतहाई तंगहाली में मुबतला हो गए, भूखमरी की नवबत आ गई, बकरियों का एक खेड़ नज़र आया, तो सब उस पर टूट पड़े। बकरियों को जब्ह करके गोश्त पकाना शुरू किया तो आप सल्ल० तशरीफ़ लाए और अपनी कमान से गोश्त की हांड़ी उलट दी और फ़रमाया लूट का गोश्त मुर्दार गोश्त के बराबर है। (अबूदाऊद, किताबुल जिहाद)

(८) क़त्ल हुए लोगों का सिर काट कर घुमाना या दुश्मन को बन्दी बनाकर किसी चीज़ से बान्ध कर उस को तीरों का निशाना बनाना या तलवार से क़त्ल करने की कड़ी मनाही है।

(९) जब दुश्मनों से मुठभेड़ हो तो पहला काम उन से लड़ कर उन को कुचल कर रख देना है। उसके बाद बन्दियों पर मजबूती से क़ब्ज़ा करना है। (सूरत मुहम्मद आयत – ४) इस का अर्थ है कि पहले दुश्मन की जंगी ताक़त तोड़ दी जाए, फिर उनके आदमियों को बन्दी बनाने की कोशिश की जाए।

(१०) जंग में जो लोग गिरफ़्तार हों उनके लिए अधिकार दिया गया है कि उन पर एहसान (उपकार) किया जाए या उनसे फ़िदया (कुछ धन लेकर आजाद करना) लिया जाए लेकिन उनका क़त्ल न किया जाए। एक बार कुछ कैदियों के कत्ल किये जाने की सूचना रसूलुल्लाह सल्ललहु अलैहि व सल्लम को मिली तो आप (सल्ल०) ने फ़रमाया : अल्लाह की क़सम मैं मुरगे को भी इस प्रकार मारना उचित नहीं समझता। (अबूदाऊद भाग–२ पृष्ठ १०)। एक कैदी सुहैल बिन उमर बहुत ही उत्तेजना पूर्ण भाषण देने वाला था, आप (सल्ल०) के खिलाफ़ भाषण दिया करता था। जब वह कैदी बनाकर लाया गया तो आप (सल्ल०) से कहा गया कि इस के दांत तोड़ दिये जाएं। यह सुनकर आप सल्ल० ने फरमाया कि अगर मैं इसके दांत तोड़ूंगा तो अल्लाह तआला मेरे दांत तोड़ देगा यद्यपि मैं नबी हूं।

बद्र की जंग के बन्दियों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबियों के (अपने साथियों के) हवाले यह कह कर किया कि उन के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए, उनको खाने पीने की तकलीफ न हो। चुनानचा

सहाबा खुद खजूरें खा लेते लेकिन कैदियों को पूरा खाना खिलाते। हब्श की जंग के छः हजार कैदियों को आप ने (सल्ल०) कपड़े के छ' हजार जोड़े दिये।

(१२) समझौता के सन्देश लेकर कोईदूत आए तो उस की जान की पूरी रक्षा की जाए।

(१३) दुश्मनों के लिए जासूसी करना किसी हाल में उचित नहीं। इस अपराध करने वाले को शारीरिक कष्ट, लम्बी कैद और कत्ल की भी सज़ा दी जा सकती है।

(१४) दुश्मनों से समझौते की पाबन्दी हर दशा में की जाएगी। हुदैबिया की सुलह में यह तय पाया था कि काफिरों या मुसलमानों में कोई व्यक्ति यदि मदीना जाए तो वापस कर दिया जाए लेकिन कोई मुसलमान मक्का में जाए तो वापस नहीं किया जाएगा। इस समझौते के बाद हजरत अबू जंदल रजि० कुरैश से तंग आकर रसूले अकरम (सल्ल०) के पास चले आए और अपने शरीर का दाग रो रोकर दिखाया। हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत अबू बक्र रज़ि० उन की तकलीफ से प्रभावित हुए। हजरत अबू बक्र रज़ि० ने उनके लिए रसूले अकरम (सल्ल०) से बार बार सिफारिश की मगर आप सल्ल० ने प्रतिज्ञा की पाबन्दी के विचार से उनको वापस किया।

(१५) अगर दुश्मन समझौते के खिलाफ करें तो उनके खिलाफ जंगी कार्यवाही उचित है।

(१६) कैदी और विजय किये हुए क्षेत्र के लोग जिज़्या देना स्वीकार करें तो वह मुसलमानों की तरह आज़ाद शहरी बनकर रह सकते हैं और उनको यह अधिकार दिये जाएं। १. कोई उन पर हमला करे तो उनकी पूरी सुरक्षा की जाए। २. उनका धर्म तबदील न कराया जाए। ३. जिज़्या देने के लिए उनको कर वसूल करने वाले के पास जाना न पड़े। ४. उन की जान, उनकी इज़्ज़त उनके माल की हिफ़ाज़त की जाए। ५. उन के काफिले और तिजारत के कारवां की सुरक्षा की जाए। ६. उनकी ज़मीन उन्हीं के पास रहे। जो चीज़ें उनके कब्जे में हैं उन्हीं के पास रखी जाए। ७. उन के धर्मगुरू और पुजारी अपने पदों से अलग न किए जाएं सलीबों और मूर्तियों को हानि न पहुंचाई जाए। ८. उनसे उशर (पैदावार कर) न लिया जाए। ९. उन के देश में फौज न भेजी जाए। १०. उनके अधीकार समाप्त न किए जाएं।

क्या इससे अच्छा जंगी कानून आजकल की संयुक्त राष्ट्र परिषद (U.N.O.) पेश कर सकती है। कुछ लोग इलजाम लगाते हैं कि जिज़्या का टेक्स लगाकर मुस्लिम और गैरमुस्लिम शहरियों में भेद भाव पैदा किया जाता है। यह कर भेदभाव पैदा करने के लिए न था बल्कि सुरक्षा कर (हिफाज़त टेक्स) था। अगर गैर मुस्लिम देश अपने उन मुसलमाना निवासियों पर जो अल्प संख्यक (अक़ल्लीयत) बन कर उनके देश में आबाद है ऐसा सुरक्षाकर लगाएं तो शायद वह इसके खिलाफ़ नाराज़गी प्रकट न करें।

अगर इन जंगी कानूनों कीपाबन्दी वर्तमान युग में की जाए तो आतंकवाद का नामानिशान दुन्या से मिट जाए न फिलिस्तीनियों की नस्ल कुशी हो न वर्ल्ड ट्रेड टावर्स की घटना हो न अफगानिस्तान व इराक़ की आम तबाही हो।

अहले सुन्नत वजमाअ़त का अ़क़ीदा

रसूले खुदा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुहबत (संगति) बड़ी चीज़ है। इस उम्मत में सहाब–ए–किराम (हुज़ूर (स०) के साथी) का रुत्बा (पद) सबसे बड़ा है। जिस को ईमान के साथ एक क्षण के लिए भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की संगति मिल गई, पीछे आने वालों में बड़े से बड़ा भी उस के बराबर नहीं हो सकता।

सहाब–ए–किराम की संख्या

बद्र के ग़ज़वे में	३१४
हुदैबिया में	१५००
मक्का विजय के समय	१०,०००
हुनैन के ग़ज़वे में	१२,०००
हज्जतुलविदाअ़ में	४०,०००
गज़व–ए–तबूक में	७०,०००

और नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात (देहान्त) के समय एक लाख चौबीस हज़ार थी ।

हदीस की किताबों में जिन सहाब–ए–किराम से रिवायतें बयान की गई हैं उनकी संख्या ७,५०० है।

(सीरत खुलफ़ाए राशिदीन)

0522-508982
अनस
मैरेज हाल
बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हमसे सम्पर्क करें ।
कपूर मार्केट (मलिक मार्किट)
विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

शयातीन और सिहर (शैतान और जादू)

अबू मर्गूब

हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम से सिहर जादू का कोई सम्बन्ध नहीं।

सूर–ए–बक़रः की आयत १०२ के अर्थ को ध्यान पूर्वक पढ़िये :

और उन्होंने (अर्थात यहूद ने) उसी चीज़ की (अर्थात सिहर) की पैरवी की। जिस की चरचा शैतान लोग हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम के शासन काल में किया करते थे। (सिहर–जादू–करना कुफ्र है) और सुलैमान अ़लैहिस्सलाम ने कुफ्र नहीं किया (उनकी ओर जादू का समबन्ध बताना बुहतान लांक्षना है।) परन्तु शैतानों ने कुफ्र किया था। वह लोगों को जादू सिखाते थे (और उन यहूदियों ने) उस जादू की भी पैरवी की जो बाबुल में हारूत व मारूत (नाम के) दो फ़िरिश्तों पर (लोगों की परीक्षा के लिए) उतारा गया था। और वह दोनों फिरिश्ते जब तक यह न कह देते कि "हम दोनों फित्ना हैं (अर्थात जांच के लिए भेजे गये हैं जादू को अपनाने के लिए सीख कर) तुम कुफ्र न करो" किसी को जादू न सिखाते। पस वह लोग अर्थात यहूद उन से अर्थात हारूत व मारूत से वह जादू सीखते जिस से मियां बीवी में फूट डाल दें। और (जादू का नाम सुनकर हम को डर नहीं जाना चाहिए) निःसन्देह यह जादूगर अल्लाह के हुक्म के बिना किसी को हानि नहीं पहुंचा सकते, और यह ऐसी चीजें सीखते हैं जो उनके लिए हानिकारक हैं, लाभ दायक नहीं हैं। और निःसन्देह यह यहूदी लोग जानते हैं कि जिसने उसको खरीदा अर्थात जादू सीख कर अपनाया आखिरत (परलोक) में उस का कोई हिस्सा नहीं। निःसन्देह इन लोगों ने (अल्लाह की किताब को पीछे डाल कर और जानों को निछावर करके जो जादू का सौदा किया है वह बहुत ही बुरा है क्या अच्छा होता इस बात को वह समझते।

सिहर (जादू) इन्सानों में दो राहों से आया।

आयत के इस अर्थ से पता चला कि सिहर इन्सानों में दो राहों से आया : (१) शैतानों द्वारा (२) हारूत व मारूत दो फिरिश्तों द्वारा।

इन्सान ने जादू का हुक्म भी जाना और उसकी पहचान भी, परन्तु शैतान ने अपने मानने वालों से इस का अनुचित प्रयोग करवा ही लिया। शैतानों में जादू पहले से चला आ रहा था पर उन्होंने हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के भव्य तथा चमत्कारी शासन से सम्बन्ध जोड़ने का अवसर ढूंढा ताकि उन का जादू इन्सानों में अधिक रिवाज पाए और इन्सान अधिक से अधिक पथभ्रष्ट हों।

जादू को सुलैमान (अ०) से जोड़ने के विषय पर मुफ़स्सिरीन (कुर्आन के टीका कारों) के विभिन्न कथन हैं।

इब्नि अ़ब्बास का कहना है कि एक समय जब हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम देश से बाहर निकले तो शैतानों ने जादू लिख कर उनकी नमाज़ पढ़ने की जगह पर गाड़ दिया और उनके देहान्त के पश्चात उसे निकाला और लोगों से कहना शुरू किया कि इसी जादू की शक्ति से सुलैमान (अलैहिस्सलाम) इतना भव्य तथा चमत्कारी शासन चला रहे थे।

कहते हैं कि हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम का मंत्री आसिफ़, हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के आदेश लिख लेता और उनकी कुर्सी के नीचे गाड़ देता। हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम के पश्चात (जब कि आसिफ़ भी न रहे होंगे) शैतानों ने यह गाड़े हुए आदेश निकाले और उनकी सतरों (पंक्तियों) के बीच जादू लिख दिया फिर उस सब को हज़रत सुलैमान अ़लैहिस्सलाम से जोड़ दिया जब कि सुलैमान अ़लैहिस्सलाम जादू से दूर हैं।

मदारी जो करतब दिखाते हैं यह जादू हरगिज़ नहीं है। यह तदबीरों के चमत्कार हैं।

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street,
Akbari Gate, Lucknow.

बच्चों के लिए खतरनाक रोग

ख़सरा

डा० मुज़फ्फर अब्बास

ख़सरा एक प्रकार का बुख़ार है। इसमें पहले जुकाम होता है और चौथे दिन शरीर पर महीन सुर्ख रंग के दाने निकल आते हैं यह रोग सामान्य तौर पर वबा की शक्ल में फैलता है। अधिक तर यह रोग छोटे बच्चों को होता है लेकिन कभी कभी जवान और बूढ़े भी इस और मुब्तला हो जाते हैं। जाड़ों में मौसम की तब्दीली पर यह अक्सर वबा के रूप में फैलता है। सामान्य रूप से यह रोग नाक से निकलने वाले पानी और सांस द्वारा एक दूसरे व्यक्ति को लग जाता है। और कपड़ों और उसके प्रयोग किये हुए बरतनों के जरिये भी इस के फैलने की सम्भावना होती है। बीमारी होने के आठ से बारह दिन बाद इसके लक्षण शुरू होते हैं। इस बीच कभी कभी सुस्ती, काहिली और कभी कभी खांसी आने लगती है। इसके बाद पहले जूड़ी देकर बुखार चढ़ता है लेकिन बुखार तेज नहीं होता, १०१ से १०२ डिग्री तक होता है। रोगी का मिजाज चिड़चिड़ा हो जाता है, माथे में दर्द होता है, जुकाम हो जाता है, पपोटे में कुछ सूजन आ जाती है, आंखों में लाली और दर्द होता है और उनसे पानी बहता है, बारबार छींके आती हैं, नाक बहती है, हलक़ सूख जाती है, आवाज़ बैठ जाती है, बारबार खांसी आती है, सीने पर तनाव मालूम होता है, तेज़तेज़ सांस आती है, कभी मेदे में दर्द मालूम होता है, उबकाई आती हैं और कभी कभी कब्ज की शिकायत होती है। बुखार के चौथे रोज और कभी पांचवे रोज पोस्ते के दाने के समान छोटे छोटे सुर्ख दाने जो आपस में मिल कर अर्ध गोलाई के धब्बे बना देते हैं। पहले ललाट और चेहरे पर और फिर सारे शरीर पर निकल आते हैं। जो रोगी के शरीर पर हाथ फेरने से महसूस होते हैं। यह दाने बराबर एक दो दिन तक निकलते रहते हैं और धीरे धीरे बढ़कर और आपस में मिल कर दाएरे के आकार में धब्बे बना देते हैं, लेकिन जब दाने बहुत से निकलते हैं तो उनकी कोई खास शकल नहीं रहती। इन दानों की रंगत कभी गुलाबी कभी पीलापन लिए हुए सुर्ख और कभी स्याही माएल सुर्ख होती है। दोनों के निकलते समय तेज जुकाम होता है लेकिन जब दाने अच्छी तरह निकल आते हैं तो बुखार और दूसरे लक्षणों में कमी आ जाती है। छटे सातवें रोज दाने मुर्झा जाते हैं और बारह से चौबीस घंटे में बुखार भी उतर जाता है। आठवें रोज़ मुर्झाए हुए दोनों पर से भूसी के समान बारीक बारीक छिलने या खुरण्ड झड़ जाते हैं। उस समय शरीर पर बहुत खुजली मालूम होती है।

इस रोग की मुद्दत चौदह दिन की होती है। बुखार आम तौर पर आठवें रोज़ उतर जाता है लेकिन इसी की छूत की मुद्दत रोग शुरू होने से लेकर दानों के मुर्झाने के सामान्यतः तीन हफ्ते बाद तक होती है लेकिन अगर मरीज़ को खांसी की शिकायत हो या उस के कान या नाक बहती हो तो जब तक यह शिकायत दूर न हो उसमें कीटाणु का माद्दा मौजूद होता है अर्थात उससे दूसरे को बाएरल लग सकता है। जिस व्यक्ति पर खसरा के वाएराल होने का शुबहा हो उस को पन्दरह रोज तक अलग रखना चाहिए और इस बीच में उसको जोकाम आदि की शिकायत न हो तो उसके पास आने जाने में कोई हरज नहीं।

खसरा का ठीक ठीक इलाज एलोपैथिक में नहीं है अलबत्ता यूनानी और होम्यो पैथी में इस का उचित इलाह है। जब यह वबा फैलने का भय हो तो होम्यो पैथिक की मारबीलियम--२०० (Marbillim 200) रोग को रोकने के लिए सप्ताह में एक बार अगर गोलियों की शक्ल में होतो, दस दस मिनट के बाद तीन बार ले और अरक हो तो एक चौथाई कप पानी में १०, १२ बूंद टपका कर दस दस मिनट के बाद तीन बार लें। इस प्रकार इस रोग के हमले की उम्मीद कम होती है और हो भी गया तो इसका प्रभाव बहुत कम हो जाता है और रोगी शीघ्र अच्छा हो जाता है। रोग के दौरान पल्साटीला (Pulsatilla-30) (Bella doona-30) इस की लाभदायक दवाएं हैं। बारी बारी तीन तीन घंटे के बाद देते रहें तो कोई पेचीदिगी नहीं पैदा होती और मर्ज का कोर्स आसानी से

(शेष पृष्ठ १२ पर)

एक ख़त का जवाब

एडीटर

मोहतरम जनाब एडीटर साहब

आदाब

मैंने आपकी हिन्दी माहवारी किताब "सच्चा राही" पढ़ी। पढ़ कर खुशी हुई। कि जो हमारे भाई--बहन और जो ग़ैर मुस्लिम हैं जो उर्दू नहीं पढ़ सकते आप उन तक हिन्दी "सच्चा राही" के जरिये अपनी बात या यह कहना चाहिए कि अपनी मज़हबी बातों को उन तक पहुंचा रहे हैं।

लेकिन यहां पर मैं एक छोटी सी सलाह यह देना चाहूंगी कि आप इस किताब में बहुत जियादा ठेठ हिन्दी का इस्तेमाल न करें जिसे आ़म लोग समझ न सकें। इससे हमारी बोल चाल में इन्हीं अल्फाज़ को बोलने की आदत हो जायगी। अफसोस की बात यह है कि आज मुस्लिम घरों के बच्चे अब बिल्कुल उर्दू नहीं जानते और इस हिन्दी की किताब में अल्फाज़ अगर उर्दू के हों तो कम से कम हमारी बोल चाल की जबान तो खराब नहीं होगी। वैसे इतनी ठेठ हिन्दी को इस्तेमाल करने की कोई जरूरत भी नहीं है।

मैं अपने पूरे खानदान की तरफ से आप से यह गुजारिश करती हूं कि आप मेरी बात पर ध्यान दें।

शुकिया

इदारा : मुहतरम बहन ! आप का खत पढ़ कर इस लिए बड़ी खुशी हुई कि "सच्चा राही" ध्यान से पढ़ा जाता है और हमारे भाई ही नहीं हमारी बहनें भी इसे पढ़ती हैं। साथ ही सभी लोग इस के जरीअ़े दी गई मालूमात को पढ़ने वालों के लिए फाइदे मन्द समझते हैं। रही बात इस की जबान की तो इस पर तो हमारे बहुत से हमदर्दों ने इज्हारे ख़याल किया और मशवरे दिये हैं। हम ने भी कई बार अपने लिखने वालों से सहल लिखने की दरख्वासत की है और खुद अपने कलम को संभाला है वैसे मेरा कहना है कि अ़िल्म वाले लोग इस से सहल हिन्दी में कोई पत्रिका पेश न कर सकें गे। मैंने कुछ दोस्तों से मुताल्बा किया कि सच्चा राही की कोई मुश्किल अ़िबारत पेश कीजिए और उसका सहल नमूना लिख दीजिए। एक दोस्त ने सच्चा राही नवम्बर ०३के पृष्ठ ६ की अ़िबारत पेश की --

फलतः आप के अन्दर नारी के प्रति जो सम्मान उस की अनुभूति और कोमल भावनाओं का जो लिहाज था वह नारी जगत के बड़े बड़े वकील और नारी की प्रतिष्ठा के बड़े बड़े दअ़वे दार के यहां नहीं मिलता।

उन्होंने कहा इस अ़िबारत में फलतः का पिछली अ़िबारत से जोड़ नहीं मिलता "अतएव" चाहिए, बड़े बड़े वकील और बड़े बड़े दअवेदार के बजाए "बड़े बड़े वकीलों, बड़े बड़े दअ़वेदारों चाहिए या फिर बड़े बड़े की जगह बड़े से बड़े होता। उन्होंने यह नमूना पेश किया।

"चुनांचे आप (स०) के अन्दर औ़रत की जो अ़िज़्ज़त उसके ख़यालात और उसके नाजुक इहसासात का जो लिहाज़ था वह आ़लमे निस्वां के बड़े से बड़े वकील और सिन्फे नाजुक को अअ़ला मकाम दिलाने के बड़े से बड़े दअ़वेदार के यहां नहीं मिलता।" मैंने उनका शुक्रिया अदा किया। अ़िबारत में उनकी इस्लाह को मान लिया लेकिन तर्जुमे के सिलसिले में अ़र्ज़ किया कि अगर हम ने उर्दू को हिन्दी रसमुलख़त में लिखना तस्लीम कर लिया तो उर्दू पर तेशा चला दिया लिहाज़ा यह मशवरा तो हरगिज़ न दीजिए। फिर इस अ़िबारत में जो उर्दू के मुश्किल अल्फ़ाज़ आ गये हैं हमारे कितने पढ़ने वाले उन के मअ़ना नहीं जानते ? हां यह ज़रूर होना चाहिए कि मुश्किल अल्फ़ाज़ और मुश्किल उस्लूब न इख्तियार किया जाए और इसकी कोशिश और अ़मल जारी है। यह भी ध्यान में रहे कि सच्चा राही हिन्दी जबान में इस्लामी सक़ाफ़त का तर्जुमान है। इस्लामी सक़ाफ़त किसी ज़बान की पाबन्द नहीं। यह सच है कि उर्दू सक़ाफ़त पर इस्लामी सक़ाफ़त का ग़ल्बा रहा है। और इस्लामियात का भारी असासा उर्दू किताबों में महफ़ूज़ है इसी लिए हर मुसलमान का उर्दू और उसकी सक़ाफ़त महबूब और अ़ज़ीज़ है लेकिन ऐसा नहीं है कि उर्दू सकाफ़त पूरी की पूरी इस्लामी सक़ाफ़त है। हम बहैसियते मजमूअ़ी सच्चा राही को इस्लामी सक़ाफ़त का तर्जुमान बनाएंगे अलबत्ता इस के ज़रीअ़े उर्दू सक़ाफ़त की भी तबलीग़ करेंगे और उसके लिए बअ़ज़ मज़ामीन खास कर देंगे जैसे खुद यह मज़मून।

स्नान करना – नहाना, भोजन करना– खाना, आभूषण – गहना, वस्त्र – कपड़ा, जल–पानी, मुंद्री–अगूंठी, पुत्र–बेटा, पुत्री–बेटी, मातृ–माता, पितृ–पिता सब हिन्दी हैं।

हम सच्चा राही के लेखकों को चाहिए कि सरल तथा हल्के शब्द प्रयोग करें।

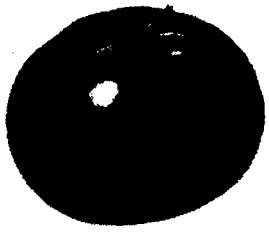

टमाटर

टमाटर जनसाधारण का पसन्दीदह फल है। रंग गहरा लाल और सुगंध दिल लुभावन होती है। इसमें विटामिन भरपूर होती है। डाल पर पके एक टमाटर में विटामिन 'सी' और विटामिन 'ए' बड़ी मात्रा में होती है। टमाटरों में खनिज का अंश जैसे पोटैशियम और कैल्शियम बड़ी मात्रा में होता है। ताज़ा टमाटर भूख बढ़ाते हैं। उन्हें कच्चा अर्थात सलाद की शक्ल में खाना चाहिए। इस में विटामिन 'सी' की मात्रा इतनी होती है जितनी संतरे के रस में होती है। विटामिन 'ए' अधिक मात्रा में होता है जो शरीर के पोषण और स्वास्थ के स्तर को बनाए रखने के लिए सहायक होता है।

टमाटर से घर ही पर कई चीज़ें तैयार की जा सकती हैं।

टमाटर का रस :– टमाटर पांच किलो, शकर ५० ग्राम, नमक २५ ग्राम।

बनाने की विधि – रस निकलने के लिए अच्छे प्रकार का टमाटर लेना चाहिए। हरे और दाग़दार टमाटर अलग कर देना चाहिए केवल लाल रंग के टमाटर से अच्छा रस प्राप्त किया जा सकता है। इस का स्वाद भी अच्छा होता है। टमाटरों को धोकर चाकू से डंठल और हरे भाग को अलग कर दें। अलमूनियम या स्टील के पतीले में टमाटर को छोटा छोटा काटें फिर इसे धीमी आंच पर रखें, उबाल आने दें। पतीले को उस समय तक आंच पर रहने दें जब तक टमाटर नर्म नहीं हो जाता। रस निकालने से पहले टमाटरों को उबालने से विटामिन 'सी' नष्ट नहीं होता। बारीक जालीदार कपड़े या मोटे मलमल के कपड़े को एक दूसरे पतीले के ऊपर बान्धें और उबले हुए टमाटर डाल दें किसी मग से कपड़े की सतह पर डाले हुए टमाटरों को मलें। जितना रस निकालना हो उतना ही दबाव डालें। निकले हुए रस में शकर और नमक मिला कर एक उबाल दें।

चार पांच, लीटर वाली बोतल लें और उन्हें ग्रम पानी में सोडे के साथ धोलें और फिर नल के पानी से अच्छी तरह धुल कर सुखा लीजिए। इसी तरह कार्क लगाने से पहले बोतल को पहले पन्द्रह मिनट तक उबाल लेना चाहिए। बोतलों में गर्म गर्म रस डाल कर तुरंत कार्क लगा दें। एक बड़ा पतीला लें और एक कपड़े को दो चार बार तह कर के मोटा बना लें फिर पतीले में रख दें। इस कपड़े पर रस की बोतलों को सीधा रखें। फिर पतीले में पानी डालें। यह पानी बोतलों के मुंह से थोड़ा नीचे रहना चाहिए। फिर पतीले को आंच पर रखें २५ या ३० मिनट में पानी उबलने के क़रीब आजाएगा। बोतलों को और २०,२५ मिनट तक गर्म होने दें। फिर निकालें। कार्क सख्ती से बन्द करें। फिर लकड़ी के तख्ते पर ठंडा होने के लिए रख दें। बोतल के कार्क लगे मुंह को पिघलती हुई मोम में डुबो दें। फिर निकालें ऐसा करने से बोतल के भीतर हवा दाखिल न हो सकेगी। इस तरह रस और सुरक्षित हो जाएगा।

इन भारी बोतलों को ठंडे और शुष्क स्थान पर रखें यह रस महीनों तक खराब नहीं होगा।

पाटीदार मूसली फार्म एण्ड रिसर्च सेंटर

सफेद मूसली

ग्राम +पो.– जोतपुर, तेह.– मनावर, जिला–धार (म०प्र०) 454446
Ph. 07294-267251, 267351 (F/R), FAX 07294-233217 Mobil- 094250-45605
Emergency Contact (07290) 282431 Web site- WWW.patidarmusliform.com

सफेद मूसली (क्लोरोफायटम बोरीविलिएनम) के बेस्ट क्वालिटी प्लांटिंग मटेरियल के उत्पादक

❖ 7 माह में 2–3 लाख रु./ एकड़ शुद्ध लाभ ❖ प्रशिक्षण से विक्रय तक निःशुल्क मार्गदर्शन ❖ निरोग कन्द व हमारे अनुभव से निश्चित सफलता ❖ कम चिकनी व जंगली किस्मों के सप्लायरों व उत्पादकों के धोखे से बचे ❖ पुरे देश में बीज (कन्द) प्रदाय करने वाला सबसे बड़ा (100 एकड़) विश्वसनीय संस्थान ❖ मूसली की सफल कृषि हेतु नेशनल मैग्नम अवार्ड, वनौषधि कृषि भूषण अवार्ड, विकास रत्न अवार्ड, भारतीय उद्योग रत्न अवार्ड, इंदिरा गांधी इफ्जा अवार्ड आदि से सम्मानित ❖ ए.कु. स्टोरेज सुविधा ❖ सूखी मूसली, एलोवेरा लीफ–जेल व प्लां. मटे. उपलब्ध ❖ बुकिंग कम दाम पर

सम्पर्क – श्रीधर पाटीदार ⟶ मुकेश, राजेन्द्र, शैलेन्द्र एस. पाटीदार PMF.....PMF.....PMF.....

कुछ एक इस्लामी आदाब (शिष्टाचार)

शेख़ अब्दुल फ़त्ताह अबूगद:

जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित इस्लाम के कुछ आदाब और अच्छाइयां हैं जिनके विकास पर इस्लाम ने बल दिया है ताकि व्यक्तित्व में निखार पैदा हो। निःसन्देह इन आदाब और अच्छाइयों से सुसज्जित होने में मुसलमान की शान बढ़ती है और वह लोकप्रिय बनता है और यह शरीअ़त का खुलासा और मक़सद भी है। इनका नाम 'आदाब' रखने का मतलब यह नहीं कि यह मात्र शोभा के लिए हैं, बल्कि यह व्यवहार की चीज़ हैं। एक बूढ़े (बुजुर्ग) ने अपने बेटे को वसीयत करते हुए फ़रमाया, "ऐ मेरे बेटे! अपने कर्म को नमक और अदब को आटा बनाओ।" मतलब यह है कि थोड़े से कर्म में अदब की ज़ियादती बेहतर है, उस ज़ियादा अ़मल (कर्म) से जो आदाब से खाली हो।

हमारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया:—

"तुम अपना लिबास (पहनावा) अच्छा रखो और अपने कजाओं (ऊंट पर की काठी) को दुरुस्त रखो ताकि लोगों में तुम्हारी एक विशिष्ट शान हो।"

१. जब आप अपने घर में प्रवेश करें या घर से निकलें तो दरवाज़े को ज़ोर से बन्द न कीजिए या दरवाज़े को ऐसा मत छोड़िये कि स्वतः ज़ोर से बन्द हो जाये बल्कि अपने हाथ से दरवाज़ा धीरे से बन्द कर दें। हज़रत आइशा रज़ि०ने हमारे नबी सल्ल० का कथन नक़ल फ़रमाया :—

"बेशक किसी चीज़ में नर्मी का होना उसे सुसज्जित करता है और जिस चीज़ से नर्मी निकल जाती है वह ऐबदार बन जाती है।" (मुस्लिम)

२. जब आप अपने घर में दाखिल हों या घर से निकलना चाहें तो अपने घर वालों पर सलाम पढ़िये जो मुसलमानों की शान और इस्लाम की निशानी है। अल्लाह के रूसल सल्ल० ने हज़रत अनस से फ़रमाया, "ऐ बेटे ! जब तुम अपने घर वालों के पास जाओ तो सलाम किया करो। तुम्हारा सलाम करना तुम पर और तुम्हारे घर वालों पर बरकत का कारण बनेगा।"

हमारे नबी सल्ल० ने हज़रत अबू हुरैरः रज़ि० से फ़रमाया, "जब तुम में से कोई मजलिस में पहुंचे तो सलाम किया करे, जब उठने का इरादा हो तो फिर सलाम करे, इस लिए कि एक बार सलाम करना दूसरे का बदल नहीं है।" (तिर्मिज़ी)

३. जब किसी मजलिस में जायें तो दो बात चीत करने वालों के बीच मत बैठिए बल्कि उनके दायें या बायें तरफ बैठिए। इस लिए कि अल्लाह के रसूल सल्ल० का इरशाद है कि :— "दो आदमियों के बीच उन की इजाज़त के बिना बैठना नहीं चाहिए।" (अबूदाऊद)

जब आप एक तरफ़ बैठ जायें तो उनकी बातों की तरफ़ कान मत लगायें। हां कोई राज़ की या कोई खास बात उन की न हो तो कोई हर्ज नहीं है। इसलिए कि आप का उन की बातों की तरफ़ कान लगाना आप के सद् आचरण को ऐबदार करता है और आप एक गुनाह के भागीदार बनते हैं। अल्लाह के रसूल सल्ल० का फ़रमान है :—

"जो आदमी ऐसे लोगों की तरफ़ कान लगाये जो यह बात नापसन्द करते हों कि उनकी बात कोई और सुने तो इस कान लगाने वाले के दोनों कानों में कियामत के दिन पिघला हुआ शीशा डाल दिया जायेगा।" (बुख़ारी)

जान लो! जब तम तीन लोग हो तो तुम्हारे लिए एक साथी से कानाफूसी से तुम्हारा तीसरा साथी बदगुमान होगा और यह मुसलमानों की शान के खिलाफ़ है। इसलिए कि अल्लाह के रसूल सल्ल० ने ऐसे आचरण से मना फ़रमाया है। आपने फ़रमाया, "दो मुसलमान आपस में सरगोशी (कानाफूसी) नहीं करते जबकि उनके बीच कोई तीसरा मौजूद हो।"

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने यह नहीं फ़रमाया कि सरगोशी न करें। यह बात बताने के लिए किसी मुसलमान से ऐसी ग़लती की कल्पना भी नहीं की जा सकती कि उसे मना किया जाये बल्कि फ़रमाया कि मुसलमान ऐसा करता ही नहीं और यह प्रकृति के भी विपरीत है। पूछा गया कि अगर तीन के बजाए चार लोग हों तो फ़रमाया चार हों ता फिर दो आदमियों का आपस में सरगोशी करना हानिकारक नहीं।

४. जब आप अपने भाई का दरवाज़ा खटखटायें तो धीरे से खटखटायें कि दरवाज़े पर आने वाले का पता चल सके। अर्थात इतने ज़ोर से न खटखटायें कि जैसे ज़ालिम लोग और पुलिस वाले दरवाज़ा पीटते हैं इसलिए कि यह अदब के खिलाफ़ है। और अपने मुसलमान भाई को डराने के समान है। एक औरत हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० से दीन के बारे में कोई मसअला मालूम करने के लिए आई और ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाया तो इमाम अहमद यह कहते हुए घर से निकले कि किसी पुलिस वाले ने दरवाज़ा बजाया है।

सहाबा अल्लाह के रसूल सल्ल० का दरवाज़ा नाखूनों से खटखटाते थे और इस तरह खटखटाना वहां है कि दरवाज़े के करीब बैठने वाले सुन लें। अगर कहीं दरवाज़े से दूर कमरे में हों तो इतनी आवाज़ से बजायें कि उन तक आवाज़ पहुंच सके मगर सख्ती न हो।

मुनासिब यह है कि आप एक बार दरवाजा खटखटा कर इन्तिजार करें कि वज़ू करने वाला वुज़ू कर चुके और नमाज़ पढ़ने वाला अपनी नमाज़ पूरी कर सके और खाना खाने वाला अपना नेवाला खा सके। और जब आप ने तीन बार ऐसे अन्तराल से दरवाज़ा बजाया और अन्दाज़ा हुआ कि अगर अन्दर कोई व्यस्त न होता तो आप की तरफ़ निकल आता, लेकिन फिर भी वह न निकला तो आप वापस हो जायें। हमारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया :– "जब तुम में से कोई तीन बार इजाज़त चाहे और उसे इजाज़त न दी जाये तो उसे चाहिए कि वापस लौट जाये।"

(बुख़ारी व मुस्लिम)

दरवाज़ा बजाते समय दरवाज़े के सामने खड़े न हों बल्कि दायीं तरफ़ या बायीं तरफ़ खड़े हों । अबू दाऊद की हदीस में है कि "हमारे हुज़ूर सल्ल० जब किसी दरवाज़े पर आते तो दरवाज़े के बिल्कुल सामने खड़े नहीं होते थे बल्कि दरवाज़े के दायीं तरफ़ या बायीं तरफ खड़े होते थे।"

५. जब आप अपने भाइयों में से किसी मुसलमान का दरवाज़ा खटखटायें और आप से पूछा जाये कि कौन हैं ? तो अपना मशहूर नाम लेकर जवाब दीजिए ताकि अन्दर वाला पहचान ले। इस तरह मत कहिये कि कोई है, मैं हूं, एक आदमी है, इसलिए कि इन शब्दों से दरवाज़े के पीछे वाला पहचान नहीं सकता कि दरवाज़ा खटखटाने वाला कौन है और यह बात भी सही नहीं है कि आप अपनी आवाज़ पर भरोसा कर लें कि वह आवाज़ पहचान लेगा इसलिए कि आवाज़ें मिलती जुलती हैं और घर के अन्दर हर कोई आने वाले की आहट और आवाज़ नहीं पहचानता।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्ल० के दरवाज़े पर आया और दरवाज़ा खटखटाया तो आपने पूछा, "कौन है?" मैंने जवाब दिया कि "मैं हूं। तो हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, "मैं हूं", मैं हूं" अर्थात आपने यह जवाब नापसंद फ़रमाया।

हज़रत अबूज़र फ़रमाते हैं कि मैं एक रात निकला, अचानक नजर पड़ी कि हुज़ूर सल्ल० अकेले तशरीफ़ ले जा रहे हैं मैं चांद के साये में पीछे हो लिया। आप ने कृपा की और मुझे देख लिया। पूछा, "यह कौन है?" तो मैंने कहा, "अबूज़र"। (बुख़ारी व मुस्लिम)

६. जब किसी भाई से निश्चित समय के अलावा मुलाक़ात हो और वह आप से क्षमा याचना कर ले कि निश्चित समय पर मुलाक़ात न हो सकने पर मैं माफी चाहता हूं तो आप उस की क्षमायाचना को स्वीकार करें। इस लिए कि वह अपने घर और कपड़ों के बारे में अधिक जानकारी रखता है। सम्भव है कि उस को कोई बड़ी मजबूरी रही हो कि उस समय आप से न मिल सका तो उसके लिए गुंजाइश है कि आप से माफ़ी मांग ले इसके बारे में कुर्आन में आता है, "जब तुम से कहा जाये कि वापस लौट जाओ तो वापस हो जाओ, यह तुम्हारे लिए ज़ियादा पाकी का ज़रिया है।" इस का एक फ़ायदा यह भी है कि अगर कोई आने वाले से मुलाक़ात करना नहीं चाहता तो जवाब दे, वह वापस चला जायेगा वरना यह घर वाला झूठ का दोषी होगा। जवाब देगा कि फुलां घर में नहीं है हालांकि वह घर में मौजूद होता है तो यह झूठ बोला और उसके बच्चे यह झूठ सीख लेते हैं और इससे दिलों में दूरी और कड़वाहट पैदा होती है जब कि कुर्आनी शिक्षा में घर वाले के लिए गुंजाइश है कि वह मिलने से माफ़ी मांग ले कि मैं इस समय नहीं मिल सकता। और मुलाक़ात करने वाले के लिए कुर्आन ने बताया कि तुम माफ़ी स्वीकार करके वापस हो जाओ।

७. जब अपने मुसलमान भाई के घर में दाखिल हो तो दाखिल होने और निकलने में नर्मी बरतिये और अपनी आंख और आवाज़ को नीचा रखिये। जूते उस जगह पर उतारते समय मिला कर रखिये। जूतों के आगे पीछे या

ऊपर नीचे मत उतारिये और जूता पहनने और उतारने के अदब को मत भूलिये। पहले दायां जूता पहनिये और उतारते समय हमेशा पहले बायां जूता उतारिये। हमारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया, " जब तुम में से कोई भी जूते पहने तो पहले दायां पहना करे और जब उतारे तो पहले बायां जूता उतारे। और चाहिए कि पहनने में दायें से शुरू करे और उतारने में बायें से शुरू करे।" (मुस्लिम)

अपने मुसलमान भाई के घर दाखिल होने से पहले अपने जूतों को देखिये कि अगर रास्ते मे कोई गन्दगी आदि लगी हो तो जूतों को रगड़ कर छुड़ा दीजिए, इसलिए कि इस्लाम सफाई सुथराई का दीन है।

८. मुसलमान भाई तुम्हें जिस जगह बिठाना चाहे उसमें झगड़ा और तकरार मत कीजिए बल्कि उसी जगह बैठ जाइये जहां वह बिठाना चाहे। मुमकिन है कि जहां आप बैठना चाहते हैं वहां से घर नज़र आता हो या उससे घर में रहने वालों की असुविधा हो आप को मेज़बान की बात मान लेना चाहिए। हज़रत खारजः बिन ज़ैद हज़रत इमाम बिन सीरीन की मुलाक़ात को गये तो देखा कि इमाम साहब ज़मीन पर बैठे तकिया लगाये हुए हैं तो हज़रत ख़ारजः भी वहां उनके साथ बैठने लगे और कहा कि जो जगह आप ने अपने लिए चुनी है मैं वहां बैठने पर राज़ी हूं तो इमाम साहब ने फ़रमाया कि मैं अपने घर में तुम्हारे लिए वहां बैठने पर राज़ी नहीं हूं। जहां तुम खुद राज़ी हो, अतः तुम वहां बैठो जहां तुम्हों हुक्म किया जाये।

मेज़बान की जगह पर कभी मत बैठिए जब तक वह आप को वहां बैठने के लिए न बुलाये। हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया "कोई भी आदमी दूसरे आदमी की सल्तनत का हरगिज़ इरादा न करे," अर्थात् उसके घर उसकी जगह बिना इजाज़त न बैठे और यह भी फ़रमाया कि, "उस घर में उसके बिस्तर पर उसकी इजाज़त के बिना न बैठे।"

९. बड़े की प्रतिष्ठा को पहचानिये। जब दाख़िल होने या कहीं से निकलने का मौका हो तो अपने से बड़े को आगे कीजिए और जब आप की मुलाकात हो तो सम्मानपूर्वक सलाम कीजिए, और बातचीत का मौका हो तो बड़े को पहले बात करने दीजिए। और ध्यान पूर्वक उसकी बात सुनिये और अगर कोई प्रश्न करे तो सुकून और अदब के साथ जवाब दीजिए। जब बात करने लगें तो अपनी आवाज़ धीमी रखिये और जब बड़े को सम्बोधित करें या पुकारें तो बात करने, पुकारने आवाज़ देने में उसकी इज्ज़त को मत भूलिये।

दो भाई एक बार हुजूर सल्ल० के पास आये और एक घटना के बारे में बात करने लगे। छोटे भाई ने बात में पहल का इरादा किया। हुजूर सल्ल० ने फरमाया, "किब्र किब्र" अर्थात बड़े को उसका हक़ दो और अपने बड़े भाई को बात करने दो। आप सल्ल० ने फ़रमाया, "वह व्यक्ति हम में से नहीं जो हमारे बड़ों की इज़्ज़त न करे और जो हमारे छोटों पर रहम न करे और हमारे उलमा का हक़ न पहचाने।"

हज़रत मालिक बिन अलहारिस महान सहाबी हैं, फ़रमाते हैं कि चन्द हम उम्र नवजवान थे। हुजूर सल्ल० के यहां हाज़िर हुए और बीस रात ठहरे। हुजूर सल्ल० दयालु थे। आप को ख्याल हुआ कि हम अपने घर वालों के पास जाना चाहते हैं तो हम से पूछा कि, "घर में किस को छोड़ आये हो।" हमने बताया तो फ़रमाया, "अपने घर वालों के पास लौट जाओ, उनके पास रहो और उन्हें दीन सिखाओ और नेकी का हुक्म करो। और जब नमाज़ का वक़्त हो तो तुम में से एक साथी अज़ान दे और जो तुम में से बड़ा हो वह इमामत करे।" (बुख़ारी व मुस्लिम)

१०. जब आप ऐसी जगह दाख़िल हों जहां कोई सो रहा हो, दिन हो या रात तो सोने वालों का ध्यान रखिये और उनके क़रीब अपनी आवाज़ व गति को धीमी रखिये। तेज़ आवाज़ में मत बोलिये, और धीरे धीरे से आइये जाइये। नर्मी बरतिये। हमारे नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया, "जो व्यक्ति नर्मी से महरूम (वंचित) किया गया वह हर खैर (भलाई) से महरूम है।" हुजूर सल्ल० रात को तशरीफ़ लाते तो इतनी आवाज़ में सलाम फ़रमाते कि सोने वाला उस उसे जागता नहीं और जागने वाला सुन लेता।

हुजूर सल्ल० जब रात को तहज्जुद (नमाज़) के लिए उठते तो इतनी आवाज़ में तिलावात (कुर्आन का पाठ) फ़रमाते थे कि जागने वाला सुनकर मानूस होता और मामूली सोने वाला उससे न जागता।

इन इस्लामी आदाब का बेहतरीन कार्य क्षेत्र आप का अपना घर और अपने भाई का घर और आप का अपना व्यक्तित्व, आपके भाई का व्यक्तित्व है। तो आप में और भाइयों के बीच इस पर अमल में सुस्ती न की जाये। इस लिए कि घर में और भाइयों में अजनबियत नहीं होती। और यह भी कि

(शेष पृष्ठ ४० पर)

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

मुईद अशरफ़ नदवी

● सऊदी अरब में आतंकवाद के सम्भावित भय के बावजूद उमरा व हज करने वालों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनौवरा में जाइरीन (दर्शन करने वालों) भरे हुए हैं जबकि किंग अब्दुल्ल अज़ीज़ हवाई अड्डे के मुहम्मद असग़र ने कहा है कि इस वर्ष रमज़ान मुबारक में ज़ाइरीन की संख्या पिछले वर्ष के मुक़ाबले में अधिक रही है। १६०० से १७०० विदेशी उड़ानों की हैंडलिंग की गई, जिन में उमरा के लिए ४ लाख ५० हजार जाइरीन आए। इन ज़ाइरीन में अधिक से अधिक २ लाख ६४ हज़ार ईरान हवाई सर्विस द्वारा आए जबकि दूसरे नम्बर पर पी०आई०ए० एयर लाइन एक लाख उमरा ज़ाइरीन को लाया।

● फ्रांसीसी विदेश मंत्री ने अपने एक बयान में जिन वास्तविकताओं को चिन्हित किया है, उन्हें झुठलाना संभव नहीं। उन्होंने कहा कि वास्तविकता यह है कि इराक़ और अफ़गानिस्तान दोनों ही अमरीका के लिए ऐसे दलदल बन गए हैं जिस में आगे बढ़ने की कोशिश किसी भी सूरत में बुद्धिमानी नहीं है, जनता के विरोध को समाप्त नहीं किया जा सकता। यह पाठ अमरीका ने अगर वेटनाम में अपने और अफ़गानिस्तान में रूस के अनुभव से नही सीखा था तो अब सीख लेना चाहिए। राष्ट्रपति बुश और उनके सहयोगियों को अपनी अना से ऊपर उठकर समीक्षा करनी चाहिए। उन्हें देखना चाहिए कि ग्यारह सितम्बर के बाद आतंकवाद को समाप्त करने के नाम पर अपनाई गई उनकी अन्यायी पालीसियों के नतीजे में अमरीका की छवि दुन्या में अच्छी हुई है या खराब और आतंकवाद कम हुआ है या कल्पना की सीमा से आगे बढ़ गया है। यह एक खुली वास्तविकता है कि जहां अमरीका इस युद्ध से पहले पूरी दुन्या के लिए आज़ादी, जनतंत्र, मानवाधिकार का प्रतीक था आज अत्याचार, ज़ुल्म ज़ियादती का प्रतीक समझा जाता है। वह एक ओर इराक और अफ़गानिस्तान में अपनी ओर अपने सहयोगी देशों के सिपाहियों की जानें भी गंवा रहा है और दूसरी तरफ बदनामी भी मोल ले रहा है और यह भी स्पष्ट है कि आज नहीं तो कल अमरीका को इन पराजित देशों से वेटनाम की तरह निकलना पड़ेगा तो फिर यह फैसला आज ही क्यों न कर लिया जाए। सच्ची बात यही है कि ..... का मार्ग यही है।

● अमरीका में बढ़ते अपराधों का अन्दाज़ा अमरीकी जेलों में कैदियों की बढ़ती संख्या से भी लगाया जा सकता है। बहुत से अपराधी ऐसे भी होते हैं या तो पुलिस की पहुंच से बाहर होते हैं या आरोप से बरी कर दिये जाते हैं। इसके बावजूद अमरीकी जेलों में अपराधियों की बढ़ती संख्या ने अमरीकी समाज को कैदियों के समाज में तब्दील कर दिया है। हाल में अमरीकी न्याय मंत्रालय की एक रिपोर्ट के अनुसार इस समय अमरीकी जेलों में २० लाख से अधिक कैदी हैं। यह पिछले साल के अनुपात में लगभग २ प्रतिशत अधिक हैं। दूसरे शब्दों में अमरीकी जनता के १४३ लोगों में से एक व्यक्ति जेल में है।

● रूस के राज्य करेलिया में जुमे की नमाज़ से नियमित रूप से नई मस्जिद का उद्घाटन किया गया। फिनलैण्ड की सीमा के निकट करेलिया में काइम की जाने वाली इस वर्ष तीसरी बड़ी मस्जिद है जहां मुसलमानों की संख्या लगभग बीस हजार बताई जाती है। १६६३ से यहां के मुसलमानों में दीन से लगन अधिक हुआ। चुनान्चः मुसलमानों की एक नुमाइन्दा पार्टी बनाई गई। इसके प्लेटफार्म से मुसलमान स्थानीय पार्लियामेंट में अपना नुमाइन्दा (प्रतिनिधि) भेजने में भी सफल हुए। मस्जिद के अतिरिक्त स्थानीय मुसलमानों ने शिक्षा देने के लिए कई मदरसे भी स्थापित किये हैं जिन में दिनों दिन वृद्धि हो रही है।

(पृष्ठ ३६ का शेष)

आपकी भलाई व ख़ैरख्वाही, नर्मी और सद आचरण के ज़ियादा हकदार आप के घर वाले और आपके साथी हैं।

एक सहाबी हुजूर सल्ल० के पास आकर पूछने लगे कि ऐ ! अल्लाह के रसूल मेरे सद्व्यवहार के ज़ियादा हक़दार कौन हैं ? तो आपने फ़रमाया, "तुम्हारी मां, फिर तुम्हारी मां, फिर तुम्हारे बाप, फिर बाप से कम, फिर उस से कम।" (अर्थात जो निकट सम्बन्धी हों) (बुखारी व मुस्लिम)

(उर्दू मासिक 'रिजवान' लखनऊ से सभागर सितम्बर २००३)

प्रस्तुति तथा अनुवाद – मो० हसन अंसारी